UPSC/IAS

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

Institute for Civil Services Examination Since 2018

Prelims Mock

Prelims Test – JMN27_002

उत्तर की व्याख्या/व्याख्याएँ

GS **सेक्शनल टेस्ट:**

जे.एम.एन_27_002

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

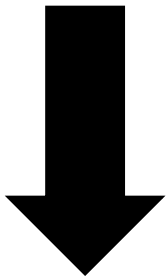

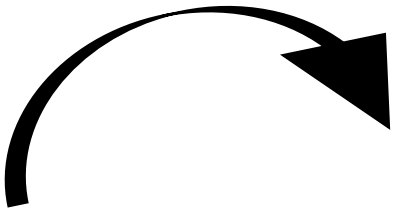

Ancient India (II) + Current Affairs: (Feb 2026)

o Indo Greek Invasion o Indo-Greeks o Parthians o Shaka o Kushanas o Indo-Sassanian • Sungas • Kanvas • Satavahanas • Guptas Age • Sangam Age • Regional Kingdoms • Post Guptas Age • Harshavardhana • Pallava • Chalukya

1. **उत्तरः** (b) **केवल** 1, 2 **और** 4

यह सवाल इंडो-ग्रीक लोगों के पॉलिटिकल विस्तार, भारतीय धार्मिक परंपराओं के साथ उनके इंटरैक्शन और भारतीय न्यूमिज़माटिक्स में उनके योगदान के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट हिस्टोरिकल सक्सेशन और हिस्टोरिकल कॉज़ेशन के बीच अंतर कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है** । मौर्य सत्ता के खत्म होने के बाद इंडो-ग्रीक शासकों ने उत्तर-पश्चिमी भारत में अपना अधिकार जमाया। ग्रीको-बैक्ट्रियन शासकों के विस्तार के साथ, उन्होंने आज के अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया, और मौर्योत्तर काल की बड़ी राजनीतिक ताकतों में से एक बनकर उभरे।
स्टेटमेंट 2 **सही है** । मेनांडर (मिलिंडा) सबसे मशहूर इंडो-ग्रीक शासकों में से एक था। बौद्ध ग्रंथ मिलिंडा पन्हा में मेनांडर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच दार्शनिक बातचीत की एक सीरीज़ दर्ज है। यह ग्रंथ हेलेनिस्टिक और भारतीय बौद्धिक परंपराओं के बीच बातचीत को समझने का एक ज़रूरी ज़रिया है।
स्टेटमेंट 3 **गलत है** । कुषाण साम्राज्य की स्थापना युएझी ने की थी, जो सेंट्रल एशिया का एक कबीला ग्रुप था जो बैक्ट्रिया और बाद में उत्तर-पश्चिमी भारत में चला गया। हालाँकि कुषाणों ने कई इलाकों में इंडो-ग्रीक लोगों को हराया, लेकिन उनका उदय इंडो-ग्रीक हमलों का सीधा नतीजा नहीं था।
स्टेटमेंट 4 **सही है** । इंडो-ग्रीक सिक्कों ने भारतीय न्यूमिज़माटिक्स में एक बड़ा डेवलपमेंट किया। उनके सिक्के रियलिस्टिक पोर्ट्रेट, बेहतरीन आर्टिस्टिक एग्ज़िक्यूशन और ग्रीक और खरोष्ठी/प्राकृत में बाइलिंगुअल इंस्क्रिप्शन से अलग हैं। इन इनोवेशन ने भारतीय सबकॉन्टिनेंट में बाद के कई सिक्का ट्रेडिशन को प्रभावित किया।

(ध्यान IAS **स्पेशल फ़ीचर – एक एग्ज़ामिनर की तरह सोचें)**
एग्ज़ामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 3 डालता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट हिस्टोरिकल सक्सेशन को हिस्टोरिकल कॉज़ेशन से कन्फ्यूज़ तो नहीं करते। प्राचीन भारतीय इतिहास में, UPSC अक्सर दो घटनाओं को क्रोनोलॉजिकल सीक्वेंस में रखता है और कैंडिडेट को उनके बीच सीधा कॉज़ुअल रिलेशनशिप निकालने के लिए लुभाता है। जबकि इंडो-ग्रीक उत्तर-पश्चिमी भारत में कुषाणों से पहले थे, कुषाण साम्राज्य का उदय सेंट्रल एशिया से युएज़ी ट्राइब्स के माइग्रेशन और विस्तार का नतीजा था, न कि इंडो-ग्रीक हमलों का।

के. सुशांत सर से:
"A, B से पहले हुआ" का मतलब यह नहीं है कि "A की वजह से B हुआ।" UPSC में, क्रोनोलॉजी से सीक्वेंस तय हो सकता है, लेकिन सिर्फ़ सबूत ही कारण बताते हैं।

2. **उत्तरः** (c) **केवल** 1, 2 **और** 3

यह सवाल इंडो-ग्रीक किंगडम के हिस्टोरिकल बैकग्राउंड और भारत और हेलेनिस्टिक दुनिया के बीच पॉलिटिकल, डिप्लोमैटिक और कल्चरल इंटरैक्शन के नेचर के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट लंबे समय के हिस्टोरिकल डेवलपमेंट और तुरंत होने वाली पॉलिटिकल घटनाओं के बीच फर्क कर सकता है।

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

स्टेटमेंट 1 सही है। इंडो-ग्रीक किंगडम की स्थापना कोई अलग घटना नहीं थी। इससे पहले भारतीय उपमहाद्वीप और ग्रीक दुनिया के बीच सदियों तक बातचीत हुई, जिसमें सिकंदर के अभियान, मौर्य और सेल्यूसिड के बीच डिप्लोमैटिक संपर्क, और भारत और हेलेनिस्टिक राज्यों के बीच विचारों, व्यापार और संस्कृति का लेन-देन शामिल था।
स्टेटमेंट 2 सही है। चंद्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस I निकेटर के बीच झगड़े के बाद, लगभग 305 BCE में एक ट्रीटी हुई थी। इस एग्रीमेंट के तहत, सेल्यूकस ने उत्तर-पश्चिमी इलाके के इलाके चंद्रगुप्त मौर्य को दे दिए और 500 जंगी हाथी मिले। इस ट्रीटी ने दोनों ताकतों के बीच डिप्लोमैटिक रिश्ते भी मज़बूत किए।
स्टेटमेंट 3 सही है। अशोक के मेजर रॉक एडिक्ट्स में एंटिओकस समेत कई उस समय के हेलेनिस्टिक शासकों का ज़िक्र है। शिलालेखों से पता चलता है कि अशोक की धम्म पॉलिसी भारत से बाहर भी फैली हुई थी और हेलेनिस्टिक राज्यों में दूत भेजे गए थे, जो भारत और मेडिटेरेनियन दुनिया के बीच शुरुआती कल्चरल और धार्मिक संपर्कों को दिखाता है।
स्टेटमेंट 4 गलत है। इंडो-ग्रीक किंगडम सिकंदर की मौत के तुरंत बाद नहीं बना था। 323 BCE में सिकंदर की मौत के बाद, उसका साम्राज्य उसके बाद आने वालों के बीच बंट गया। इंडो-ग्रीक किंगडम बहुत बाद में, लगभग दूसरी सदी BCE की शुरुआत में बना, जब ग्रीको-बैक्ट्रियन शासकों ने उत्तर-पश्चिमी भारत में अपना विस्तार किया। इसलिए, यह सिकंदर के भारतीय क्षत्रपों का सीधा विस्तार नहीं था।
(ध्यान IAS **स्पेशल फ़ीचर – एक एग्ज़ामिनर की तरह सोचें)**
एग्ज़ामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 4 पेश करता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट ऐतिहासिक असर को इंस्टीट्यूशनल कंटिन्यूटी से कन्फ्यूज़ तो नहीं करते। अलेक्जेंडर के हमले ने बेशक भारत और हेलेनिस्टिक दुनिया के बीच कॉन्टैक्ट के रास्ते खोले, लेकिन इंडो-ग्रीक किंगडम उसके एडमिनिस्ट्रेशन का सीधा हिस्सा नहीं बना। अलेक्जेंडर की मौत और भारत में इंडो-ग्रीक राज के आने के बीच लगभग एक सदी का अंतर था।
के. सुशांत सर से:
"हिस्टॉरिकल कनेक्शन का मतलब यह नहीं है कि हिस्टॉरिकल कंटिन्यूटी बनी रहेगी। UPSC में, असर पीढ़ियों तक फैल सकता है, लेकिन इंस्टीट्यूशन्स को सबूतों से पता लगाया जाना चाहिए, अंदाज़ों से नहीं।"

3. **उत्तरः** (d) **केवल** 2, 3 **और** 4

यह सवाल इंडो-ग्रीक किंगडम की शुरुआत, इलाके के फैलाव और पॉलिटिकल हद के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट कुछ समय के लिए मिलिट्री घुसपैठ और हमेशा के लिए पॉलिटिकल कंट्रोल के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 गलत है। हालांकि माना जाता है कि इंडो-ग्रीक शासकों ने गंगा के इलाके में हमले किए थे और शायद पाटलिपुत्र की तरफ बढ़े थे, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि उन्होंने गंगा के मैदानों पर हमेशा के लिए अपना अधिकार जमा लिया था। उनका पॉलिटिकल कंट्रोल ज़्यादातर उत्तर-पश्चिमी भारत और आस-पास के इलाकों तक ही सीमित रहा।
स्टेटमेंट 2 सही है। इंडो-ग्रीक किंगडम ग्रीको-बैक्ट्रियन शासकों के विस्तार से उभरा, जिन्होंने हिंदू कुश को पार किया और दूसरी सदी BCE के दौरान उत्तर-पश्चिमी भारत में अपना अधिकार बढ़ाया। इस विस्तार ने भारतीय उपमहाद्वीप में इंडो-ग्रीक राजनीतिक शक्ति की नींव रखी।
स्टेटमेंट 3 सही है। मेनांडर (मिलिंडा) को आम तौर पर सबसे सफल इंडो-ग्रीक शासक माना जाता है। लिटरेरी, न्यूमिज़माटिक और हिस्टोरिकल सबूत बताते हैं कि उनके राज में उनके राज्य ने अपना सबसे बड़ा इलाका हासिल किया, जिससे वे इंडो-ग्रीक राजाओं में सबसे खास इंसान बन गए।
स्टेटमेंट 4 सही है। न्यूमिज़माटिक सबूत बताते हैं कि इंडो-ग्रीक पॉलिटिकल अथॉरिटी पहली सदी CE तक उत्तर-पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों में बनी रही। हालांकि इंडो-सिथियन और दूसरे ग्रुप्स के बढ़ने की वजह से उनकी पावर धीरे-धीरे कम हो गई, फिर भी कुछ इंडो-ग्रीक शासकों ने कई दशकों तक कुछ इलाकों पर राज करना जारी रखा।

(ध्यान IAS स्पेशल फ़ीचर – एक एग्ज़ामिनर की तरह सोचें)
एग्ज़ामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 1 डालता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट मिलिट्री पैठ को लगातार पॉलिटिकल कंट्रोल से कन्फ्यूज़ तो नहीं करते। प्राचीन भारतीय इतिहास में, UPSC अक्सर ऐसे स्टेटमेंट बनाता है जो एक टेम्परारी हमले, रेड या कैंपेन को परमानेंट टेरिटोरियल अथॉरिटी में बदल देते हैं। किसी इलाके में आगे बढ़ना और उस पर असरदार तरीके से राज करना दो बहुत अलग ऐतिहासिक घटनाएं हैं।
हो सकता है कि इंडो-ग्रीक लोग गंगा के मैदानों के कुछ हिस्सों तक पहुँच गए हों या उन्हें खतरा हो, लेकिन मौजूद सबूत इस नतीजे को सपोर्ट नहीं करते कि उन्होंने पाटलिपुत्र तक इस इलाके पर हमेशा राज किया था।
के. सुशांत सर से:
"जीत की राह और स्थिर साम्राज्य एक जैसे नहीं होते। UPSC में, जीत के सबूत को एडमिनिस्ट्रेशन के सबूत से अलग करना चाहिए।"

4. **उत्तर:** (a) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल इंडो-ग्रीक शासकों की कल्चरल पॉलिसी और ऐतिहासिक सबूत के सोर्स के तौर पर उनके सिक्कों की अहमियत के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट ऐतिहासिक सबूत और अंदाज़े वाली ऐतिहासिक व्याख्याओं के बीच फ़र्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 सही है। ज़्यादातर इंडो-ग्रीक सिक्कों पर एक तरफ ग्रीक लेजेंड्स और दूसरी तरफ खरोष्ठी स्क्रिप्ट में लिखी प्राकृत लेजेंड्स होती थीं। यह बाइलिंगुअल फॉर्मेट इंडो-ग्रीक सिक्कों की एक खास बात थी और यह हेलेनिस्टिक और इंडियन ट्रेडिशन्स के बीच के इंटरेक्शन को दिखाता है।
स्टेटमेंट 2 सही है। इंडो-ग्रीक सिक्कों का बाइलिंगुअल होना लोकल लोगों के लिए काफी हद तक कल्चरल एडजस्टमेंट दिखाता है। ग्रीक और लोकल दोनों भाषाओं और स्क्रिप्ट का इस्तेमाल करके, इंडो-ग्रीक शासकों ने अपने राज के अलग-अलग कम्युनिटी के लिए अपनी अथॉरिटी को आसान बनाया और अपनी प्रजा के बीच पॉलिटिकल लेजिटिमेसी को आसान बनाया।
स्टेटमेंट 3 गलत है। कुछ इतिहासकारों ने कहा है कि पॉलिटिकल बदलाव के समय कुछ बौद्ध ग्रुप्स ने इंडो-ग्रीक हमलों को अच्छा माना होगा, लेकिन इस बात पर कोई आम राय नहीं है कि इंडो-ग्रीक हमलों का मुख्य मकसद बौद्ध धर्म को कथित शुंग ज़ुल्म से बचाना था। हमले मुख्य रूप से पॉलिटिकल, स्ट्रेटेजिक और इकोनॉमिक वजहों से किए गए थे। इसके अलावा, शुंगों द्वारा बौद्ध धर्म पर किसी भी तरह का सिस्टमैटिक ज़ुल्म कितना किया गया, यह ऐतिहासिक बहस का विषय बना हुआ है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 3 डालता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट हिस्टोरिकल हाइपोथीसिस को पहले से मौजूद हिस्टोरिकल फैक्ट्स से कन्फ्यूज तो नहीं करते। UPSC अक्सर कुछ हिस्टोरियन की बताई बातों के आधार पर स्टेटमेंट बनाता है और उन्हें यूनिवर्सली एक्सेप्टेड कन्क्लूजन के तौर पर पेश करता है। कैंडिडेट को यह फर्क करना होगा कि क्या सबूतों से पक्का सपोर्टेड है और क्या हिस्टोरियोग्राफी में बहस का मुद्दा बना हुआ है।
इस मामले में, बाइलिंगुअल सिक्कों को बहुत सारे न्यूमिज़माटिक सबूतों से सपोर्ट मिलता है, जबकि यह दावा कि इंडो-ग्रीक हमले मुख्य रूप से बौद्ध धर्म की रक्षा के लिए किए गए थे, एक मतलब निकालने वाली बात है जिसे दुनिया भर में विद्वानों की मंज़ूरी नहीं मिली है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"सबूत इतिहास बनाते हैं; व्याख्या उसे समझाती है। UPSC में, कभी भी किसी विवादित थ्योरी को स्थापित तथ्य न मानें।"

5. **उत्तर:** (b) **केवल** 2 **और** 3
यह सवाल भारत में इंडो-ग्रीक शासकों की धार्मिक नीतियों और सांस्कृतिक मेलजोल के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट मल्टीकल्चरल पॉलिटिकल माहौल में धार्मिक पहचान और धार्मिक जुड़ाव के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 गलत है। इंडो-ग्रीक सिक्कों पर सिर्फ़ ग्रीक देवी-देवता ही नहीं दिखते थे। जबकि कई सिक्कों पर ज़ीउस, एथेना और अपोलो जैसे ग्रीक देवी-देवता बने थे, लेकिन सबूतों से यह भी पता चलता है कि स्थानीय धार्मिक परंपराओं के साथ उनका जुड़ाव था। इंडो-ग्रीक लोगों ने अलग-अलग तरह की संस्कृतियों वाले लोगों पर राज किया और उनके धार्मिक निशानों को सिर्फ़ ग्रीक लोगों का चरित्र नहीं माना जा सकता।
स्टेटमेंट 2 सही है। बौद्ध परंपरा में मेनांडर I (मिलिंद) का खास स्थान है। बौद्ध ग्रंथ *मिलिंद पन्हा में* उन्हें एक ऐसे शासक के रूप में दिखाया गया है जो भिक्षु नागसेन के साथ फिलॉसफी पर चर्चा कर रहे थे। हालांकि इतिहासकार उनके पर्सनल धर्म बदलने की हद पर बहस करते हैं, लेकिन बौद्ध सोर्स साफ तौर पर उन्हें बौद्ध धर्म से जोड़ते हैं और उन्हें बौद्ध धर्म का सपोर्टर बताते हैं।
स्टेटमेंट 3 सही है। ऐतिहासिक और न्यूमिज़माटिक सबूत बताते हैं कि इंडो-ग्रीक लोगों ने कई धार्मिक परंपराओं के साथ बातचीत की, जिसमें बौद्ध धर्म, हिंदू परंपराएं और बैक्ट्रिया और ईरान जैसे इलाकों से मिले ज़ोरोस्ट्रियन प्रभाव शामिल हैं। उनका शासन किसी एक धार्मिक परंपरा को पूरी तरह मानने के बजाय सांस्कृतिक बदलाव का पैटर्न दिखाता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 1 डालता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि कैंडिडेट किसी शासक के कल्चरल ओरिजिन को उसकी पूरी धार्मिक और कल्चरल पॉलिसी के बराबर मानते हैं या नहीं। UPSC अक्सर ऐसे स्टेटमेंट बनाता है जिसमें यह माना जाता है कि विदेशी मूल के शासक उन समाजों से कल्चरली अलग-थलग रहे जिन पर उन्होंने राज किया। असल में, सफल शासकों ने अक्सर लेजिटिमेसी को मज़बूत करने और गवर्नेंस को आसान बनाने के लिए लोकल ट्रेडिशन को अपनाया।
इंडो-ग्रीक मूल रूप से ग्रीक थे, लेकिन भारत में उनके शासन की खासियत कई धार्मिक समुदायों के साथ बातचीत, तालमेल और सांस्कृतिक लेन-देन थी।

<u>के. सुशांत सर की ओर से:</u>
"एक शासक की शुरुआत बताती है कि वह कहाँ से आया था; यह ज़रूरी नहीं कि यह बताए कि उसने कैसे राज किया। UPSC में पहचान और पॉलिसी में फ़र्क करें।"

6. **उत्तर:** (a) **केवल** 1

<u>यह सवाल इंडो-ग्रीक लोगों की कलात्मक विरासत के बारे में जानकारी और उत्तर-पश्चिमी भारत में बाद के कलात्मक विकास के साथ उन्हें जोड़ने के सबूतों के आधार को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट संभावित सांस्कृतिक प्रभाव और ऐतिहासिक रूप से स्थापित समय के बीच अंतर कर सकता है।</u>

स्टेटमेंट 1 सही है। इंडो-ग्रीक सिक्कों को आम तौर पर पुरानी दुनिया की सबसे बेहतरीन कलात्मक उपलब्धियों में से एक माना जाता है। सिक्कों में असली जैसे चित्र, बेहतरीन कारीगरी और बेहतरीन आइकनोग्राफी दिखाई देती है। इसके उलट, बहुत कम मूर्तिकला सामग्री को पक्के तौर पर इंडो-ग्रीक लोगों से जोड़ा जा सकता है। इसलिए, उनकी कलात्मक उपलब्धियों का आकलन करने के लिए मुद्राशास्त्रीय सबूत मुख्य सोर्स बने हुए हैं।
स्टेटमेंट 2 गलत है। हालांकि जानकारों ने अक्सर इंडो-ग्रीक और ग्रीको-बौद्ध कला के बाद के विकास के बीच संभावित लिंक की खोज की है, लेकिन यह स्टेटमेंट गलत है क्योंकि यह गलत समय के आधार पर बना है। पहली सदी CE तक इंडो-ग्रीक राजनीतिक अधिकार काफी हद तक गायब हो गए थे। इसलिए, यह दावा कि इंडो-ग्रीक शासन के आम युग की शुरुआती सदियों तक बने रहने के सबूतों से कनेक्शन मजबूत होता है, ऐतिहासिक सबूतों से सपोर्ट नहीं करता है। बाद की कलात्मक परंपराओं पर इंडो-ग्रीक के किसी भी असर का अंदाजा कल्चरल इंटरैक्शन और ट्रांसमिशन से लगाया जाना चाहिए, न कि शुरुआती सदियों CE तक लंबे समय तक चले राजनीतिक शासन से।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 2 बनाता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि क्या कैंडिडेट किसी नतीजे को सिर्फ इसलिए मान लेते हैं क्योंकि वह लॉजिकली अच्छा लगता है। UPSC अक्सर एक सही हिस्टॉरिकल पॉसिबिलिटी डालता है लेकिन उसे गलत वजह या प्रीमाइस से सपोर्ट करता है। कैंडिडेट को न सिर्फ नतीजे को बल्कि उस फैक्ट्स की भी जांच करनी चाहिए जिस पर वह टिका है।
ग्रीको-बौद्ध कलात्मक परंपराओं के उभरने पर इंडो-ग्रीक प्रभाव पर चर्चा करना सही है। हालांकि, यह दावा करके उस प्रभाव को सही नहीं ठहराया जा सकता कि इंडो-ग्रीक राजनीतिक शासन कॉमन एरा की शुरुआती सदियों तक जारी रहा।

<u>के. सुशांत सर की ओर से:</u>
"गलत तथ्य से सपोर्ट किया गया सही नतीजा गलत बयान बन जाता है। UPSC में, दावे और उसके पीछे के कारण दोनों को वेरिफाई करें।"

7. **उत्तर:** (c) **केवल एक**

यह सवाल इंडो-ग्रीक इतिहास को फिर से बनाने के सोर्स और ऐतिहासिक सबूतों की सीमाओं के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट अच्छी तरह से स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों और उन क्षेत्रों के बीच अंतर कर सकता है जो विद्वानों की बहस का विषय बने हुए हैं।

स्टेटमेंट 1 सही है। ज़्यादातर जाने-माने इंडो-ग्रीक शासकों की पहचान मुख्य रूप से न्यूमिज़माटिक सबूतों से होती है। सिक्कों से शाही नामों, टाइटल, पोर्ट्रेट, इलाके के बंटवारे और पॉलिटिकल अथॉरिटी के बारे में ज़रूरी जानकारी मिलती है। क्योंकि कई इंडो-ग्रीक शासकों के लिटरेरी रेफरेंस कम हैं, इसलिए न्यूमिज़माटिक सबूत इंडो-ग्रीक हिस्टोरिकल रिकंस्ट्रक्शन की रीढ़ हैं।
स्टेटमेंट 2 गलत है। *मिलिंद पन्हा* मुख्य रूप से एक फिलॉसॉफिकल और धार्मिक टेक्स्ट है जिसमें मेनांडर (मिलिंद) और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच बातचीत दर्ज है। इसका महत्व मिलिट्री ऑर्गनाइज़ेशन या युद्ध के तरीकों के बजाय बौद्धिक और धार्मिक बातचीत को समझने में है। यह इंडो-ग्रीक मिलिट्री इतिहास को फिर से बनाने के लिए एक बड़े सोर्स के तौर पर काम नहीं करता है।
स्टेटमेंट 3 गलत है। इंडो-ग्रीक शासकों का समय और उत्तराधिकार विद्वानों के बीच बहस का विषय बना हुआ है। साहित्यिक सोर्स के बिखरे हुए नेचर और न्यूमिज़माटिक सबूतों पर बहुत ज़्यादा निर्भरता ने इतिहासकारों को शाही खानदान, इलाकों के बंटवारे और राज की तारीखों के अलग-अलग रिकंस्ट्रक्शन का सुझाव देने के लिए प्रेरित किया है। इसलिए, इंडो-ग्रीक शासकों का क्रम पक्के तौर पर तय नहीं है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 3 डालता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि क्या कैंडिडेट मानते हैं कि हर हिस्टोरिकल क्रोनोलॉजी पूरी तरह से तय है। UPSC अक्सर "पूरी तरह से स्थापित," "पूरी तरह से पता," "सबकी सहमति से स्वीकार किया गया," या "अब इस पर बहस नहीं होती" जैसे एब्सोल्यूट एक्सप्रेशन का इस्तेमाल करके स्टेटमेंट बनाता है। प्राचीन भारतीय इतिहास में, जहाँ सबूत अक्सर अधूरे होते हैं, ऐसे एब्सोल्यूट दावे आमतौर पर शक के घेरे में आते हैं।
इंडो-ग्रीक लोगों के इतिहास को ज़्यादातर सिक्कों, शिलालेखों और कुछ साहित्यिक संदर्भों के ज़रिए फिर से बनाया गया है। इसलिए, उनके समय और उत्तराधिकार के कई पहलुओं पर इतिहासकारों के बीच बहस जारी है।

के. सुशांत सर की ओर से:
"जब भी UPSC कहे 'पक्का', 'हमेशा', 'सिर्फ़', या 'कोई बहस नहीं बची', तो रुककर चेक करें। इतिहास अक्सर सबूतों से बनता है, पक्के तौर पर नहीं।"

8. **उत्तर:** (d) A-2, B-4, C-1, D-3
यह सवाल इंडो-ग्रीक दुनिया के आर्थिक और कमर्शियल पहलुओं के ज्ञान को टेस्ट करता है, जिसमें ट्रेड नेटवर्क, मॉनेटरी सिस्टम और क्रॉस-कल्चरल इंटरैक्शन शामिल हैं। यह ऐतिहासिक लोगों, जगहों और संस्थानों को उनके बड़े आर्थिक महत्व से जोड़ने की क्षमता की भी जांच करता है।

A. झांग कियान → 2. बैक्ट्रिया, भारत और चीन के बीच व्यापार संबंधों के बारे में अप्रत्यक्ष गवाही।
झांग कियान हान साम्राज्य के एक चीनी दूत थे, जिनके अकाउंट्स से सेंट्रल एशिया, बैक्ट्रिया, इंडिया और चीन को जोड़ने वाले कमर्शियल और कल्चरल लेन-देन के बारे में कीमती इनडायरेक्ट सबूत मिलते हैं। उनके ऑब्ज़र्वेशन्स से यूरेशियन ट्रेड नेटवर्क के आपस में जुड़े होने के नेचर को सामने लाने में मदद मिली।
B. द्विभाषी सिक्का → 4. ग्रीक और भारतीय दोनों मौद्रिक परंपराओं में मुद्रा का प्रचलन।
इंडो-ग्रीक सिक्कों का बाइलिंगुअल नेचर, जिसमें ग्रीक और खरोष्ठी की कहानियां हैं, ग्रीक और इंडियन मॉनेटरी परंपराओं के एक साथ होने को दिखाता है और अलग-अलग लोगों के बीच इकोनॉमिक ट्रांज़ैक्शन को आसान बनाता है।
सी. मुज़िरिस → 1. भारत के पश्चिमी तट के माध्यम से समुद्री व्यापार के साक्ष्य।
मुज़िरिस भारत के पश्चिमी तट पर एक बड़ा बंदरगाह था और इसने भारत को भूमध्यसागरीय दुनिया और दूसरे व्यापारिक इलाकों से जोड़ने वाले लंबी दूरी के समुद्री व्यापार में अहम भूमिका निभाई।
D. सातवाहन → 3. पड़ोसी राज्यों द्वारा इंडो-यूनानी मौद्रिक सम्मेलनों को अपनाना।
सातवाहनों समेत कई पड़ोसी राज्यों ने इंडो-ग्रीक सिक्कों की परंपराओं के कुछ हिस्सों को अपनाया और अपनाया, जिससे इंडो-ग्रीक पैसे के तरीकों का बड़ा असर दिखा।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर यह टेस्ट करता है कि कैंडिडेट सीधे आर्थिक सबूत (सिक्के, बंदरगाह, ट्रेड सेंटर) और इनडायरेक्ट सबूत (ट्रैवल अकाउंट और डिप्लोमैटिक रिपोर्ट) के बीच फर्क कर सकते हैं या नहीं। UPSC अक्सर कॉन्सेप्ट की क्लैरिटी का पता लगाने के लिए अलग-अलग कॉन्टेक्स्ट से पर्सनैलिटी, जगहों और इंस्टीट्यूशन को मिलाता है।

के. सुशांत सर की ओर से:
"व्यापार कई निशान छोड़ जाता है—सिक्के, बंदरगाह, यात्री और टेक्स्ट। UPSC में, पहचानें कि हर सोर्स असल में हमें क्या बताता है।"

9. **उत्तर:** (c) **केवल तीन**

यह सवाल इंडो-ग्रीक किंगडम की पॉलिटिकल, कल्चरल और धार्मिक खासियतों के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट मिलिट्री की घुसपैठ के सबूत और लगातार पॉलिटिकल कंट्रोल के सबूत के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 सही है। इंडो-ग्रीक्स का पॉलिटिकल इतिहास मुख्य रूप से न्यूमिज़मैटिक सबूतों के ज़रिए फिर से बनाया गया है। सिक्के शासकों, टाइटल, समय और इलाके के बंटवारे के बारे में जानकारी देते हैं, जो अक्सर लिटरेरी सोर्स की कमी की भरपाई करते हैं।
स्टेटमेंट 2 सही है। इंडो-ग्रीक सिक्कों का बाइलिंगुअल नेचर लोकल भाषा और कल्चरल ट्रेडिशन के साथ इंटरेक्शन दिखाता है। ग्रीक और खरोष्ठी इंस्क्रिप्शन का इस्तेमाल मल्टीकल्चरल माहौल के लिए अडैप्टेशन दिखाता है।
स्टेटमेंट 3 गलत है। हालांकि इंडो-ग्रीक शासक गंगा के मैदान के कुछ हिस्सों में आगे बढ़ गए होंगे, लेकिन पाटलिपुत्र पर लंबे समय तक पॉलिटिकल कंट्रोल का कोई पक्का सबूत नहीं है। टेम्पररी मिलिट्री कैंपेन को स्टेबल एडमिनिस्ट्रेशन समझने में कन्फ्यूज़ नहीं होना चाहिए।
स्टेटमेंट 4 सही है। ऐतिहासिक और न्यूमिज़माटिक सबूत बौद्ध धर्म, हिंदू परंपराओं और पारसी धर्म के असर सहित कई धार्मिक परंपराओं के साथ इसके जुड़ाव का संकेत देते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 3 डालता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट इलाके की पहुंच को पॉलिटिकल कंट्रोल के बराबर मानते हैं या नहीं। UPSC अक्सर हमले, कैंपेन या असर के सबूतों को परमानेंट एडमिनिस्ट्रेशन के दावों में बदल देता है।
इंडो-ग्रीक लोग गंगा के इलाके के कुछ हिस्सों तक पहुँच गए होंगे, लेकिन पाटलिपुत्र पर उनके लंबे समय तक राज करने के सबूत नहीं हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:
"एक सेना कुछ हफ़्तों में किसी इलाके में घुस सकती है; एडमिनिस्ट्रेशन बनाने में सालों लग जाते हैं। UPSC में, जीत और गवर्नेंस एक जैसे नहीं हैं।"

10. **उत्तर:** (a) **केवल** 1, 2 **और** 3
यह सवाल इंडो-ग्रीक किंगडम की शुरुआत और भारत और हेलेनिस्टिक दुनिया के बीच ऐतिहासिक लिंक के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट पॉलिटिकल कंटिन्यूटी और पॉलिटिकल सक्सेशन के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 सही है। इंडो-ग्रीक किंगडम के बनने से पहले भारत और हेलेनिस्टिक दुनिया के बीच डिप्लोमैटिक और टेरिटोरियल कॉन्टैक्ट हुए थे। इनमें अलेक्जेंडर के कैंपेन, सेल्यूसिड-मौर्य संधि और बाद में दोनों इलाकों के बीच लेन-देन शामिल थे।
स्टेटमेंट 2 सही है। अशोक के शिलालेखों में उस समय के हेलेनिस्टिक शासकों का ज़िक्र है और मौर्य साम्राज्य और ग्रीक दुनिया के बीच बातचीत के सबूत मिलते हैं। वे अशोक की डिप्लोमैटिक और धार्मिक पहलों की बड़ी ज्योग्राफिकल पहुंच को दिखाते हैं।
स्टेटमेंट 3 सही है। इंडो-ग्रीक किंगडम, ग्रीको-बैक्ट्रियन शासकों के विस्तार से उभरा और असरदार तरीके से उत्तर-पश्चिमी भारत में ग्रीको-बैक्ट्रियन किंगडम की एक पॉलिटिकल ब्रांच को दिखाता था।
स्टेटमेंट 4 गलत है। सिकंदर के जाने के बाद इंडो-ग्रीक उत्तर-पश्चिमी भारत में पॉलिटिकल कंट्रोल बनाने वाली पहली विदेशी ताकत नहीं थे। इंडो-ग्रीक के आने से पहले इस इलाके में सिकंदर के बाद के राजाओं और बाद में सेल्यूसिड्स का राज था।
(ध्यान IAS **स्पेशल फ़ीचर – थिंक लाइक एन एग्जामिनर)**
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 4 डालता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि कैंडिडेट ऐतिहासिक बदलावों को बहुत आसान तो नहीं बना रहे हैं। UPSC अक्सर किसी जानी-मानी पॉलिटिकल पावर को "पहला" या "एकमात्र" एक्टर के तौर पर दिखाता है, जबकि बीच के डेवलपमेंट को नज़रअंदाज़ कर देता है।
सिकंदर और इंडो-ग्रीक के बीच, उत्तर-पश्चिमी इलाके में सेल्यूसिड्स और दूसरे हेलेनिस्टिक उत्तराधिकारियों का असर और दबदबा देखा गया। इसलिए, इंडो-ग्रीक को सिकंदर के बाद इस इलाके में पहली विदेशी ताकत नहीं कहा जा सकता।

के. सुशांत सर से:
"इतिहास शायद ही कभी सीधी लाइन में आगे बढ़ता है। जब भी UPSC 'पहले', 'सिर्फ़', या 'तुरंत बाद' कहे, तो चेन में मिसिंग लिंक को ढूंढें।"

11. **उत्तर:** (a) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल पार्थियन साम्राज्य की एडमिनिस्ट्रेटिव और कल्चरल बुनियाद की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट पॉलिटिकल एकोमोडेशन और पॉलिटिकल सेंट्रलाइज़ेशन के बीच फर्क कर सकता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। पार्थियन साम्राज्य ने पश्चिम और मध्य एशिया में फैले एक बड़े और सांस्कृतिक रूप से अलग-अलग तरह के इलाके पर राज किया। पार्थियन अमीर लोगों में पढ़ाई-लिखाई और कई भाषाओं का ज्ञान होने से अलग-अलग भाषा और संस्कृति वाले समुदायों वाले इलाकों में डिप्लोमेसी, एडमिनिस्ट्रेशन और कम्युनिकेशन में आसानी हुई होगी।

स्टेटमेंट 2 सही है। पार्थियन साम्राज्य के लंबे समय तक चलने के पीछे एक वजह यह थी कि वह लोकल परंपराओं को लेकर काफी लचीला था। पूरी तरह से कल्चरल एक जैसापन लागू करने के बजाय, पार्थियन लोगों ने आम तौर पर अलग-अलग लोगों को अपने रीति-रिवाज, संस्थाएं और धार्मिक रीति-रिवाज बनाए रखने की इजाज़त दी, जिससे विरोध कम हुआ और स्थिरता को बढ़ावा मिला।

स्टेटमेंट 3 गलत है। लोकल परंपराओं के साथ सहयोग का मतलब ज़रूरी नहीं कि ज़्यादा पॉलिटिकल सेंट्रलाइज़ेशन हो। असल में, ऐसे अरेंजमेंट अक्सर डीसेंट्रलाइज़्ड या फ़ेडरेटेड पॉलिटिकल स्ट्रक्चर से जुड़े होते हैं जहाँ लोकल एलीट लोगों को काफ़ी ऑटोनॉमी मिलती है। पॉलिटिकल सेंट्रलाइज़ेशन और कल्चरल यूनिफ़ॉर्मिटी एक जैसे नहीं हैं।

(ध्यान IAS स्पेशल फ़ीचर – थिंक लाइक एन एग्ज़ामिनर)

एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 3 डालता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि कैंडिडेट कल्चरल यूनिफॉर्म को पॉलिटिकल ताकत से कन्फ्यूज तो नहीं करते। UPSC अक्सर ऐसे स्टेटमेंट बनाता है कि सेंट्रलाइज्ड राज्यों को एक जैसे तरीके लागू करने चाहिए, जबकि कई टिकाऊ साम्राज्य इसलिए बचे रहे क्योंकि उन्होंने लोकल डायवर्सिटी को अकोमोडेट किया।

पार्थियन साम्राज्य ने सख्त सेंट्रलाइज़ेशन के बजाय शाही ताकत, अमीर लोगों के असर और लोकल आज़ादी के कॉम्बिनेशन से अपना अधिकार बनाए रखा।

के. सुशांत सर से:

"एक मज़बूत साम्राज्य हमेशा एक सेंट्रलाइज़्ड साम्राज्य नहीं होता। UPSC में, कंट्रोल जितना ही ज़रूरी अकोमोडेशन भी हो सकता है।"

12. **उत्तर:** (b) **लंबी दूरी के व्यापार ने शहरी विकास, काम में विविधता और सांस्कृतिक मेलजोल के लिए एक कैटलिस्ट का काम किया।**

यह सवाल ऐतिहासिक सबूतों से बड़े सामाजिक-आर्थिक नतीजे निकालने की क्षमता को टेस्ट करता है। यह पार्थियन साम्राज्य के अंदर व्यापार, शहरीकरण, सांस्कृतिक लेन-देन और आर्थिक स्पेशलाइज़ेशन के बीच संबंधों की जांच करता है।

स्टेटमेंट 1 धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक लेन-देन के बीच बातचीत पर रोशनी डालता है। मिथ्रा की अहमियत पार्थियन क्षेत्र में ईरानी, हेलेनिस्टिक और क्षेत्रीय परंपराओं के मेल और बातचीत को दिखाती है।

स्टेटमेंट 2 सिल्क रूट्स के आर्थिक महत्व को दिखाता है। बड़े ट्रेड कॉरिडोर पर कंट्रोल ने कमर्शियल खुशहाली को आसान बनाया, मर्चेंट नेटवर्क को मज़बूत किया और शहरी सेंटर्स के विकास को बढ़ावा दिया।

स्टेटमेंट 3 में बढ़ते ट्रेड के आर्थिक नतीजों को दिखाया गया है। लग्ज़री सामान, कंस्ट्रक्शन और एलीट कंजम्प्शन की बढ़ती डिमांड ने कारीगरी, क्राफ़्ट्समैनशिप, आर्किटेक्चर और लंबी दूरी के कॉमर्स जैसे खास कामों को बढ़ावा दिया।

कुल मिलाकर, ये बातें एक ऐसी अर्थव्यवस्था की ओर इशारा करती हैं जिसकी खासियत है बढ़ता हुआ ट्रेड नेटवर्क, शहरी विकास, काम में अलग-अलग तरह का बदलाव और कल्चरल मेलजोल। इसलिए, ऑप्शन (b) सबसे सही नतीजा है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर यह टेस्ट कर रहा है कि क्या कैंडिडेट अलग-अलग फैक्ट्स से आगे बढ़कर उन्हें जोड़ने वाली बड़ी हिस्टोरिकल प्रोसेस को पहचान सकते हैं। UPSC अक्सर इनफरेंस-बेस्ड सवाल पूछता है, जिसमें किसी एक स्टेटमेंट में सीधे जवाब नहीं होता।

ट्रेड रूट सिर्फ़ सामान लाने-ले जाने से कहीं ज़्यादा काम करते हैं—वे शहरों, कल्चर, प्रोफ़ेशन, टेक्नोलॉजी और आइडिया को जोड़ते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब कई बयान ट्रेड, अर्बनाइज़ेशन और स्पेशलाइज़ेशन की ओर इशारा करते हैं, तो किसी एक फैक्ट के बजाय बड़े इकोनॉमिक ट्रांसफॉर्मेशन पर ध्यान दें।"

13. **उत्तर: (ए) ए–2, बी–3, सी–1, डी–4**

यह सवाल पार्थियन पॉलिटिकल इंस्टीट्यूशन, अमीर लोगों की ताकत और रोम के साथ डिप्लोमैटिक रिश्तों की जानकारी को टेस्ट करता है। यह पार्थियन शासन में असरदार लोगों और अमीर परिवारों की भूमिका की भी जांच करता है।

A. सुरेना → 2. ताकतवर अमीर और कैरे की लड़ाई में जीतने वाला।

सुरेना सबसे ताकतवर पार्थियन अमीरों में से एक थे और उन्हें कर्राहे की लड़ाई (53 BCE) में क्रैसस की रोमन सेना को हराने के लिए जाना जाता है, जो पार्थियन इतिहास की सबसे बड़ी मिलिट्री जीतों में से एक थी।

बी. फ्राटेस III → 3. पार्थियन शासक को कूटनीतिक असफलताओं के बाद उसके बेटों ने मार डाला।

रोमन सिविल झगड़ों के दौरान फ्राटेस III रीजनल डिप्लोमेसी में शामिल हो गए और आखिर में उनके बेटों ने उनकी हत्या कर दी, जो पार्थियन पॉलिटिक्स में अक्सर होने वाले उत्तराधिकार के झगड़ों को दिखाता है।

सी. पोम्पी → 1. पार्थियन शासक को "राजाओं का राजा" कहने से इनकार कर दिया।

रोमन लीडर पोम्पी ने पार्थिया के साथ सावधानी से डिप्लोमैटिक रिश्ते बनाए रखे और कहा जाता है कि उसने पार्थियन शासक को "राजाओं का राजा" टाइटल देने से मना कर दिया, जो रोमनों की शाही बराबरी को मानने में हिचकिचाहट दिखाता है।

D. पार्थियन कुलीनता → 4. उत्तराधिकार को प्रभावित कर सकते थे और कुशासन के खिलाफ हस्तक्षेप कर सकते थे।

पार्थियन अमीर लोगों का काफी पॉलिटिकल असर था। ताकतवर अमीर परिवार अक्सर शाही उत्तराधिकार में अहम भूमिका निभाते थे और वे ऐसे शासकों को चुनौती दे सकते थे जिन्हें बेअसर या ज़ालिम माना जाता था।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर यह टेस्ट कर रहा है कि क्या कैंडिडेट यह समझते हैं कि पार्थियन पॉलिटिकल अथॉरिटी सिर्फ़ राजा के पास ही नहीं थी। UPSC अक्सर ऐसे साम्राज्यों को हाईलाइट करता है जहाँ शाही अथॉरिटी के साथ-साथ अमीर लोगों का भी काफ़ी असर था।

पार्थियन राज्य राजशाही और अमीर लोगों की ताकत के बीच बैलेंस बनाकर काम करता था, जिससे अमीर परिवार राज और उत्तराधिकार में मुख्य भूमिका निभाते थे।

के. सुशांत सर से:

"कई साम्राज्यों में, सिंहासन शक्तिशाली था – लेकिन जो लोग यह तय करते थे कि सिंहासन पर कौन बैठेगा, वे और भी अधिक शक्तिशाली हो सकते थे।"

14. **उत्तरः** (b) **केवल** 1 **और** 2

यह सवाल इंडो-पार्थियन साम्राज्य की पॉलिटिकल ज्योग्राफी, लेजिटिमेसी और एडमिनिस्ट्रेटिव कैरेक्टर की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट कल्चरल एसोसिएशन और डायरेक्ट पॉलिटिकल सबऑर्डिनेशन के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट I सही है। गोंडोफेरेस ने इंडो-पार्थियन किंगडम की स्थापना की और पूर्वी ईरान से लेकर उत्तर-पश्चिमी भारत तक फैले इलाकों पर अधिकार स्थापित किया। इससे एक राजनीतिक संरचना बनी जिसने मध्य एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के क्षेत्रों को जोड़ा।

स्टेटमेंट II सही है। तक्षशिला, काबुल और पेशावर जैसी राजधानियों का इंडो-पार्थियन शासन से जुड़ाव बड़े कमर्शियल और कम्युनिकेशन कॉरिडोर की ओर एक स्ट्रेटेजिक झुकाव दिखाता है। ये सेंटर सेंट्रल एशिया, ईरान और इंडिया को जोड़ने वाले रास्तों पर खास जगहों पर थे।

स्टेटमेंट III गलत है। हालांकि गोंडोफेरेस बड़े पार्थियन कल्चरल दायरे से जुड़े थे, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इंडो-पार्थियन किंगडम, पार्थियन एम्पायर के सीधे एडमिनिस्ट्रेटेड प्रोविंस के तौर पर काम करता था। इंडो-पार्थियन लोगों को काफी पॉलिटिकल ऑटोनॉमी मिली हुई थी और वे एक इंडिपेंडेंट रीजनल पावर के तौर पर डेवलप हुए।

अनुमान 1 सही है क्योंकि कथन I स्पष्ट रूप से मध्य एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप को जोड़ने वाली एक राजनीतिक इकाई के उभरने का संकेत देता है।

अनुमान 2 सही है क्योंकि कथन II राजनीतिक केंद्रों के रणनीतिक और वाणिज्यिक महत्व पर प्रकाश डालता है।

अनुमान 3 गलत है क्योंकि यह कथन III में शामिल गलत धारणा से लिया गया है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट III डालता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट कल्चरल जुड़ाव को पॉलिटिकल कंट्रोल से कन्फ्यूज़ तो नहीं करते। UPSC अक्सर किसी शासक या वंश को एक बड़े कल्चरल दायरे से जुड़ा हुआ दिखाता है और फिर कैंडिडेट से उम्मीद करता है कि वे गलत तरीके से सीधे एडमिनिस्ट्रेटिव डिपेंडेंस का अंदाज़ा लगा लें।

मूल रूप से पार्थियन होने का मतलब यह नहीं है कि आप पार्थियन साम्राज्य के अधीन हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"शेयर्ड आइडेंटिटी शेयर्ड सॉवरेनिटी साबित नहीं करती। UPSC में, कल्चरल कनेक्शन और पॉलिटिकल कंट्रोल दो अलग-अलग कॉन्सेप्ट हैं।"

15. **उत्तरः** (c) **कथन** 1 **सही है, लेकिन कथन** 2 **सही नहीं है।**

यह सवाल इंडो-पार्थियन धार्मिक जुड़ाव और आर्कियोलॉजिकल इंटरप्रिटेशन की सबूतों की सीमाओं के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट सही ऐतिहासिक अनुमान और पक्के ऐतिहासिक सबूत के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 सही है। इंडो-पार्थियन सिक्के ज़्यादातर ईरानी धार्मिक परंपराओं को दिखाते हैं, और बौद्ध धर्म को लगातार शाही संरक्षण का कोई साफ़ सबूत नहीं है, जैसा कि बाद के कुछ शासकों के साथ मिला था। इसलिए, इतिहासकार आमतौर पर इसे ज़्यादा संभावना मानते हैं कि इंडो-पार्थियन शासकों ने सांस्कृतिक रूप से अलग-अलग तरह की आबादी पर शासन करते हुए भी ईरानी धार्मिक जुड़ाव बनाए रखा।

स्टेटमेंट 2 गलत है। सिरकप में गांधार बौद्ध मूर्तियों की खोज इस इलाके में बौद्ध कलात्मक परंपराओं की मौजूदगी और विकास को दिखाती है। हालांकि, यह पक्के तौर पर साबित नहीं करता कि ग्रीको-बौद्ध कला इंडो-पार्थियन संरक्षण में शुरू हुई थी। कलात्मक परंपराएं इंडो-ग्रीक, इंडो-पार्थियन और कुषाण समेत कई राजनीतिक ताकतों के बीच लंबे समय तक चलने वाले सांस्कृतिक मेलजोल से विकसित होती हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर ने स्टेटमेंट 2 में जानबूझकर "पक्का" शब्द का इस्तेमाल किया है। UPSC अक्सर ऐसी स्थितियों में "पक्का साबित करता है," "पक्का साबित करता है," या "शक से परे" जैसे एब्सोल्यूट एक्सप्रेशन डालता है, जहाँ सबूत सिर्फ़ संभावित मतलब निकालने की इजाज़त देते हैं।

आर्कियोलॉजिकल सबूत किसी थ्योरी को सपोर्ट कर सकते हैं, लेकिन वे हमेशा एक्सक्लूसिव ऑथरशिप या ओरिजिन को साबित नहीं करते।

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब UPSC कहता है 'पक्का साबित करता है,' तो पूछें कि क्या सबूत दावे को साबित करते हैं—या सिर्फ़ उसका समर्थन करते हैं।"

16. **उत्तरः** (c) **केवल** 3

यह सवाल इंडो-पार्थियन साम्राज्य में पॉलिटिकल लेजिटिमेसी, उत्तराधिकार और शाही गिरावट की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट किसी बाहरी ताकत द्वारा एब्जॉर्प्शन और उस ताकत के सफल इंटीग्रेशन के बीच फर्क कर सकते हैं।

स्टेटमेंट I सही है। बाद के शासकों द्वारा "गोंडोफेरेस" टाइटल को बार-बार अपनाने से पता चलता है कि फाउंडर की इज्जत पॉलिटिकल लेजिटिमेसी के सोर्स के तौर पर काम करती रही। यह गोंडोफेरेस I के हमेशा रहने वाले सिंबॉलिक महत्व को दिखाता है।
स्टेटमेंट II सही है। गोंडोफेरेस I के बाद साम्राज्य का टूटना, उत्तराधिकार के तरीकों और सेंट्रल अथॉरिटी में कमज़ोरियों को दिखाता है। इलाके में एकता बनाए रखने में नाकामयाबी, पॉलिटिकल अस्थिरता और कम होती एकजुटता की ओर इशारा करती है।
स्टेटमेंट III गलत है। कुजुला कडफिसेस के तहत कुषाणों द्वारा इंडो-पार्थियन इलाकों को अपने में मिलाना, कुषाण ताकत के बढ़ने को दिखाता है, न कि कुषाणों का इंडो-पार्थियन पॉलिटिकल स्ट्रक्चर में सफल इंटीग्रेशन को।
निष्कर्ष 1 सही है क्योंकि यह सीधे कथन I से निकलता है।
निष्कर्ष 2 सही है क्योंकि यह सीधे कथन II से निकलता है।
निष्कर्ष 3 गलत है क्योंकि यह ऐतिहासिक सबूतों के उलट है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर ने स्टेटमेंट III में जानबूझकर कारण-कार्य संबंध की दिशा उलट दी है। UPSC अक्सर एक पॉलिटिक्स पर दूसरी पॉलिटिक्स की जीत दिखाता है और फिर कैंडिडेट्स से पॉलिटिकल गिरावट के बजाय सफल इंटीग्रेशन का मतलब निकालने के लिए कहता है।
अगर कोई राज्य किसी बढ़ती हुई ताकत के हाथों अपना इलाका खो देता है, तो सबूत आमतौर पर कमज़ोर अथॉरिटी की ओर इशारा करते हैं, न कि सफल जुड़ाव की ओर।

<u>के. सुशांत सर की ओर से:</u>
"जब एक साम्राज्य दूसरे को अपने में समा लेता है, तो पूछिए कि कौन बढ़ रहा है और कौन सिकुड़ रहा है। UPSC अक्सर जवाब पावर की दिशा में छिपा देता है।"

17. **उत्तर:** (c) **केवल** 3
यह सवाल इंडो-पार्थियन के तहत पॉलिटिकल लेजिटिमेसी, एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर और धार्मिक इतिहास के ज्ञान को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट सही मतलब और पक्की ऐतिहासिक सच्चाई के बीच फर्क कर सकता है।
स्टेटमेंट I सही है। "गोंडोफेरेस" टाइटल का बार-बार इस्तेमाल यह दिखाता है कि लेजिटिमेसी किसी सम्मानित पहले वाले के साथ जुड़ने से मिल सकती है। ऐसी प्रथाएं इतिहास में आम हैं और इसके लिए ज़रूरी नहीं कि सीधे खानदानी उत्तराधिकार की ज़रूरत हो।
स्टेटमेंट II सही है। *पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी* में सिंध में दुश्मन पार्थियन शासकों का ज़िक्र है, जो पॉलिटिकल बंटवारे का इशारा करता है और यह दिखाता है कि अधिकार हमेशा इंडो-पार्थियन इलाकों में सेंट्रलाइज़्ड नहीं थे।
स्टेटमेंट III गलत है। हालांकि तक्षशिला के पास जंडियाल मंदिर को अक्सर पारसी अग्नि मंदिर के तौर पर पहचाना जाता है, लेकिन इस मतलब पर बहस होती रहती है। अगर इस पहचान को मान भी लिया जाए, तो भी यह पक्के तौर पर पारसी धर्म को पूरे इंडो-पार्थियन साम्राज्य का ऑफिशियल राज्य धर्म नहीं बनाता है।
निष्कर्ष 1 सही है क्योंकि यह सीधे कथन I से निकलता है।
निष्कर्ष 2 सही है क्योंकि यह सीधे कथन II से निकलता है।
नतीजा 3 गलत है क्योंकि मौजूद सबूत पक्के तौर पर धार्मिक एकरूपता या सरकारी मदद को साबित नहीं करते हैं।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट III पेश करता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट किसी एक आर्कियोलॉजिकल खोज से राज्य के धर्म के बारे में किसी बड़े नतीजे पर पहुँचते हैं या नहीं। UPSC अक्सर सीमित सबूतों को यूनिवर्सल दावों में बदल देता है।
एक मंदिर, शिलालेख या स्मारक धार्मिक मौजूदगी दिखा सकता है, लेकिन यह अपने आप पूरे राज्य में ऑफिशियल स्टेट पॉलिसी तय नहीं करता है।
<u>के. सुशांत सर की ओर से:</u>
"सबूत का एक टुकड़ा अस्तित्व दिखा सकता है; यह हमेशा एक्सक्लूसिविटी साबित नहीं कर सकता। UPSC में, किसी सुराग को निश्चितता में बदलने से बचें।"

18. **जवाब:** (c) **स्टेटमेंट** 1 **सही है, लेकिन स्टेटमेंट** 2 **गलत है।**
<u>यह सवाल पोस्ट-हेलेनिस्टिक यूरेशिया के संदर्भ में इंडो-सिथियन (शकस) के माइग्रेशन और पॉलिटिकल विस्तार की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी जांचता है कि क्या कैंडिडेट शांतिपूर्ण बातचीत और पॉलिटिकल जीत के बीच अंतर कर सकता है।</u>
स्टेटमेंट 1 सही है। शकों का बैक्ट्रिया, पार्थिया और उत्तर-पश्चिमी भारत में माइग्रेशन दिखाता है कि सेंट्रल और साउथ एशिया में पॉलिटिकल बदलावों ने मोबाइल पशुपालक ग्रुप्स के लिए इलाके के राज्य बनाने के मौके कैसे बनाए। मौजूदा ताकतों के कमज़ोर होने से नए शासक एलीट एक बड़े ज्योग्राफिकल एरिया में राज्य बनाने में कामयाब हुए।
स्टेटमेंट 2 गलत है। शक लोगों के भारतीय उपमहाद्वीप में आने-जाने में न सिर्फ़ व्यापार और सांस्कृतिक लेन-देन शामिल था, बल्कि मिलिट्री विस्तार, राजनीतिक जीत और राज्य बनाना भी शामिल था। इंडो-सिथियन राज्यों की स्थापना से ही पता चलता है कि खानाबदोश और बसे हुए समाजों के बीच बातचीत सिर्फ़ कमर्शियल संपर्क से कहीं ज़्यादा थी।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 2 को इस तरह से बनाता है कि कैंडिडेट मुश्किल ऐतिहासिक बातचीत को एक ही डायमेंशन में कम कर दें। UPSC अक्सर ट्रेड और कल्चरल लेन-देन को ऐसे दिखाता है जैसे वे युद्ध और पॉलिटिकल विस्तार को बाहर रखते हों।
असल में, माइग्रेशन, व्यापार, जीत, डिप्लोमेसी और कल्चरल एक्सचेंज अक्सर एक साथ होते थे।

के. सुशांत सर की ओर से:
"इतिहास शायद ही कभी किसी एक प्रोसेस से चलता है। जब UPSC कहता है 'लिमिटेड' या 'सिर्फ़', तो मिसिंग डाइमेंशन्स को देखें।"

19. **उत्तर:** (b) **केवल** 2 **और** 3
यह सवाल उत्तर-पश्चिमी भारत में इंडो-सीथियन के उदय और इंडो-ग्रीक राजनीतिक अधिकार के पतन के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह शुरुआती शक शासकों के बीच उत्तराधिकार और सत्ता के बंटवारे के तरीके की भी जांच करता है।

स्टेटमेंट 1 गलत है। एज़ेस द्वारा हिप्पोस्ट्रेटस पर जीत, इंडो-ग्रीक पॉलिटिकल पावर के लगातार दबदबे के बजाय गिरावट को दिखाती है। इंडो-सिथियन शासकों की सफलता यह दिखाती है कि हेलेनिस्टिक अथॉरिटी की जगह तेज़ी से नए सेंट्रल एशियन रूलिंग ग्रुप ले रहे थे।
स्टेटमेंट 2 सही है। गांधार और पुराने इंडो-ग्रीक इलाकों में माउज़ का फैलना इंडो-ग्रीक पॉलिटिकल अथॉरिटी के कमज़ोर होने और नए सेंट्रल एशियन एलीट के उभरने को दिखाता है, जिन्होंने नॉर्थ-वेस्टर्न इंडिया पर कंट्रोल कर लिया।
स्टेटमेंट 3 सही है। मौस से वोनोन्स, स्पैलागाडेम्स और एज़ेस जैसे शासकों का उत्तराधिकार एक ऐसे पॉलिटिकल सिस्टम का सुझाव देता है जिसमें वंशवाद की निरंतरता और कुलीन शासक परिवारों के सदस्यों के बीच अधिकार का बंटवारा दोनों शामिल थे।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 1 डालता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि कैंडिडेट जीत के ऐतिहासिक महत्व को समझते हैं या नहीं। UPSC अक्सर बताता है कि एक शासक दूसरे को हराता है और फिर कैंडिडेट से उम्मीद करता है कि वे गलती से हारी हुई ताकत की लगातार ताकत का अंदाज़ा लगा लें।
एक सफल विजय आमतौर पर विजित राजनीति के कमज़ोर होने का संकेत देती है, न कि उसके प्रभुत्व का।

के. सुशांत सर की ओर से:
"अगर कोई राज्य जीता जा रहा है, तो आमतौर पर वह अपनी ताकत खो रहा होता है, ताकत नहीं दिखा रहा होता। हमेशा राजनीतिक बदलाव की दिशा में चलें।"

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

20. **उत्तर:** (d) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल गांधार कला में इंडो-सिथियन लोगों के रिप्रेजेंटेशन और बौद्ध कला परंपराओं में दिखने वाले कल्चरल इंटरैक्शन के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट आर्टिस्टिक प्रेजेंस और आर्टिस्टिक एक्सक्लूसिविटी के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 सही है। इंडो-सिथियन सैनिकों को कई गांधार बौद्ध रिलीफ और फ्रिज़ में दिखाया गया है। ये रिप्रेजेंटेशन कॉस्ट्यूम, हथियार और मिलिट्री कल्चर के बारे में कीमती विज़ुअल सबूत देते हैं।
स्टेटमेंट 2 सही है। ऐसे लोगों को आम तौर पर सेंट्रल एशियन ड्रेस ट्रेडिशन की खासियत, बड़े ट्यूनिक्स और ट्राउज़र्स पहने हुए, और भारी सीधी तलवारें और स्टेपी योद्धाओं से जुड़े दूसरे मार्शल इक्विपमेंट लिए हुए दिखाया जाता है।
स्टेटमेंट 3 गलत है। इंडो-सिथियन चित्रण सिर्फ़ शाही महलों तक ही सीमित नहीं हैं। इसके उलट, कुछ सबसे ज़रूरी चित्रण गांधार में बौद्ध धार्मिक स्मारकों और कहानी की तस्वीरों पर मिलते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 3 डालता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि कैंडिडेट पॉलिटिकल और रिलीजियस आर्ट के बीच कोई सख्त फर्क मानते हैं या नहीं। पुराने समाजों में, धार्मिक स्मारक अक्सर आज की सोशल, मिलिट्री और कल्चरल इमेजरी के रिपॉजिटरी के तौर पर काम करते थे।
बौद्ध कला में अक्सर न केवल धार्मिक लोगों को दिखाया जाता है, बल्कि शासकों, सैनिकों, व्यापारियों और आम लोगों को भी दिखाया जाता है।

के. सुशांत सर की ओर से:
"पुराने स्मारक सिर्फ़ धार्मिक रिकॉर्ड नहीं हैं; वे समाज के विज़ुअल आर्काइव हैं।"

21. **उत्तर:** (a) **केवल** 1
यह सवाल शक एडमिनिस्ट्रेशन, सोशल इंटीग्रेशन और हिस्टोरिकल विरासत की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट पॉलिटिकल गिरावट और कल्चरल असर के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट I सही है। क्षत्रपों की नियुक्ति एक डीसेंट्रलाइज़्ड एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम को दिखाती है जो बड़े और कल्चरल रूप से अलग-अलग इलाकों पर राज करने के लिए सही है। प्रोविंशियल गवर्नर बिना ज़्यादा सेंट्रलाइज़ेशन के असरदार कंट्रोल कर पाए।
स्टेटमेंट II एक ऐतिहासिक ऑब्ज़र्वेशन के तौर पर सही है। शक और सातवाहनों के बीच शादी के रिश्ते दिखाते हैं कि पॉलिटिकल दुश्मनी और सोशल इंटीग्रेशन एक साथ हो सकते थे। ज़रूरी नहीं कि झगड़े ने बातचीत और घुलने-मिलने को रोका हो।
स्टेटमेंट III गलत है। शक पॉलिटिकल अथॉरिटी के गायब होने से उनका ऐतिहासिक असर खत्म नहीं हुआ। शकों ने एडमिनिस्ट्रेटिव परंपराओं, सिक्कों, ट्रेड नेटवर्क, कल्चरल एक्सचेंज और सोशल डेवलपमेंट में योगदान दिया जो उनके पॉलिटिकल पतन के बाद भी जारी रहा।
अनुमान 1 सही है क्योंकि यह सीधे कथन I से निकलता है।
अनुमान 2 गलत है क्योंकि कथन II इसके विपरीत दर्शाता है - कि प्रतिद्वंद्विता और एकीकरण एक साथ हो सकते हैं।
अनुमान 3 गलत है क्योंकि स्टेटमेंट III एक गलत सोच पर आधारित है। राजनीतिक अधिकार खत्म होने के बाद भी सांस्कृतिक और संस्थागत असर अक्सर लंबे समय तक बना रहता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर यह टेस्ट कर रहा है कि क्या कैंडिडेट पॉलिटिकल सर्वाइवल को हिस्टोरिकल इम्पैक्ट से कन्फ्यूज़ करते हैं। UPSC अक्सर ऐसे सवाल बनाता है जिससे यह पता चलता है कि एक कम्युनिटी की पॉलिटिकल पावर खत्म होने के बाद उसका कोई मतलब नहीं रह जाता।
इतिहास के कई सबसे स्थायी प्रभाव उन राज्यों से भी ज़्यादा समय तक बने रहते हैं जिन्होंने उन्हें शुरू में बनाया था।

के. सुशांत सर की ओर से:
"साम्राज्य खत्म हो सकते हैं, लेकिन संस्थाएं, विचार और सांस्कृतिक प्रभाव अक्सर सदियों तक बने रहते हैं।"

22. **उत्तर:** (d) 1, 2 **और** 3
यह सवाल इंडो-सिथियन सिक्कों की जानकारी और उनकी मॉनेटरी परंपराओं में दिखने वाले कल्चरल मेल को टेस्ट करता है। यह इंडो-ग्रीक और इंडो-सिथियन पॉलिटिकल कल्चर के बीच कंटिन्यूटी की भी जांच करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। शासकों के पोर्ट्रेट बस्ट इंडो-सिथियन सिक्कों की एक खास पहचान बने रहे, जो इंडो-यूनानियों द्वारा शुरू की गई सिक्का-संबंधी परंपराओं के साथ कंटिन्यूटी को दिखाते हैं।
स्टेटमेंट 2 सही है। कई इंडो-सिथियन सिक्कों के आगे की तरफ ग्रीक और पीछे की तरफ खरोष्ठी की कहानियां थीं, जो कई भाषाएं बोलने वाले लोगों के हिसाब से ढलने और पहले से मौजूद पैसे के चलन को जारी रखने को दिखाती हैं।
स्टेटमेंट 3 सही है। इंडो-सिथियन सिक्कों में कभी-कभी ग्रीक दैवीय इमेज के साथ बौद्ध सिंबल भी शामिल होते थे, जो उत्तर-पश्चिमी भारत के मल्टीकल्चरल माहौल और अलग-अलग धार्मिक परंपराओं के मेल को दिखाते थे।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर यह टेस्ट करता है कि कैंडिडेट अलग-अलग खानदानों में कंटिन्यूटी को मानते हैं या नहीं। UPSC अक्सर एक नया रूलिंग ग्रुप दिखाता है और कैंडिडेट से उम्मीद करता है कि वे पिछली परंपराओं से पूरी तरह अलग सोच रखें।
असल में, सफल विजेता अक्सर मौजूदा एडमिनिस्ट्रेटिव, आर्टिस्टिक और मॉनेटरी तरीकों को अपनाते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:
"नए शासकों को अक्सर पुराने सिस्टम विरासत में मिलते हैं। UPSC में, बदलाव की तरह ही कंटिन्यूटी पर भी ध्यान दें।"

23. **उत्तर:** (c) **केवल** 1 **और** 3
यह सवाल गांधार में इंडो-सिथियन लोगों से जुड़ी कलात्मक परंपराओं और आर्कियोलॉजिकल अवशेषों में दिखने वाले कल्चरल मेल के ज्ञान को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट डोमिनेंट रिप्रेजेंटेशन और एक्सक्लूसिव रिप्रेजेंटेशन के बीच फर्क कर सकता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। गांधार से जुड़े स्टोन पैलेट में ग्रीक, ईरानी और लोकल आर्टिस्टिक असर का मिक्स दिखता है, जो नॉर्थ-वेस्टर्न इंडिया के मल्टीकल्चरल कैरेक्टर को दिखाता है।
स्टेटमेंट 2 गलत है। इन पैलेट पर इंसानी आकृतियों को सिर्फ़ इंडो-सिथियन ड्रेस में नहीं दिखाया गया है। आर्टिस्टिक रेपर्टरी में अलग-अलग परंपराओं से लिए गए कई तरह के कॉस्ट्यूम, स्टाइल और कल्चरल असर शामिल हैं।
स्टेटमेंट 3 सही है। सिरकप में मिले मशहूर पत्थर के पैलेट में से एक में एक पंख वाले इंडो-सिथियन घुड़सवार को एक पंख वाले हिरण पर सवार दिखाया गया है, जिस पर एक शेर हमला कर रहा है। यह सीन इस इलाके की कल्पनाशील और मिली-जुली कलात्मक परंपराओं को दिखाता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर ने जानबूझकर स्टेटमेंट 2 में "एक्सक्लूसिवली" शब्द डाल दिया है। UPSC अक्सर एक मोटे तौर पर सही ऑब्ज़र्वेशन को गलत स्टेटमेंट में बदलने के लिए एब्सोल्यूट टर्म्स का इस्तेमाल करता है।
एक कल्चरल असर खास हुए बिना भी खास हो सकता है।

के. सुशांत सर की ओर से:
"जब भी UPSC 'सिर्फ़', 'सभी', या 'सिर्फ़' कहे, तो चेक करें कि क्या सबूत सच में कोई छूट नहीं देते हैं।"

24. **उत्तर:** (a) **केवल** 3

यह सवाल शक इतिहास के सोर्स, भारतीय धार्मिक परंपराओं के साथ उनके जुड़ाव, और राजनीतिक गिरावट और सांस्कृतिक निरंतरता के बीच के अंतर के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट ऐतिहासिक सबूतों की कई कैटेगरी से सही नतीजे निकाल सकता है।

स्टेटमेंट I सही है। शकों का ज़िक्र भारतीय साहित्यिक परंपराओं की एक बड़ी रेंज में मिलता है, जिसमें पुराण, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत और पतंजलि का महाभाष्य शामिल हैं। ये किताबें पुराने भारत में उनकी मौजूदगी और समझ के बारे में कीमती साहित्यिक सबूत देती हैं।
स्टेटमेंट II सही है। बुटकारा स्तूप की खोज और मथुरा लायन कैपिटल जैसे आर्कियोलॉजिकल और एपिग्राफिक सबूत बताते हैं कि कुछ इंडो-सिथियन शासक बौद्ध धर्म से जुड़े थे और उन्होंने बौद्ध संस्थाओं में योगदान दिया था।
स्टेटमेंट III सही है। शक पॉलिटिकल पावर का पतन पश्चिमी क्षत्रपों के खिलाफ गौतमीपुत्र शातकर्णी की सफलताओं के साथ शुरू हुआ, जबकि उत्तर-पश्चिमी भारत में शक अथॉरिटी का अंत अज़ीज़ II जैसे शासकों के पतन के बाद कुषाणों के उदय से जुड़ा।
निष्कर्ष 1 गलत है। ये बातें खुद दिखाती हैं कि शकों के बारे में सबूत लिटरेरी और आर्कियोलॉजिकल/एपिग्राफिक दोनों सोर्स से मिलते हैं।
निष्कर्ष 2 गलत है। बौद्ध संघों और भारतीय समाज में एकीकरण के सबूत दिखाते हैं कि शकों का संपर्क सिर्फ़ सैन्य संघर्ष तक ही सीमित नहीं था।
निष्कर्ष 3 सही है। राजनीतिक गिरावट के बाद भी, शक सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक प्रभाव भारतीय समाज में बने रहे।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर पॉलिटिकल हिस्ट्री को कल्चरल हिस्ट्री से अलग दिखाता है। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट यह मानते हैं कि पॉलिटिकल पावर के खत्म होने से कल्चरल असर भी अपने आप खत्म हो जाएगा।
शकों ने धीरे-धीरे पॉलिटिकल अधिकार खो दिया, लेकिन उनके कई एडमिनिस्ट्रेटिव, आर्टिस्टिक और सोशल असर उनके राज्यों के खत्म होने के बाद भी लंबे समय तक बने रहे।

के. सुशांत सर की ओर से:
"पॉलिटिकल पावर एक पीढ़ी में कम हो सकती है; कल्चरल असर सदियों तक रह सकता है। UPSC में, कभी भी पॉलिटिकल गिरावट को हिस्टॉरिकल गायब होने के बराबर न समझें।"

25. **उत्तर: (सी) ए-2, बी-3, सी-4, डी-1**

यह सवाल मुख्य कुषाण शासकों की जानकारी और कुषाण साम्राज्य के बनने, फैलने और मज़बूत होने में उनके योगदान को टेस्ट करता है।
A. कुजुल कडफिसेस → 2. कुषाण साम्राज्य की नींव रखी।
कुजुला कडफिसेस ने युएझी कबीलों को एकजुट किया और अफ़गानिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत में कुषाण राजनीतिक सत्ता की नींव रखी।
B. विम कडफिसेस → 3. भारत में सोने के सिक्के शुरू करने वाले पहले कुषाण शासक।
विमा कडफिसेस को बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी करने का श्रेय दिया जाता है, जो लंबी दूरी के व्यापार नेटवर्क से पैदा हुई खुशहाली को दिखाता है।
C. कनिष्क प्रथम → 4. पुरुषपुर और मथुरा से साम्राज्य का प्रशासन किया।
कनिष्क के राज में कुषाण ताकत का चरम था। पुरुषपुर (पेशावर) और मथुरा एडमिनिस्ट्रेशन और कल्चर के ज़रूरी सेंटर के तौर पर उभरे।
डी. वासुदेव I → 1. "महान कुषाणों" में से अंतिम; उनका शासनकाल सस्सानिदों के आगे बढ़ने के साथ ही हुआ।
वासुदेव I को आम तौर पर आखिरी बड़ा कुषाण शासक माना जाता है, इससे पहले कि साम्राज्य बढ़ते बाहरी दबावों, जिसमें ससानिड्स का उदय भी शामिल था, की वजह से टूटने लगा।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर समय के हिसाब से समझ को टेस्ट करता है। UPSC अक्सर फाउंडर्स, कंसोलिडेटर्स और बाद के शासकों को मिलाता है ताकि यह देखा जा सके कि कैंडिडेट्स शासकों को सही ऐतिहासिक क्रम में रख सकते हैं या नहीं।

के. सुशांत सर की ओर से:
"पहले फाउंडर को पहचानें, फिर एक्सपैंडर को, फिर कंसोलिडेटर को, और आखिर में डिक्लाइन से जुड़े रूलर को। क्रोनोलॉजी अक्सर जवाब खोलती है।"

26. **उत्तर:** (d) 1, 2 **और** 3

यह सवाल कुषाणों के समय हुए धार्मिक और सांस्कृतिक विकास की जानकारी को टेस्ट करता है, खासकर बौद्ध धर्म के विकास और ग्रीको-बौद्ध परंपराओं के उभरने में कनिष्क की भूमिका को।
स्टेटमेंट 1 सही है। हेलेनिस्टिक कलात्मक परंपराओं और बौद्ध धार्मिक थीम के बीच बातचीत ने ग्रीको-बौद्ध धर्म के विकास में, खासकर गांधार क्षेत्र में, महत्वपूर्ण योगदान दिया।
स्टेटमेंट 2 सही है। बौद्ध परंपरा कनिष्क को कश्मीर में एक बड़ी बौद्ध परिषद के आयोजन से जोड़ती है, जिसे अक्सर सर्वास्तिवाद परंपरा में चौथी बौद्ध परिषद के रूप में पहचाना जाता है।

स्टेटमेंट 3 सही है। कनिष्क को पारंपरिक रूप से बौद्ध स्कॉलरशिप को सपोर्ट करने का क्रेडिट दिया जाता है, जिसमें संस्कृत को बौद्ध साहित्य की एक ज़रूरी भाषा के तौर पर बढ़ावा देना और क्षेत्रीय प्राकृत परंपराओं में पहले से सुरक्षित टेक्स्ट का ट्रांसलेशन या एडिटिंग शामिल है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर आर्टिस्टिक, धार्मिक और लिटरेरी डेवलपमेंट को एक ही रूलर के नीचे मिलाता है। UPSC अक्सर कैंडिडेट्स से उम्मीद करता है कि वे कल्चरल प्रोसेस को अलग-अलग स्टडी करने के बजाय उन्हें जोड़ें।

के. सुशांत सर की ओर से:
"महान साम्राज्यों ने न केवल क्षेत्र बल्कि विचारों, भाषाओं और कलात्मक परंपराओं को भी फैलाया।"

27. **उत्तर:** (a) **केवल** 1 **और** 3
यह सवाल गांधार कला में कुषाण रिप्रेजेंटेशन और कलात्मक परंपराओं के धीरे-धीरे भारतीयकरण के ज्ञान को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। गांधार आर्ट में कुषाण फिगर्स को आमतौर पर ट्यूनिक्स, बेल्ट, ट्राउजर और बूट्स पहने हुए दिखाया गया है, जो उनके सेंट्रल एशियन ओरिजिन को दिखाता है।
स्टेटमेंट 2 गलत है। कुषाणों को न केवल शासकों और योद्धाओं के रूप में दिखाया गया है, बल्कि बौद्ध धर्म में भक्तों, दानदाताओं और प्रतिभागियों के रूप में भी दिखाया गया है।
स्टेटमेंट 3 सही है। कुषाण भक्तों को दिखाने वाली फ्रिज़ अक्सर गांधार बौद्ध धर्म से जुड़ी पहले की, पक्की हेलेनिस्टिक तस्वीरों की तुलना में ज़्यादा भारतीय कला दिखाती हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर ने जानबूझकर स्टेटमेंट 2 में "सिर्फ़" शब्द का इस्तेमाल किया है। UPSC अक्सर बहुत ज़्यादा एक्सक्लूसिविटी के ज़रिए एक थोड़ी सही बात को भी गलत स्टेटमेंट में बदल देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:
"जब आप 'सिर्फ़' देखें, तो खुद से पूछें कि क्या इतिहास सच में इतना आसान था।"

28. **उत्तर:** (c) **केवल** 1 **और** 3
यह सवाल भारत में शकों के उदय, प्रशासन और सिक्कों के बारे में जानकारी का टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। मौस को आमतौर पर भारत का सबसे पहला ज्ञात इंडो-सिथियन शासक माना जाता है। गांधार और पुराने इंडो-ग्रीक इलाकों में उसके विस्तार ने उत्तर-पश्चिमी भारत में शक राजनीतिक अधिकार की शुरुआत की।
स्टेटमेंट 2 गलत है। शक पावर का पतन गुप्तों के साथ शुरू नहीं हुआ था। गौतमीपुत्र सातकर्णी जैसे शासकों ने पहले ही बड़ी मुश्किलें खड़ी कर दी थीं। इसके अलावा, उत्तर-पश्चिमी भारत में शक शासन कुषाणों के उदय के साथ बहुत पहले ही खत्म हो गया था।
स्टेटमेंट 3 सही है। शकों ने प्रोविंशियल एडमिनिस्ट्रेशन का क्षत्रप सिस्टम अपनाया। उनके सिक्कों में ग्रीक और खरोष्ठी लेजेंड्स को मिलाया गया था और अक्सर घुड़सवार शासकों को दिखाया गया था, जो सेंट्रल एशियन ट्रेडिशन को दिखाता था।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
परीक्षक ने कथन 2 में कालक्रम को जानबूझकर खींचा है। UPSC अक्सर सदियों से अलग दो सही घटनाओं को मिलाकर एक गलत ऐतिहासिक क्रम बना देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:
"प्राचीन इतिहास में गलत ऑप्शन को हटाने के लिए क्रोनोलॉजी सबसे मज़बूत टूल में से एक है।"

29. **उत्तर:** (d) **उपर्युक्त में से कोई नहीं**
यह सवाल कुषाण साम्राज्य की शुरुआत, पॉलिटिकल पहचान और इलाके के फैलाव की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट एथनिक शुरुआत, पॉलिटिकल बनावट और इलाके के फैलाव के बीच फर्क कर सकता है।
स्टेटमेंट 1 गलत है। कुषाण साम्राज्य पूरे युएझी संघ ने नहीं बनाया था। यह युएझी की एक ब्रांच—कुषाण कबीले—से निकला, जिसने धीरे-धीरे दूसरे ग्रुप्स को अपनी लीडरशिप में एक कर लिया।
स्टेटमेंट 2 गलत है। कुषाण साम्राज्य, पार्थियन साम्राज्य का पूर्वी हिस्सा नहीं था। यह युएझी माइग्रेशन से अलग होकर उभरा और एक अलग पॉलिटिकल एंटिटी के तौर पर डेवलप हुआ।
स्टेटमेंट 3 गलत है। कुषाण साम्राज्य का कल्चरल पीक कनिष्क जैसे शासकों के राज में अपने सबसे बड़े इलाके में फैलाव के दौरान आया, जब साम्राज्य सिंधु नदी के इलाके से आगे उत्तर भारत और सेंट्रल एशिया तक फैल गया था।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जानबूझकर इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश करने के तीन अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल करता है:

• कथन 1 सामूहिक भागीदारी ("संपूर्ण युएझी संघ") को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है।

• कथन 2 राजनीतिक उत्पत्ति को भौगोलिक निकटता के साथ भ्रमित करता है।

• कथन 3 क्षेत्रीय विस्तार और सांस्कृतिक समृद्धि के बीच के संबंध को उलट देता है।

UPSC अक्सर एक ज़रूरी शब्द को बदलकर, बाकी बयान को सही रखकर गलत बयान बना देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"ज़्यादातर UPSC ट्रैप पूरी तरह से गलत फैक्ट्स पर नहीं बने होते हैं – वे एक भरोसेमंद स्टेटमेंट के अंदर छिपे एक गलत शब्द पर बने होते हैं।"

30. **जवाब:** (a) A-2, B-3, C-1, D-4

यह सवाल कुशानो-सासानियन शासकों के समय और सासानियन साम्राज्य के पूर्वी इलाकों में सत्ता के उत्तराधिकार के ज्ञान को टेस्ट करता है। यह कैंडिडेट की शासकों को सही ऐतिहासिक क्रम में रखने की क्षमता को भी चेक करता है।

A. अर्दशीर I कुशनशाह → 2. 230–245 ई.

अर्दशीर I कुषाणशाह शुरुआती कुषाणो-सासानियन शासकों में से एक थे और उन्होंने पुराने कुषाण इलाकों में सासानियन विस्तार के शुरुआती दौर में शासन किया था।

B. होर्मिज़्द I कुशनशाह → 3. 275–300 CE

होर्मिज़्द I कुषाणशाह ने तीसरी सदी के आखिर में राज किया और वह पूर्वी ईरान और अफ़गानिस्तान में कुषाणो-सासानियन अधिकार को मज़बूत करने से जुड़ा है।

सी. होर्मिज़्द द्वितीय कुशनशाह → 1. 300–303 ई.

होर्मिज़्द द्वितीय कुषाणशाह का चौथी सदी की शुरुआत में छोटा राज था।

घ. वराहरण कुषाणशाह → 4. 330–365 ई.

वराहरन कुषाणशाह ने चौथी सदी के बीच में राज किया और वह कुषाणो-सासानियन पॉलिटिकल अथॉरिटी के बाद के दौर में से एक था।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर कॉन्सेप्चुअल समझ के बजाय क्रोनोलॉजिकल एक्यूरेसी टेस्ट कर रहा है। UPSC अक्सर मैचिंग सवाल बनाता है जहाँ सभी शासक एक ही वंश के होते हैं और सिर्फ़ उनके शासन के समय में फ़र्क होता है।

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब सभी नाम जाने-पहचाने लगते हैं, तो क्रोनोलॉजी ही हटाने की चाबी बन जाती है।"

31. **उत्तर:** (a) **केवल** 1 **और** 2

यह सवाल कुशानो-सासानियन समय के दौरान धार्मिक विकास और ऐतिहासिक सोर्स के तौर पर सिक्कों के इस्तेमाल की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट धार्मिक मौजूदगी के सबूत और धार्मिक खासियत के सबूत के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट I सही है। सिक्कों पर आग की वेदियों का बार-बार दिखना ज़ोरोस्ट्रियन परंपराओं की अहमियत के बारे में ज़रूरी सबूत देता है। धार्मिक निशानियों और शाही सोच को फिर से बनाने के लिए सिक्के बनाना सबसे कीमती सोर्स में से एक है।

स्टेटमेंट II सही है। अफ़गानिस्तान और सेंट्रल एशिया में बौद्ध मिशनरियों की लगातार एक्टिविटी से पता चलता है कि बौद्ध धर्म भारतीय सबकॉन्टिनेंट के बाहर भी असरदार रहा और इंस्टीट्यूशनल और थ्योरी के हिसाब से लगातार डेवलप होता रहा।

स्टेटमेंट III गलत है। सिक्कों पर शिव और नंदी की तस्वीर का मतलब यह नहीं है कि शैव धर्म ही खास राज्य धर्म बन गया। सिक्कों पर बनी तस्वीरें अक्सर खास धार्मिक कमिटमेंट के बजाय पॉलिटिकल तालमेल, कल्चरल मेलजोल और इलाके की लेजिटिमेसी दिखाती हैं।

अनुमान 1 सही है क्योंकि कथन I दिखाता है कि कैसे सिक्के आज के धार्मिक ट्रेंड्स को दिखा सकते हैं।

अनुमान 2 सही है क्योंकि बौद्ध धर्म का लगातार फैलना, चल रहे धार्मिक विकास और बदलाव की ओर इशारा करता है।

अनुमान 3 गलत है क्योंकि कथन III खुद एक अनुचित धारणा पर आधारित है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जानबूझकर धार्मिक निशानियों को धार्मिक खासियत के दावे में बदल देता है। UPSC अक्सर कैंडिडेट्स से यह उम्मीद करता है कि वे यह समझें कि सिक्कों पर किसी देवता की मौजूदगी से अपने आप कोई खास सरकारी धर्म तय नहीं हो जाता।

के. सुशांत सर की ओर से:

"सिक्के पर बना निशान पहचान दिखाता है; यह हमेशा खासियत साबित नहीं करता।"

32. **उत्तर:** (d) **केवल** 1 **और** 2

यह सवाल सासानी साम्राज्य के एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर और पॉलिटिकल और धार्मिक अथॉरिटी के बीच के रिश्ते की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट हायरार्किकल गवर्नेंस और डीसेंट्रलाइज़ेशन के बीच फर्क कर सकते हैं।

स्टेटमेंट I सही है। शहंशाह ("राजाओं का राजा") टाइटल का मतलब एक हायरार्किकल पॉलिटिकल स्ट्रक्चर है जिसमें नीचे के शासक एक बड़े राजा के दबदबे को मानते थे।

स्टेटमेंट II सही है। प्रोविंशियल एडमिनिस्ट्रेशन में मोवेड (हाई प्रीस्ट) की भूमिका गवर्नेंस और धार्मिक अथॉरिटी के बीच एक करीबी इंस्टिट्यूशनल रिश्ते को दिखाती है।

स्टेटमेंट III गलत है। शहंशाह की देखरेख में इलाकों पर राज करने वाले शहरदारों का होना पूरी तरह से डीसेंट्रलाइज़ेशन नहीं है। बल्कि, यह एक बड़े शाही ढांचे के अंदर सौंपे गए अधिकार को दिखाता है।

नतीजा 1 सही है क्योंकि शहंशाह टाइटल साफ़ तौर पर आज़ाद राज्यों के बजाय हायरार्की दिखाता है।

नतीजा 2 सही है क्योंकि धार्मिक अधिकारियों की एडमिनिस्ट्रेटिव भूमिका दिखाती है कि धर्म और शासन आपस में जुड़े हुए थे।

अनुमान 3 गलत है क्योंकि कथन III विकेंद्रीकरण की डिग्री को बढ़ा-चढ़ाकर बताता है और शाही अधिकार को कम करके बताता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जानबूझकर लोकल एडमिनिस्ट्रेशन की तुलना कमज़ोर सेंट्रल अथॉरिटी से करते हैं। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट समझते हैं कि पावर देने का मतलब यह नहीं है कि सेंट्रल कंट्रोल नहीं है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"अगर गवर्नर अधिकार का इस्तेमाल करता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि राजा के पास अधिकार नहीं है। डेलीगेशन और डीसेंट्रलाइज़ेशन एक ही बात नहीं हैं।"

33. **उत्तर:** (b) 1, 2 **और** 3

यह सवाल कुशानो-सासानियन राज्य के आर्थिक और धार्मिक चरित्र की समझ को न्यूमिज़माटिक सबूतों के ज़रिए टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट बयानों के बीच लॉजिकल रिश्तों की पहचान कर सकता है।

स्टेटमेंट I सही है। तांबे के सिक्कों का बड़े पैमाने पर सर्कुलेशन एक मज़बूत लोकल और रीजनल इकॉनमी का सुझाव देता है। यह इस तर्क को कमज़ोर करता है कि सिर्फ़ सिल्क रूट कॉमर्स ने ही इकॉनमिक लाइफ को बनाए रखा।

स्टेटमेंट II एक ऐतिहासिक दावे के तौर पर गलत है। शिव और नंदी का चित्रण ज़रूरी नहीं कि ज़ोरोस्ट्रियन परंपराओं को छोड़ने का संकेत देता हो। उस समय के सिक्कों में कई धार्मिक बातें दिखती हैं।

स्टेटमेंट III सही है। पारसी और भारतीय धार्मिक इमेजरी का एक साथ होना, अलग-अलग कल्चर वाली आबादी के बीच लेजिटिमेसी पाने के लिए शासकों की कोशिशों का इशारा हो सकता है।

रिलेशनशिप 1 सही है क्योंकि स्टेटमेंट I सीधे तौर पर इस सोच को चुनौती देता है कि लंबी दूरी का व्यापार ही एकमात्र आर्थिक आधार था।

संबंध 2 सही है क्योंकि कथन II धार्मिक परंपराओं के प्रतिस्थापन के बजाय सह-अस्तित्व को दर्शाने वाले व्यापक मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य का खंडन करता है।

रिलेशनशिप 3 सही है क्योंकि स्टेटमेंट I और III मिलकर लोकल इकोनॉमिक और कल्चरल सच्चाई के हिसाब से ढलने का सुझाव देते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर यह टेस्ट करता है कि कैंडिडेट अलग-अलग स्टेटमेंट को देखने के बजाय स्टेटमेंट के बीच के रिश्तों को देख सकते हैं या नहीं। UPSC कैंडिडेट से यह एनालाइज़ करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा कहता है कि सबूत के टुकड़े एक-दूसरे को कैसे सपोर्ट करते हैं, कमज़ोर करते हैं या एक-दूसरे का खंडन करते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"मॉडर्न UPSC सिर्फ़ फैक्ट्स के बारे में नहीं है; यह समझने के बारे में है कि फैक्ट्स एक-दूसरे से कैसे जुड़े हैं।"

34. **उत्तर:** (d) 1, 2 **और** 3

यह सवाल कुषाण और कुशानो-सासानियन समय में भाषा की अलग-अलग तरह की भाषा और स्क्रिप्ट के इस्तेमाल की जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट बातों में एक जैसा होना और अलग-अलग होना देख सकता है।

स्टेटमेंट I सही है। कुशानो-सासानियन सिक्कों पर पहलवी स्क्रिप्ट में मिडिल फ़ारसी लिखावट, सरकारी ढांचे में ईरानी एडमिनिस्ट्रेटिव परंपराओं और पढ़े-लिखे अमीर लोगों की मौजूदगी का इशारा करती है।

स्टेटमेंट II सही है। तेरमेज़ में बौद्ध शिलालेखों में खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपियों का इस्तेमाल यह दिखाता है कि धार्मिक और सांस्कृतिक बातचीत कई भाषाई परंपराओं के ज़रिए हुई।

स्टेटमेंट III एक ऐतिहासिक दावे के तौर पर गलत है। खरोष्ठी और ब्राह्मी का लगातार इस्तेमाल साफ़ दिखाता है कि उन्हें पहलवी ने पूरी तरह से नहीं बदला था।

रिलेशनशिप 1 सही है क्योंकि सिक्कों पर बनी चीज़ें सीधे स्टेटमेंट I को सपोर्ट करती हैं।
रिलेशनशिप 2 सही है क्योंकि स्टेटमेंट III, स्टेटमेंट II के मतलब को गलत साबित करता है, जो लगातार मल्टीस्क्रिप्ट इस्तेमाल को दिखाता है।
रिलेशनशिप 3 सही है क्योंकि स्टेटमेंट I और II मिलकर ईरानी, भारतीय और सेंट्रल एशियाई असर से बने एक मल्टीलिंगुअल और मल्टीस्क्रिप्ट माहौल की ओर इशारा करते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर ने जानबूझकर स्टेटमेंट III में "पूरी तरह से" शब्द डाल दिया है। UPSC अक्सर कुछ हद तक सही ट्रेंड को एब्सोल्यूट बनाकर गलत स्टेटमेंट में बदल देता है।
नई एडमिनिस्ट्रेटिव भाषा के होने से पुरानी भाषाएं और स्क्रिप्ट अपने आप खत्म नहीं हो जातीं।

के. सुशांत सर की ओर से:
"पुराने इतिहास में, कल्चरल बदलाव आमतौर पर धीरे-धीरे होता है, एकदम से नहीं। 'पूरी तरह से', 'पूरी तरह से', और 'सिर्फ़' जैसे शब्दों से सावधान रहें।"

35. **उत्तर:** (d) **केवल** 1, 2 **और** 4

यह सवाल कुषाण-सासानियन काल के आर्किटेक्चरल और कलात्मक विकास के ज्ञान को टेस्ट करता है और यह भी कि सेंट्रल एशिया और उत्तर-पश्चिमी भारत में कल्चरल इंटरैक्शन ने किस हद तक मटेरियल कल्चर को आकार दिया। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट आर्टिस्टिक कंटिन्यूटी और आर्टिस्टिक आइसोलेशन के बीच अंतर कर सकता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। कारा-टेपे, तेरमेज़ के पास एक ज़रूरी बौद्ध मठ था। आर्कियोलॉजिकल खुदाई में गुफाएँ, आंगन, मठ, दीवार पर पेंटिंग, प्लास्टर की सजावट, टेराकोटा और लिखावट मिली हैं। ये बचे हुए हिस्से कुशानो-सासानियन समय के मिले-जुले कल्चरल माहौल को दिखाते हैं।
स्टेटमेंट 2 सही है। यवन में खुदाई से पता चलता है कि एक प्लान्ड शहरी बस्ती थी, जिसकी खासियत सड़कों के किनारे बने आपस में जुड़े हुए घर थे। ऐसे सबूत ऑर्गनाइज़्ड रहने की जगह और शहरी विकास की ओर इशारा करते हैं।
स्टेटमेंट 3 गलत है। कुषाण-सासानियन काल के दौरान बौद्ध कला गांधार परंपराओं से अलग होकर विकसित नहीं हुई। गांधार एक बड़ा कला केंद्र बना रहा, और इसके स्टाइलिस्टिक असर ने पूरे समय बौद्ध मूर्तिकला और आइकॉनोग्राफी को आकार देना जारी रखा।
स्टेटमेंट 4 सही है। उस समय की नॉन-बौद्ध कला लोकल आर्टिस्टिक परंपराओं और सासानी कल्चरल असर के बीच इंटरैक्शन को दिखाती है। यह सिंथेसिस मोटिफ्स, ड्रेस पैटर्न, आइकॉनोग्राफी और डेकोरेटिव स्टाइल में दिखता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
"पूरी तरह से" शब्द का इस्तेमाल किया है। UPSC अक्सर एक एब्सोल्यूट टर्म डालकर, थोड़ी सही बात को भी गलत स्टेटमेंट में बदल देता है।
बौद्ध कला ज़रूर कुषाणो-सासानियन काल में विकसित हुई, लेकिन विकास का मतलब यह नहीं है कि यह पहले की गांधार परंपराओं से पूरी तरह अलग है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"सभ्यताएं शायद ही कभी अकेले कला बनाती हैं। UPSC में, जब भी आप 'पूरी तरह से', 'पूरी तरह से', या 'पूरी तरह से' जैसे शब्द देखें, तो उन्हें ध्यान से वेरिफाई करें।"

36. **उत्तर:** (b) **केवल** 1, 3 **और** 4

यह सवाल कुशानो-सासानियन किंगडम की शुरुआत, अर्थव्यवस्था, धार्मिक निशान और भाषा की अलग-अलग तरह की जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट धार्मिक रिप्रेजेंटेशन और धार्मिक खासियत के बीच फर्क कर सकते हैं।
स्टेटमेंट 1 सही है। कुषाणो-सासानियन तब उभरे जब तीसरी सदी CE में सासानियन साम्राज्य ने बैक्ट्रिया और गांधार में कुषाण इलाकों के कुछ हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया। बाद में इन इलाकों पर कुषाणशाह नाम के शासकों का राज हुआ।
स्टेटमेंट 2 गलत है। सिक्कों पर शिव और नंदी की तस्वीर यह साबित नहीं करती कि पारसी धर्म का असर खत्म हो गया था। उस समय के सिक्कों में ईरानी और भारतीय दोनों तरह के धार्मिक रूप दिखते हैं, जो बदलने के बजाय साथ रहने का संकेत देते हैं।
स्टेटमेंट 3 सही है। सिक्कों पर ब्राह्मी, पहलवी और बैक्ट्रियन कहानियों का दिखना, राज्य के अंदर कई भाषाओं वाले माहौल और कई कल्चरल परंपराओं के साथ होने को दिखाता है।
स्टेटमेंट 4 सही है। तांबे के सिक्कों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल सिर्फ़ एलीट या लंबी दूरी के कमर्शियल लेन-देन के बजाय रोज़ाना के आर्थिक लेन-देन और लोकल मार्केट में हिस्सेदारी दिखाता है।
(ध्यान IAS स्पेशल फ़ीचर – थिंक लाइक एन एग्जामिनर)
एग्जामिनर जानबूझकर **धार्मिक रिप्रेजेंटेशन** और **धार्मिक रिप्लेसमेंट को कन्फ्यूज करते हैं** । UPSC अक्सर कैंडिडेट से यह उम्मीद करता है कि वे यह पहचानें कि शासक अपनी परंपराओं को छोड़े बिना लोकल सिंबल अपना सकते हैं।
के. सुशांत सर से:
"एक शासक अपनी पहचान बनाने के लिए कई निशान दिखा सकता है। सिक्कों पर बनी तस्वीरें अक्सर राजनीतिक तालमेल दिखाती हैं, धार्मिक खासियत नहीं।"

37. **उत्तर:** (d) 1, 2, 3 **और** 4

यह सवाल शुंग वंश के उदय, उसके राजनीतिक ढांचे और उसके इतिहास को फिर से बनाने के लिए मौजूद ऐतिहासिक सोर्स के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** शुंग वंश की स्थापना ने बहुत ज़्यादा सेंट्रलाइज़्ड मौर्य साम्राज्य से ज़्यादा रीजनलाइज़्ड पॉलिटिकल सिस्टम में बदलाव को दिखाया। शुंगों का इलाका और एडमिनिस्ट्रेटिव पहुँच तुलना में सीमित थी।

स्टेटमेंट 2 **सही है।** हालांकि पाटलिपुत्र मुख्य राजधानी बना रहा, लेकिन शुंग काल में विदिशा एक महत्वपूर्ण पॉलिटिकल और स्ट्रेटेजिक सेंटर के तौर पर उभरा।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** हेलियोडोरस पिलर और हाथीगुम्फा शिलालेख, दोनों ही सुंग इतिहास के पहलुओं और उस समय की ताकतों के साथ उनके रिश्तों को फिर से बनाने के लिए कीमती सोर्स हैं।

स्टेटमेंट 4 **सही है।** शुंग वंश का उदय बाद में मौर्य अधिकार के कमज़ोर होने के बाद हुआ। मौर्य सेना के कमांडर पुष्यमित्र शुंग ने आखिरी मौर्य शासक को हटाकर एक नया वंश शुरू किया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर पॉलिटिकल बदलाव, रीजनल सेंटर, हिस्टोरिकल सोर्स और खानदानी बदलाव को एक ही सवाल में मिला देता है। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट किसी हिस्टोरिकल पीरियड को अलग-अलग पढ़ने के बजाय उसके कई पहलुओं को जोड़ सकते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"किसी साम्राज्य का पतन शायद ही कभी एक घटना होती है; यह आमतौर पर लंबे समय तक राजनीतिक कमज़ोरी का नतीजा होता है।"

38. **उत्तर:** (a) **केवल** 1, 2, 4 **और** 5

यह सवाल शुंग राज्य के एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर के ज्ञान और मौर्य संस्थाओं के साथ कंटिन्यूटी की डिग्री को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** शुंगों ने कई मौर्य एडमिनिस्ट्रेटिव फीचर्स बनाए रखे, हालांकि उन्होंने एक छोटे और ज़्यादा रीजनलाइज्ड राज्य पर राज किया।

स्टेटमेंट 2 **सही है।** प्रोविंशियल एडमिनिस्ट्रेशन अक्सर शाही राजकुमारों और रूलिंग फैमिली के सदस्यों को सौंपा जाता था, जिससे दूर के इलाकों पर पॉलिटिकल कंट्रोल बनाए रखने में मदद मिलती थी।

स्टेटमेंट 3 **गलत है।** शुंगों ने मौर्यों से विरासत में मिली ब्यूरोक्रेटिक संस्थाओं को पूरी तरह से नहीं छोड़ा। पॉलिटिकल रीस्ट्रक्चरिंग के बावजूद गवर्नेंस में कंटिन्यूटी बनी रही।

स्टेटमेंट 4 **सही है।** राजा ही सबसे बड़ा अधिकारी बना रहा, और पुष्यमित्र के मिलिट्री बैकग्राउंड ने शासन में सेना की अहम भूमिका में योगदान दिया।

स्टेटमेंट 5 **सही है।** ब्राह्मणवादी सोच ने शुंग राज्य के पॉलिटिकल और कल्चरल नज़रिए पर बहुत असर डाला, खासकर वैदिक रीति-रिवाजों को फिर से शुरू करके।

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

(ध्यान IAS **स्पेशल फ़ीचर – थिंक लाइक एन एग्जामिनर)**

"पूरी तरह से" शब्द डालता है। UPSC अक्सर एक्सट्रीम फॉर्मूलेशन पेश करके कंटिन्यूटी बनाम डिसकंटिन्यूटी को टेस्ट करता है।

के. सुशांत सर से:

"ज़्यादातर राजवंशों को अपने पहले के राजवंशों से संस्थाएँ विरासत में मिलती हैं। राजनीतिक बदलाव का मतलब शायद ही कभी रातों-रात एडमिनिस्ट्रेटिव बदलाव होता है।"

39. **उत्तर:** (b) **केवल** 1 **और** 3

यह सवाल शुंग काल के दौरान धार्मिक और सांस्कृतिक विकास की समझ और ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान और बौद्ध धर्म के बीच संबंध को टेस्ट करता है।

कथन 1 **सही है।** शुंग काल में ब्राह्मणवादी परंपराओं का पुनरुत्थान हुआ, जिसमें अश्वमेध जैसे वैदिक बलिदान शामिल थे, खासकर पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में।

स्टेटमेंट 2 **गलत है।** शुंग काल में बौद्ध धर्म खत्म नहीं हुआ था। भरहुत और सांची जैसे ज़रूरी बौद्ध सेंटर फलते-फूलते रहे, और इस दौरान बौद्ध आर्किटेक्चरल एक्टिविटी भी काफी हुई।

कथन 3 **सही है।** शुंग काल का सांस्कृतिक परिदृश्य ब्राह्मणवादी और बौद्ध परंपराओं के बीच सह-अस्तित्व और बातचीत को दर्शाता है, न कि एक का दूसरे पर पूर्ण प्रभुत्व।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

"पूरी तरह से" शब्द का इस्तेमाल किया है। UPSC अक्सर बहुत ज़्यादा जनरलाइज़ेशन के ज़रिए बारीक ऐतिहासिक बहसों को गलत बयानों में बदल देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"एक परंपरा के फिर से शुरू होने का मतलब यह नहीं है कि दूसरी परंपरा भी खत्म हो जाएगी।"

40. **उत्तर:** (b) **केवल** 2

यह सवाल शुंग कला, आर्किटेक्चर, शिलालेख और मौर्य काल के बाद कला के विकास के ज्ञान को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** भरहुत और सांची में स्तूपों के विस्तार में बड़े पत्थर की रेलिंग और जातक कहानियों और दूसरे बौद्ध थीम को दिखाने वाली नैरेटिव रिलीफ का निर्माण शामिल था।

स्टेटमेंट 2 **गलत है।** शुंग काल मौर्य कला की परंपराओं का पूरी तरह से जारी रहना नहीं दिखाता था। नए स्टाइल में बदलाव हुए, खासकर कहानी वाली मूर्तियों, सजावटी डिज़ाइन और आर्किटेक्चरल सजावट में।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** टेराकोटा आर्ट सुंग काल में खूब फली-फूली और इससे धार्मिक विश्वासों, सामाजिक जीवन, पहनावे और रोज़ाना के कामों के बारे में कीमती जानकारी मिलती है।

स्टेटमेंट 4 **सही है।** ब्राह्मी लिपि लगातार विकसित होती रही और पहले के रूपों की तुलना में ज़्यादा विकसित और एंगुलर हो गई। इसका इस्तेमाल शिलालेखों के लिए बड़े पैमाने पर होता रहा।

क्योंकि सवाल में **गलत स्टेटमेंट पूछा गया है** , इसलिए सिर्फ़ स्टेटमेंट 2 गलत है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर यह टेस्ट करता है कि कैंडिडेट **कंटिन्यूटी** और **इनोवेशन के बीच का अंतर समझते हैं या** नहीं। शुंगों को मौर्य परंपराएं विरासत में मिलीं, लेकिन उन्होंने ज़रूरी आर्टिस्टिक डेवलपमेंट भी किए जिन्होंने बाद की इंडियन आर्ट को आकार दिया।

के. सुशांत सर की ओर से:

"हिस्टोरिकल कंटिन्यूटी का मतलब हिस्टोरिकल ठहराव नहीं है। UPSC अक्सर 'कंटिन्यूएशन' और 'कम्प्लीट कंटिन्यूएशन' के बीच के अंतर में सही जवाब छिपा देता है।"

41. **उत्तर:** (b) **केवल** 2, 3 **और** 4

यह सवाल शुंग राजव्यवस्था की आर्थिक बुनियाद, मौर्य काल के बाद व्यापार की निरंतरता, और मौर्य काल के बाद के भारत में आर्थिक विकेंद्रीकरण की सीमा के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **गलत है।** मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद ट्रेड नेटवर्क पूरी तरह से बाधित नहीं हुए थे। हालांकि राजनीतिक विभाजन हुआ, फिर भी उत्तरी और मध्य भारत में स्थापित ट्रेड रूट और शहरी केंद्रों के माध्यम से कमर्शियल गतिविधियां जारी रहीं।

स्टेटमेंट 2 **सही है।** खेती शुंग इकॉनमी की रीढ़ बनी रही। गंगा के उपजाऊ मैदानों ने खेती के प्रोडक्शन को सपोर्ट किया, जबकि लैंड रेवेन्यू राज्य की इनकम का एक ज़रूरी सोर्स था।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** रीजनल सिक्कों का सर्कुलेशन और लोकल मिंटिंग अथॉरिटीज़, ज़्यादा सेंट्रलाइज़्ड मौर्य सिस्टम की तुलना में कुछ हद तक इकोनॉमिक डीसेंट्रलाइज़ेशन दिखाते हैं।

स्टेटमेंट 4 **सही है।** मथुरा, साकेत और विदिशा जैसे शहरी सेंटर ज़रूरी कमर्शियल हब के तौर पर उभरे, जिनसे ट्रेड, क्राफ्ट प्रोडक्शन और रीजनल एक्सचेंज को बढ़ावा मिला।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

"पूरी तरह से" शब्द डाला है। यूपीएससी अक्सर यह परीक्षण करता है कि क्या अभ्यर्थी राजनीतिक विखंडन को आर्थिक पतन समझ लेते हैं। मौर्य साम्राज्य खत्म हो गया, लेकिन व्यापारी, बाज़ार और व्यापार के रास्ते क्षेत्रीय ताकतों के तहत काम करते रहे और बदलते रहे।

के. सुशांत सर की ओर से:

"पॉलिटिकल गिरावट एडमिनिस्ट्रेशन को कमज़ोर कर सकती है, लेकिन यह अपने आप इकोनॉमिक नेटवर्क को खत्म नहीं करती है। पॉलिटिकल फ्रैगमेंटेशन और इकोनॉमिक डिसरप्शन के बीच फ़र्क करें।"

42. **उत्तर:** (b) **केवल** 1, 2, 3 **और** 5

यह सवाल ज़रूरी शुंग शासकों, उनके योगदान और उनसे जुड़े ऐतिहासिक सोर्स के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। इसमें यह भी देखा जाता है कि क्या कैंडिडेट वंश के आखिरी शासक की सही पहचान कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** पुष्यमित्र शुंग को अश्वमेध यज्ञ करने का क्रेडिट दिया जाता है और ट्रेडिशनली उन्हें नॉर्थ-वेस्टर्न इंडिया में इंडो-ग्रीक एडवांसमेंट के खिलाफ रेजिस्टेंस से जोड़ा जाता है।

स्टेटमेंट 2 **सही है।** अग्निमित्र को मुख्य रूप से कालिदास के *मालविकाग्निमित्रम के ज़रिए जाना जाता है* । शासक बनने से पहले, उन्होंने विदिशा पर शासन किया, जो एक महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र के रूप में कार्य करता था।

कथन 3 **सही है।** भगभद्र का संबंध हेलियोडोरस स्तंभ शिलालेख से है, जिसमें इंडो-ग्रीक शासक एंटियाल्किडस के राजदूत हेलियोडोरस की यात्रा का उल्लेख है।

स्टेटमेंट 4 **गलत है।** वसुमित्र शुंग वंश का आखिरी शासक नहीं था और उसकी मौत से उसका अंत नहीं हुआ।

स्टेटमेंट 5 **सही है।** देवभूति आखिरी शुंग शासक थे। वासुदेव कण्व ने उनकी हत्या कर दी, जिससे कण्व वंश की स्थापना हुई।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर राजवंशों के समय की जांच करने के लिए **वसुमित्र** और **देवभूति को** एक साथ रखता है। UPSC अक्सर ऐसे सवाल पूछता है जहां बड़े शासकों और आखिरी शासक के बीच कन्फ्यूजन की वजह से गलत जवाब मिलते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"किसी राजवंश के बारे में पढ़ते समय, हमेशा संस्थापक, सबसे प्रमुख शासक और अंतिम शासक को याद रखें। ये UPSC के पसंदीदा हैं।"

43. **उत्तर:** (b) **केवल** 2 **और** 4
यह सवाल शुंग वंश के विदेशी रिश्तों और इंडो-ग्रीक ताकतों के साथ उसके रिश्ते के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 **सही है।** ऐतिहासिक परंपराएं सुंगों को डेमेट्रियस और मेनांडर जैसे शासकों के तहत इंडो-ग्रीक हमलों के खिलाफ मिलिट्री विरोध से जोड़ती हैं।
स्टेटमेंट 2 **गलत है।** सुंग और इंडो-ग्रीक के बीच रिश्ते एक जैसे शांतिपूर्ण नहीं थे। सबूत बताते हैं कि मिलिट्री लड़ाई और डिप्लोमैटिक लड़ाई दोनों थे।
कथन 3 **सही है।** हेलियोडोरस स्तंभ शिलालेख सुंग शासक भगभद्र और इंडो-ग्रीक राजा एंटियाल्किडस के बीच राजनयिक संबंधों का सबूत देता है।
स्टेटमेंट 4 **गलत है।** सुंगों ने अपने पूरे राज में सभी सीमावर्ती इलाकों पर पूरा कंट्रोल नहीं रखा। सीमावर्ती इलाकों में पॉलिटिकल अथॉरिटी पर विवाद होता रहा और वह बदलती रही।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर मिलिट्री लड़ाई और डिप्लोमैटिक बातचीत के बीच का अंतर बताते हैं। UPSC अक्सर कैंडिडेट से यह उम्मीद करता है कि वे यह समझें कि पुराने राज्य एक ही समय में युद्ध लड़ सकते थे और डिप्लोमैटिक रिश्ते भी बनाए रख सकते थे।
के. सुशांत सर की ओर से:
"इतिहास में युद्ध और डिप्लोमेसी के बीच चुनाव करना बहुत मुश्किल होता है। ताकतवर देश अक्सर एक ही समय में दोनों का इस्तेमाल करते हैं।"

44. **उत्तर:** (c) **केवल** 1, 2, 4 **और** 5
यह सवाल शुंग वंश के पतन और वंश के पतन के लिए ज़िम्मेदार कई वजहों की समझ को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 **सही है।** शुरुआती शुंग शासकों के बाद कमज़ोर उत्तराधिकारियों ने असरदार सेंट्रल अथॉरिटी बनाए रखने के लिए संघर्ष किया, जिससे पॉलिटिकल गिरावट आई।
स्टेटमेंट 2 **सही है।** प्रोविंशियल गवर्नर और लोकल शासकों ने तेज़ी से ऑटोनॉमी पर ज़ोर दिया, जिससे पॉलिटिकल पावर का बंटवारा हुआ।
स्टेटमेंट 3 **गलत है।** शुंग वंश एक बड़े विदेशी हमले की वजह से खत्म नहीं हुआ। इसका पतन अंदरूनी कमज़ोरियों और बाहरी दबावों के मिले-जुले असर से हुआ।
स्टेटमेंट 4 **सही है।** लगातार बाहरी झगड़ों और अंदरूनी अस्थिरता ने राजवंश को कमज़ोर करने में काफ़ी योगदान दिया।
स्टेटमेंट 5 **सही है।** वासुदेव कण्व द्वारा देवभूति की हत्या ने शुंग वंश के औपचारिक अंत और कण्व शासन की शुरुआत को चिह्नित किया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
परीक्षक ने जानबूझकर कथन 3 में **एकल-कारण स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है** । UPSC आम तौर पर राज्यों और साम्राज्यों के पतन के लिए बहु-कारण स्पष्टीकरण को प्राथमिकता देता है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"ज़्यादातर राजघराने किसी एक घटना की वजह से खत्म नहीं होते। वे तब खत्म होते हैं जब समय के साथ कई कमज़ोरियां जमा हो जाती हैं।"

45. **उत्तर:** (b) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल ब्राह्मणवादी पुनरुत्थान, बौद्ध सबूत और इंडो-ग्रीक-शुंग संबंधों की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट साहित्यिक दावों और आर्कियोलॉजिकल सबूतों के बीच अंतर कर सकता है।
स्टेटमेंट I **सही है।** पुष्यमित्र शुंग का अश्वमेध यज्ञ करना, मौर्य काल के बाद ब्राह्मणवादी राजनीतिक परंपराओं के फिर से शुरू होने का सबूत माना जाता है।
स्टेटमेंट II **गलत है।** *दिव्यावदान* जैसे लिटरेरी सोर्स में बौद्ध धर्म के लोगों पर ज़ुल्म के बारे में बताया गया है, लेकिन वे पक्के आर्कियोलॉजिकल सबूत नहीं हैं। भरहुत, सांची और दूसरी बौद्ध जगहों से मिले आर्कियोलॉजिकल सबूत बताते हैं कि शुंग काल में बौद्ध धर्म की गतिविधियां और उन्हें बढ़ावा मिलता रहा।
स्टेटमेंट III **सही है।** हेलियोडोरस पिलर शिलालेख भगभद्र के शासनकाल के दौरान सुंगों और इंडो-यूनानियों के बीच डिप्लोमैटिक और कल्चरल बातचीत को दिखाता है।
रिश्ता 1 **सही है।** बयान I, ब्राह्मणवादी परंपराओं के फिर से उभरने का संकेत देने वाले बड़े टेक्स्ट और शिलालेखों के सबूतों से मेल खाता है।
रिश्ता 2 **सही है।** बयान II, बौद्ध जगहों से मिले आर्कियोलॉजिकल सबूतों से अलग है, जो शुंग काल में भी फलते-फूलते रहे।
रिश्ता 3 **गलत है।** डिप्लोमैटिक बातचीत का मतलब यह नहीं है कि इंडो-ग्रीक-शुंग झगड़े पूरी तरह खत्म हो गए हैं या कोई हमेशा के लिए शांतिपूर्ण बॉर्डर बन गया है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जानबूझकर **लिटरेरी सबूतों की तुलना आर्कियोलॉजिकल सबूतों** से करता है । UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट अलग-अलग कैटेगरी के हिस्टोरिकल सोर्स की ताकत और कमियों को देख सकते हैं।
एक साहित्यिक कहानी ज़रूरी परंपराओं को बचाकर रख सकती है, लेकिन ऐतिहासिक नतीजों को शिलालेखों, आर्कियोलॉजी और बचे हुए हिस्सों से मिले पक्के सबूतों से सपोर्ट मिलना चाहिए।
के. सुशांत सर की ओर से:
"पुराने इतिहास में, सोर्स सबूत होता है—सबूत नहीं। सबसे मज़बूत ऐतिहासिक नतीजे तब सामने आते हैं जब कई सोर्स एक ही मतलब को सपोर्ट करते हैं।"

46. **उत्तर:** (d) 1, 2 **और** 3
यह सवाल कण्व वंश की शुरुआत, इलाके के फैलाव और ऐतिहासिक महत्व के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। इसमें यह भी देखा जाता है कि क्या कैंडिडेट मौर्य काल के बाद के भारत में सीधे वंश के उत्तराधिकार और राजनीतिक बिखराव के बड़े पैटर्न के बीच फर्क कर सकता है।
स्टेटमेंट I सही है। वासुदेव कण्व ने आखिरी शुंग शासक देवभूति को हटाकर मगध में कण्व वंश की स्थापना की। यह शुंग से कण्व शासन में एक साफ़ वंशीय बदलाव को दिखाता है।
स्टेटमेंट II गलत है। पौराणिक परंपराएं और दूसरे ऐतिहासिक सबूत आम तौर पर कण्वों को उनके पूरे राज में एक स्थिर शाही राजधानी के तौर पर विदिशा के बजाय मगध और पाटलिपुत्र से जोड़ते हैं।
स्टेटमेंट III सही है। कण्वों ने काफी हद तक लेट शुंग साम्राज्य के हिसाब से एक लिमिटेड इलाके पर कंट्रोल किया। उनका राज सातवाहनों (आंध्र) के आने के साथ खत्म हो गया, जो मौर्य काल के बाद के भारत में लगातार पॉलिटिकल बंटवारे को दिखाता है।
रिश्ता 1 सही है। स्टेटमेंट I साफ़ तौर पर शुंग और कण्व के बीच एक सीधा उत्तराधिकार लिंक दिखाता है।
रिश्ता 2 सही है। क्योंकि स्टेटमेंट II ऐतिहासिक रूप से गलत है, इसलिए यह उन बड़े सबूतों का खंडन करता है जो मगध को कण्व राजनीतिक अधिकार के केंद्र में रखते हैं।
रिलेशनशिप 3 सही है। स्टेटमेंट III इस मानी हुई ऐतिहासिक समझ से मेल खाता है कि मौर्य काल के बाद के भारत में एक सबकॉन्टिनेंटल साम्राज्य के बजाय कई रीजनल ताकतें उभरीं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर स्टेटमेंट II का इस्तेमाल यह टेस्ट करने के लिए करता है कि क्या कैंडिडेट **शुंगों के राज में विदिशा की अहमियत को कण्वों** के पॉलिटिकल सेंटर से कन्फ्यूज़ करते हैं। UPSC अक्सर कॉन्सेप्चुअल ट्रैप बनाने के लिए एक असली हिस्टोरिकल सेंटर को एक राजवंश से दूसरे राजवंश में शिफ्ट कर देता है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"जब कोई नया राजवंश किसी पुराने राजवंश की जगह लेता है, तो यह मत मानिए कि सभी राजनीतिक संस्थाएं और राजधानियां अपने आप बदल जाएंगी। हर राजवंश को अलग-अलग वेरिफाई करें।"

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

47. **उत्तर:** (b) **केवल** I, III **और** IV
यह सवाल कण्व वंश के सामाजिक बैकग्राउंड, शासन के समय और ऐतिहासिक विरासत के ज्ञान को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट I सही है। कण्वों को पारंपरिक रूप से ब्राह्मण बताया गया है और बाद की परंपराओं में उन्हें ऋषि सौभरि के वंश से जोड़ा गया है।
स्टेटमेंट II गलत है। कण्व वंश ने लगभग दो सदियों तक नहीं, बल्कि सिर्फ़ कुछ दशकों तक राज किया। इसका राजनीतिक असर तुलनात्मक रूप से कम समय तक रहा।
स्टेटमेंट III सही है। कण्वों की जगह सातवाहनों का आना आम तौर पर एक बड़े सबकॉन्टिनेंटल बदलाव के बजाय एक रीजनल पॉलिटिकल बदलाव के तौर पर देखा जाता है।
स्टेटमेंट IV सही है। कण्वों के पतन के बाद, मगध ने बाद के शाही गठन के उदय से पहले, कौशाम्बी के मित्र शासकों सहित क्षेत्रीय शक्तियों के प्रभाव का अनुभव किया।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर राजवंशों के समय की जानकारी टेस्ट करने के लिए स्टेटमेंट II देता है। UPSC अक्सर कम समय तक चलने वाले राजवंशों के समय को बढ़ा-चढ़ाकर बताता है ताकि यह देखा जा सके कि कैंडिडेट्स को ऐतिहासिक समय की सही समझ है या नहीं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"हमेशा याद रखें कि किसने राज किया, बल्कि यह भी कि उन्होंने कितने समय तक राज किया। समय अक्सर ऐतिहासिक महत्व तय करता है।"

48. **उत्तर:** (a) **केवल** 1
यह सवाल पूर्वी चालुक्यों की शुरुआत और पड़ोसी ताकतों के साथ उनके राजनीतिक रिश्तों के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। विष्णुकुंडिनों की हार के बाद पुलकेशिन II के राज में वेंगी इलाका चालुक्यों के कंट्रोल में आ गया। इसने पूर्वी दक्कन में पूर्वी चालुक्य ब्रांच की नींव रखी।

स्टेटमेंट 2 गलत है। बादामी चालुक्यों के पतन के बाद पूर्वी चालुक्य पूरी तरह से आज़ाद नहीं थे। वे अक्सर राष्ट्रकूटों और दूसरी क्षेत्रीय ताकतों के साथ झगड़ों और राजनीतिक बातचीत में शामिल रहते थे।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर ने एक पक्की बात कहने के लिए **"पूरी तरह से आज़ाद" शब्द का इस्तेमाल किया है** । मध्ययुगीन भारतीय राजनीति की पहचान लगातार आज़ादी के बजाय बदलते गठबंधन, झगड़े और गुलामी के दौर से थी।
के. सुशांत सर की ओर से:
"मध्यकालीन इतिहास में, पूरी तरह से राजनीतिक आज़ादी बहुत कम थी। 'पूरी तरह', 'हमेशा', और 'कभी नहीं' जैसे शब्दों को ध्यान से देखें।"

49. **उत्तर:** (c) **केवल** I **और** III
यह सवाल सातवाहनों के उभरने, उनके शिलालेखों में भाषा के पैटर्न और उनकी अर्थव्यवस्था के नेचर के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट I **सही है।** मौर्य राज के खत्म होने के बाद सातवाहन दक्कन में उभरे, और एक बड़ी रीजनल पावर के तौर पर खुद को बनाने में काफी समय लगा।
स्टेटमेंट II **गलत है।** सातवाहन हर जगह मौर्यों के तुरंत उत्तराधिकारी नहीं थे। मौर्यों के पतन के बाद उत्तर भारत और दक्कन दोनों में कई क्षेत्रीय ताकतें उभरीं।
स्टेटमेंट III **सही है।** ज़्यादातर सातवाहन शिलालेख संस्कृत के बजाय प्राकृत में लिखे गए थे, जो दक्कन में प्रचलित भाषाई परंपराओं को दिखाते हैं।
स्टेटमेंट IV **गलत है।** सातवाहन इकॉनमी सिर्फ़ समुद्री व्यापार पर आधारित नहीं थी। अंदरूनी ट्रेड रूट, खेती, क्राफ़्ट प्रोडक्शन और ज़मीनी कमर्शियल नेटवर्क ने भी बड़ी भूमिका निभाई।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर स्टेटमेंट IV का इस्तेमाल यह टेस्ट करने के लिए करता है कि क्या कैंडिडेट रोमन ट्रेड पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं, जबकि डेक्कन में इनलैंड कमर्शियल नेटवर्क की अहमियत को नज़रअंदाज़ करते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"जब भी कोई बयान कहता है कि कोई इकॉनमी 'मुख्य रूप से' या 'पूरी तरह' एक फैक्टर पर निर्भर है, तो चेक करें कि क्या दूसरे ज़रूरी सेक्टर को नज़रअंदाज़ किया जा रहा है।"

50. **उत्तर:** (d) **केवल** I, II **और** IV
यह सवाल शुरुआती सातवाहन शासकों, विस्तारवादी नीतियों और पश्चिमी भारत में विदेशी ग्रुप्स के साथ बातचीत के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट I **सही है।** सिमुक को आम तौर पर सातवाहन वंश का फाउंडर माना जाता है। वह वंश की परंपरा में आता है और नानेघाट जैसे शिलालेखों से मिले सबूतों से जुड़ा है।
स्टेटमेंट II **सही है। सातकर्णी** I *दक्षिणापथपति* टाइटल से जुड़ा है और इसका ज़िक्र खारवेल के हाथीगुम्फा शिलालेख के संबंध में किया गया है, जो शुरुआती सातवाहनों के बढ़ते राजनीतिक महत्व को दिखाता है।
स्टेटमेंट III **गलत है।** गौतमीपुत्र सातकर्णी सबसे महान सातवाहन शासकों में से एक थे, लेकिन आज के सबूत इस दावे को सपोर्ट नहीं करते कि उन्होंने बिना किसी रुकावट के पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर बिना रुके राज किया।
स्टेटमेंट IV **सही है।** सातवाहन इतिहास में शक, पहलव और यवनों के साथ बार-बार बातचीत और संघर्ष दिखता है, जैसा कि शिलालेखों और साहित्यिक परंपराओं से पता चलता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर स्टेटमेंट III में बढ़ा-चढ़ाकर शाही दावे डालता है। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट ऐतिहासिक उपलब्धियों और यूनिवर्सल जीत के अवास्तविक विवरणों के बीच अंतर कर सकते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"कोई शासक पूरे सबकॉन्टिनेंट पर राज किए बिना भी महान हो सकता है। हिस्टोरिकल महत्व को इलाके की बढ़ा-चढ़ाकर बताने से कन्फ्यूज़ नहीं होना चाहिए।"

51. **उत्तर:** (c) 1 **और** 2 **दोनों**
यह सवाल दक्षिण भारत में पल्लव वंश के पतन और चोल शक्ति के उदय के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 **सही है।** चोल, पांड्य, पश्चिमी गंगा और राष्ट्रकूट समेत कई क्षेत्रीय ताकतों के साथ बार-बार होने वाले झगड़ों की वजह से पल्लवों का अधिकार कमज़ोर हो गया। इन झगड़ों ने धीरे-धीरे पल्लवों के राजनीतिक दबदबे को कमज़ोर कर दिया।
स्टेटमेंट 2 **सही है।** पल्लव वंश असल में तब खत्म हो गया जब चोल शासक आदित्य I ने अपराजितवर्मन को हराया और कांची को बढ़ते हुए चोल साम्राज्य में शामिल कर लिया।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर लंबे समय तक चलने वाले पतन के प्रोसेस को एक अहम राजनीतिक घटना से जोड़ता है। UPSC अक्सर कैंडिडेट्स से उम्मीद करता है कि वे उन वजहों के बीच फर्क करें जो किसी वंश को कमजोर करती हैं और उस घटना के बीच जो उसे औपचारिक रूप से खत्म कर देती है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"ज़्यादातर राजवंश धीरे-धीरे खत्म होते हैं लेकिन अचानक खत्म हो जाते हैं। हमेशा खत्म होने के कारणों को खत्म होने की घटना से अलग रखें।"

52. **उत्तर:** (b) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल सातवाहन राज्य के एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर, लोकल एडमिनिस्ट्रेशन के काम करने के तरीके और पॉलिटिकल सिस्टम में सामंती तत्वों के इंटीग्रेशन के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट I **सही है। सातवाहन एडमिनिस्ट्रेशन काफ़ी हद तक डीसेंट्रलाइज़्ड था। राज्य को** *आहार* और *राष्ट्र* जैसी क्षेत्रीय यूनिट्स में बांटा गया था , जिन्हें अमात्य, महामात्र और महाराष्ट्रिक जैसे अधिकारी चलाते थे।
स्टेटमेंट II **सही है।** लोकल लेवल पर, ग्रामिका या गौल्मिका एक ज़रूरी एडमिनिस्ट्रेटिव अथॉरिटी के तौर पर काम करते थे। लिटरेरी और इंस्क्रिप्शनल रेफरेंस से पता चलता है कि ऐसे अधिकारी सिविल और लिमिटेड मिलिट्री, दोनों तरह की ज़िम्मेदारियाँ निभाते थे, जिससे लोकल ऑर्डर बनाए रखने में मदद मिलती थी।
स्टेटमेंट III **सही है।** सातवाहन पॉलिटिकल स्ट्रक्चर में राजा, महाभोज और सेनापति समेत अलग-अलग कैटेगरी के अंडरग्राउंड सरदार और सामंत शामिल थे। यह एक जैसे सेंट्रलाइज़्ड एडमिनिस्ट्रेशन के बजाय पॉलिटिकल इंटीग्रेशन के लेयर्ड सिस्टम को दिखाता है।
रिलेशनशिप 1 **सही है।** स्टेटमेंट II एडमिनिस्ट्रेटिव हायरार्की में लोकल अधिकारियों की भूमिका दिखाकर दिखाता है कि डीसेंट्रलाइज़ेशन असल में कैसे काम करता था।
रिलेशनशिप 2 **सही है।** स्टेटमेंट III, स्टेटमेंट I में बताए गए फ्रेमवर्क को बढ़ाता है, जिसमें लोकल और रीजनल अथॉरिटीज़ को सेंट्रल स्टेट से जोड़ने वाली फ़्यूडेटरी लेयर को शामिल किया गया है।
रिश्ता 3 **गलत है।** स्टेटमेंट I सामंती या सबऑर्डिनेट पॉलिटिकल अरेंजमेंट को मना नहीं करता है। बल्कि, यह ऐसे स्ट्रक्चर के होने के साथ कम्पैटिबल है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर एडमिनिस्ट्रेटिव डीसेंट्रलाइज़ेशन और फ़्यूडेटरी ऑर्गनाइज़ेशन के बीच झूठा विरोध पैदा करने की कोशिश करता है। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट गलती से यह मान लेते हैं कि फ़्यूडेटरी होने से एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर अपने आप खत्म हो जाते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"डीसेंट्रलाइज़ेशन और फ्यूडल इंटीग्रेशन एक-दूसरे के उलट नहीं हैं। पुराने भारत में, दोनों अक्सर एक ही पॉलिटिकल सिस्टम में एक साथ काम करते थे।"

53. **उत्तर: (सी) ए-**3, **बी-**2, **सी-**1, **डी-**4
यह सवाल ज़रूरी सातवाहन ट्रेड सेंटर्स और देश के अंदर और समुद्री कॉमर्स में उनके रोल के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
A. **प्रतिष्ठान – 3. दक्कन में प्रमुख सातवाहन व्यापार केंद्र**
प्रतिष्ठान (आज का पैठण) सातवाहनों के मुख्य पॉलिटिकल और कमर्शियल सेंटर में से एक था और अंदरूनी ट्रेड रूट से करीब से जुड़ा हुआ था।
बी. तगर – 2. सातवाहनों का महत्वपूर्ण अंतर्देशीय व्यापार केंद्र
तगारा (आजकल टेर) एक बड़ा अंदरूनी एम्पोरियम था जो बड़े ट्रेड नेटवर्क के ज़रिए पश्चिमी तटीय बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था।
सी. सोपारा – 1. विदेशी खातों में वर्णित पश्चिमी तटीय बंदरगाह
सोपारा एक महत्वपूर्ण पश्चिमी तटीय बंदरगाह के रूप में उभरा और विदेशी व्यापार से जुड़े खातों में इसका ज़िक्र मिलता है।
D. **भरूच – 4. महत्वपूर्ण आयात-निर्यात व्यापारिक चौकी**
भरूच (बैरीगाज़ा) भारत को भूमध्यसागरीय दुनिया से जोड़ने वाले सबसे महत्वपूर्ण इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट सेंटर में से एक था।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर अंदरूनी कमर्शियल सेंटर्स को कोस्टल पोर्ट्स के साथ मिलाता है। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट्स अंदरूनी इलाकों में मौजूद प्रोडक्शन और डिस्ट्रीब्यूशन सेंटर्स और इंटरनेशनल ट्रेड से जुड़े समुद्री गेटवेज़ के बीच फर्क कर सकते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"ट्रेड हिस्ट्री में, हमेशा यह पहचानें कि कोई जगह प्रोडक्शन सेंटर, इनलैंड मार्केट, एडमिनिस्ट्रेटिव कैपिटल या पोर्ट थी। UPSC अक्सर इसी फर्क के आस-पास सवाल बनाता है।"

54. **उत्तर:** (b) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल सातवाहन आर्थिक जीवन, व्यापार नेटवर्क, विदेशी कमर्शियल संपर्कों और सातवाहन सिक्कों के नेचर की समझ को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट I **सही है।** सातवाहन इकॉनमी में मर्चेंट गिल्ड्स की ग्रोथ, इनलैंड और समुद्री व्यापार का विस्तार, और प्रतिष्ठान और तगर जैसे कमर्शियल सेंटर्स का उदय हुआ।
स्टेटमेंट II **सही है।** *पेरिप्लस ऑफ़ द एरिथ्रियन सी* जैसे विदेशी सोर्स और टॉलेमी की लिखी बातें लंबी दूरी के व्यापार में, खासकर रोमन दुनिया के साथ, डेक्कन पोर्ट्स की अहमियत बताती हैं।
स्टेटमेंट III **गलत है।** सातवाहन सिक्के मुख्य रूप से सुंदर दिखने के लिए नहीं थे, और न ही वे ज़्यादातर सोने में जारी किए गए थे। सातवाहन सिक्के ज़्यादातर लेड, कॉपर और पोटिन से बनाए जाते थे और रीजनल और लंबी दूरी के ट्रेड नेटवर्क में प्रैक्टिकल कमर्शियल कामों के लिए इस्तेमाल होते थे।

रिलेशनशिप 1 सही है। स्टेटमेंट II, स्टेटमेंट I को सपोर्ट करता है क्योंकि दोनों ही बड़े और आपस में जुड़े हुए ट्रेड सिस्टम के होने को दिखाते हैं।
रिलेशनशिप 2 सही है। स्टेटमेंट III सातवाहन सिक्कों की बनावट और आर्थिक भूमिका को गलत तरीके से दिखाता है, जिससे स्टेटमेंट I में दिखाई गई बड़ी आर्थिक तस्वीर का उल्टा होता है।
रिलेशनशिप 3 गलत है। स्टेटमेंट II यह नहीं बताता कि ट्रेड सिर्फ़ कोस्टल एरिया तक ही सीमित था। इसके बजाय, यह इनलैंड कमर्शियल एक्टिविटी के सबूत को पूरा करता है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर स्टेटमेंट III का इस्तेमाल यह टेस्ट करने के लिए करता है कि क्या कैंडिडेट कुषाणों की सोने के सिक्कों की परंपरा को सातवाहनों पर प्रोजेक्ट करते हैं। UPSC अक्सर चेक करता है कि क्या स्टूडेंट अलग-अलग राजवंशों की आर्थिक खासियतों को लेकर कन्फ्यूज होते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"कभी भी एक वंश की खासियतें दूसरे वंश पर न डालें। एक जैसे समय में बहुत अलग-अलग आर्थिक सिस्टम बन सकते हैं।"

55. **उत्तर:** (b) **केवल 1 और 2**
यह सवाल सातवाहन कला की उपलब्धियों, बौद्ध आर्किटेक्चर और उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच सांस्कृतिक मेलजोल के ज्ञान को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट I सही है। सातवाहन कला देसी दक्कन परंपराओं और उत्तरी भारत के बड़े बौद्ध कला के असर का मिला-जुला रूप दिखाती है। इसने सबकॉन्टिनेंट के अलग-अलग इलाकों के कल्चरल इंटीग्रेशन में मदद की।
स्टेटमेंट II सही है। अमरावती स्कूल जातक कहानियों और बौद्ध थीम को दिखाने वाली अपनी बड़ी-बड़ी कहानी वाली नक्काशी के लिए मशहूर है। बाद की परंपराओं की तुलना में, बुद्ध की पूरी तरह से बनी हुई इंसानों जैसी तस्वीरों के बजाय सिंबॉलिक और कहानी वाले रिप्रेजेंटेशन पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया था।
स्टेटमेंट III सही है। पश्चिमी भारत में चट्टानों को काटकर बनाए गए चैत्य और विहारों के विकास में सातवाहन संरक्षण ने अहम भूमिका निभाई। ये स्मारक टिकाऊ पत्थर के निर्माण का इस्तेमाल करके पहले की बौद्ध वास्तुकला परंपराओं को जारी रखने और बढ़ाने को दिखाते हैं।
रिलेशनशिप 1 सही है। स्टेटमेंट II, स्टेटमेंट I में बताए गए कल्चरल सिंथेसिस से उभरी कलात्मक खासियतों को दिखाता है।
रिलेशनशिप 2 सही है। स्टेटमेंट III आर्टिस्टिक एक्सप्रेशन से आर्किटेक्चरल डेवलपमेंट तक चर्चा को बढ़ाता है, जिससे स्टेटमेंट I में बनाए गए कल्चरल फ्रेमवर्क को बढ़ाया जाता है।
रिलेशनशिप 3 गलत है। स्टेटमेंट I कंटिन्यूटी को मना नहीं करता है। असल में, यह साफ़ तौर पर इंटरेक्शन और सिंथेसिस का मतलब बताता है, जो आर्किटेक्चरल कंटिन्यूटी के साथ पूरी तरह से कम्पैटिबल हैं।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर **सिंथेसिस** और **कंटिन्यूटी को ऐसे दिखाकर एक जाल बिछाता है** जैसे वे एक-दूसरे से अलग कॉन्सेप्ट हों। UPSC अक्सर कैंडिडेट से यह उम्मीद करता है कि इनोवेशन अक्सर मौजूदा परंपराओं को अपनाने से डेवलप होता है, न कि उन्हें पूरी तरह से रिजेक्ट करने से।
के. सुशांत सर की ओर से:
"आर्ट हिस्ट्री में, बदलाव का मतलब शायद ही कभी रिप्लेसमेंट होता है। ज़्यादातर आर्टिस्टिक ट्रेडिशन कंटिन्यूटी, अडैप्टेशन और सिंथेसिस से डेवलप होते हैं।"

56. **उत्तर:** (d) **केवल 1**
यह सवाल सातवाहन काल के धार्मिक नज़रिए, सामाजिक ढांचे और सामाजिक-आर्थिक विकास के ज्ञान को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट अलग-अलग सामाजिक रीति-रिवाजों और समाज के पूरे चरित्र के बीच फ़र्क कर सकता है।
स्टेटमेंट I सही है। सातवाहन शासक ब्राह्मण थे जो अश्वमेध और वाजपेय जैसे वैदिक यज्ञ करते थे। साथ ही, उन्होंने वैष्णव और बौद्ध धर्म समेत कई धार्मिक परंपराओं को बढ़ावा दिया। शिलालेखों में ब्राह्मण परंपराओं के साथ-साथ बौद्ध संस्थानों को ग्रांट देने का भी ज़िक्र है।
स्टेटमेंट II सही है। व्यापार, शहरीकरण और कमर्शियल नेटवर्क के बढ़ने से व्यापारियों और कारीगरों का महत्व बढ़ा। शिलालेखों में अक्सर व्यापारियों की पहचान उनके मूल स्थान से की जाती है, जो शहरी और कमर्शियल पहचान के बढ़ते महत्व को दिखाता है।
स्टेटमेंट III गलत है। हालांकि सातवाहन शिलालेखों में कभी-कभी गौतमीपुत्र और वशिष्ठीपुत्र जैसे नामों से माँ के वंश पर ज़ोर दिया गया है, लेकिन इससे पूरी दुनिया में माँ के वंश का समाज नहीं बनता। सातवाहन समाज ज़्यादातर पितृसत्तात्मक रहा, और सभी सामाजिक ग्रुप में विरासत का पता आमतौर पर औरतों के वंश से नहीं चलता था।
रिश्ता 1 सही है। स्टेटमेंट II, स्टेटमेंट I को पूरा करता है, जिसमें उस सोशियो-इकोनॉमिक माहौल के बारे में बताया गया है जिसमें धार्मिक संरक्षण, व्यापार और शहरी विकास हुआ।
रिश्ता 2 गलत है। स्टेटमेंट I में दिए गए सबूत, पूरी तरह से मातृवंशीय समाज के अनुमान को सही नहीं ठहराते हैं।
रिश्ता 3 गलत है। स्टेटमेंट III सीधे तौर पर स्टेटमेंट I का विरोध नहीं करता है; बल्कि, यह सीमित सबूतों की बढ़ा-चढ़ाकर और बिना सबूत वाली व्याख्या दिखाता है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर, कैंडिडेट्स को मैट्रिलिनियल सोशल ऑर्डर मानने के लिए लुभाने के लिए **गौतमीपुत्र** और **वशिष्ठीपुत्र जैसे मशहूर टाइटल का इस्तेमाल करते हैं।** UPSC **अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या स्टूडेंट्स नाम रखने के तरीकों और विरासत के असली सिस्टम के बीच फर्क कर सकते हैं।**
के. सुशांत सर की ओर से:

"किसी शाही टाइटल में माँ का नाम होने से यह अपने आप साबित नहीं होता कि समाज में माँ का वंश चलता है। हमेशा सिंबॉलिक पहचान को सोशल स्ट्रक्चर से अलग रखें।"

57. **उत्तर:** (d) 1, 2 **और** 3

यह सवाल सातवाहन साम्राज्य के पतन और एडमिनिस्ट्रेटिव, टेरिटोरियल और पॉलिटिकल फैक्टर्स के बीच आपसी तालमेल की समझ को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट I **सही है।** यज्ञ सातकर्णी के बाद, साम्राज्य में कमज़ोर शासक आए, जिन्होंने असरदार कंट्रोल बनाए रखने के लिए संघर्ष किया, जिससे एडमिनिस्ट्रेटिव गिरावट आई और सेंट्रल अथॉरिटी कम हो गई।

स्टेटमेंट II **सही है।** साम्राज्य के बड़े आकार ने ताकतवर सामंतों और इलाके के अमीर लोगों को उभरने के लिए बढ़ावा दिया। समय के साथ, इससे सेंट्रल कंट्रोल कमज़ोर हुआ और पॉलिटिकल बिखराव तेज़ हो गया।

स्टेटमेंट III **गलत है।** सातवाहनों के पतन से पूरी तरह से पॉलिटिकल वैक्यूम नहीं बना। दक्कन के अलग-अलग हिस्सों में कई बाद के राज्य बने, जिनमें इक्ष्वाकुस, आभीर, चुटू और दूसरे शामिल थे।

रिलेशनशिप 1 **सही है।** स्टेटमेंट II, स्टेटमेंट I में बताई गई एडमिनिस्ट्रेटिव कमज़ोरियों के लिए एक स्ट्रक्चरल एक्सप्लेनेशन देता है।

रिलेशनशिप 2 **सही है।** स्टेटमेंट III बड़े ऐतिहासिक पैटर्न को गलत साबित करता है क्योंकि पॉलिटिकल फ्रैगमेंटेशन से आम तौर पर पॉलिटिकल अथॉरिटी की गैर-मौजूदगी के बजाय बाद के देश बनते हैं।

रिलेशनशिप 3 **सही है।** स्टेटमेंट I और II मिलकर लीडरशिप की कमज़ोरियों और स्ट्रक्चरल दबावों के ज़रिए एम्पायर के पतन को समझाते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर **"पूरी तरह से पॉलिटिकल खालीपन" वाली बात को** एक जाल की तरह इस्तेमाल करते हैं। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट समझते हैं कि एक साम्राज्य के खत्म होने से अक्सर पॉलिटिकल खालीपन के बजाय रीजनल ताकतों के लिए मौके बनते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"इतिहास में, सत्ता शायद ही कभी गायब होती है—यह हाथ बदलती है। जब साम्राज्यों का पतन होता है, तो आमतौर पर उत्तराधिकारी राज्य उभरते हैं।"

58. **उत्तर:** (d) 1, 2 **और** 3

यह सवाल गुप्त युग की पॉलिटिकल, इकोनॉमिक और एडमिनिस्ट्रेटिव बातों की जानकारी को टेस्ट करता है और यह देखता है कि क्या कैंडिडेट बढ़ते हुए डीसेंट्रलाइज़ेशन के साथ खुशहाली को मिला सकते हैं।

स्टेटमेंट I **सही है।** गुप्त युग को अक्सर साहित्य, विज्ञान, गणित, कला और राजनीतिक स्थिरता में शानदार उपलब्धियों के कारण गोल्डन एज कहा जाता है। साथ ही, मौर्य मॉडल की तुलना में साम्राज्य काफ़ी हद तक डीसेंट्रलाइज़्ड एडमिनिस्ट्रेटिव फ्रेमवर्क के ज़रिए काम करता था।

स्टेटमेंट II **सही है।** गुप्तों ने ब्राह्मणों और धार्मिक संस्थाओं को ज़मीन देने का चलन बढ़ाया। इन ग्रांट से खेती-बाड़ी बढ़ी, लेकिन बिचौलिए के अधिकार और सामंती सोच भी बढ़ी।

स्टेटमेंट III **गलत है।** गुप्त साम्राज्य ने प्रोविंशियल एडमिनिस्ट्रेशन पर पूरा कंट्रोल रखने वाली पूरी तरह से सेंट्रलाइज़्ड ब्यूरोक्रेसी नहीं रखी थी। लोकल एलीट, सामंत और ग्रांटी अलग-अलग लेवल की ऑटोनॉमी का इस्तेमाल करते थे।

रिलेशनशिप 1 **सही है।** स्टेटमेंट II, स्टेटमेंट I से जुड़ी खुशहाली को सपोर्ट करने वाले कुछ सोशियो-इकोनॉमिक बेसिस को समझाने में मदद करता है।

रिश्ता 2 **सही है।** स्टेटमेंट III, स्टेटमेंट I और II में दिखाई गई डीसेंट्रलाइज़्ड प्रवृत्तियों का सीधे तौर पर खंडन करता है।

रिलेशनशिप 3 **सही है।** स्टेटमेंट I और II मिलकर गुप्ता की उपलब्धियों के साथ-साथ ज़रूरी सोशियो-इकोनॉमिक बदलावों की एक सही तस्वीर दिखाते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जान-बूझकर **गोल्डन एज की खुशहाली की तुलना एडमिनिस्ट्रेटिव डीसेंट्रलाइज़ेशन** से करते हैं । UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट यह गलत मानते हैं कि कल्चरल खुशहाली के लिए पूरी तरह से पॉलिटिकल सेंट्रलाइज़ेशन ज़रूरी है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"एक मज़बूत सभ्यता के लिए हमेशा बहुत ज़्यादा सेंट्रलाइज़्ड सरकार की ज़रूरत नहीं होती। कल्चरल कामयाबी और एडमिनिस्ट्रेटिव डीसेंट्रलाइज़ेशन एक साथ हो सकते हैं।"

59. **उत्तर:** (b) **केवल** 1 **और** 3

यह सवाल गुप्त साम्राज्य के ऐतिहासिक बैकग्राउंड, उसके गोल्डन एज की प्रतिष्ठा के आधार, और शुरुआती गुप्त इतिहास के लिए उपलब्ध सबूतों की प्रकृति के ज्ञान को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट I **सही है।** गुप्तों का उदय ऐसे पॉलिटिकल माहौल में हुआ जो मौर्य, कुषाण और सातवाहन जैसी पहले की ताकतों के पतन से बना था। इस बिखराव ने नए क्षेत्रीय राजवंशों के लिए मौके बनाए।

स्टेटमेंट II **सही है।** इतिहासकार अक्सर गुप्त युग को एक बड़े इलाके में साहित्य, विज्ञान, कला, आर्किटेक्चर और राजनीतिक स्थिरता में इसकी उपलब्धियों के कारण स्वर्ण युग के रूप में वर्णित करते हैं।

स्टेटमेंट III **गलत है।** शुरुआती गुप्त शासकों, खासकर श्रीगुप्त और घटोत्कच के बारे में डिटेल्ड कंटेंपररी शिलालेखों में ज़्यादा जानकारी नहीं है। चंद्रगुप्त I, समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त II जैसे बाद के शासकों की तुलना में उनके बारे में जानकारी काफ़ी कम है।

रिलेशनशिप 1 सही है। स्टेटमेंट I, गुप्ता पावर के उभरने और स्टेटमेंट II में बताए गए डेवलपमेंट को समझाने में मदद करने वाला बड़ा हिस्टोरिकल बैकग्राउंड देता है।
रिलेशनशिप 2 गलत है। स्टेटमेंट I पॉलिटिकल हालात पर बात करता है, न कि उन कल्चरल अचीवमेंट्स पर जो सीधे गोल्डन एज कैरेक्टराइजेशन को सही ठहराती हैं।
रिश्ता 3 सही है। स्टेटमेंट III शुरुआती गुप्त इतिहास के असली सबूतों के पैटर्न से अलग है, जो तुलनात्मक रूप से अस्पष्ट है और जिसके बारे में बहुत कम जानकारी है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर **श्रीगुप्त** और **घटोत्कच नामों का इस्तेमाल** यह टेस्ट करने के लिए करता है कि क्या कैंडिडेट बाद के जाने-माने गुप्त शासकों को वंश के उन फाउंडर्स के साथ कन्फ्यूज करते हैं जिनके बारे में ज़्यादा पता नहीं है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"राजवंश के सवालों में, UPSC अक्सर अनजान संस्थापकों की तुलना मशहूर उत्तराधिकारियों से करता है। शासक जितना कम मशहूर होगा, आपको मौजूद सबूतों के बारे में उतना ही सावधान रहना होगा।"

60. **उत्तर:** (a) केवल 1 और 2
यह सवाल मुख्य गुप्त शासकों की समझ और वंश की नींव, साम्राज्य के विस्तार और राजनीतिक मज़बूती के बीच के संबंध को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट ऐतिहासिक घटनाओं के बीच लॉजिकल कनेक्शन पहचान सकते हैं।
स्टेटमेंट I सही है। चंद्रगुप्त I को आम तौर पर गुप्त वंश का पहला अहम आज़ाद शासक माना जाता है। लिच्छवियों के साथ उनकी शादी ने गुप्त वंश की इज़्ज़त और पॉलिटिकल असर को बढ़ाया और भविष्य में विस्तार की नींव रखी।
स्टेटमेंट II सही है। हरिषेण का लिखा इलाहाबाद पिलर इंस्क्रिप्शन (प्रयाग प्रशस्ति) समुद्रगुप्त के मिलिट्री कैंपेन और पॉलिटिकल कामयाबियों की डिटेल में जानकारी देता है। यह उसे एक ताकतवर विजेता के तौर पर दिखाता है, साथ ही शाही खूबियों और लेजिटिमेसी पर भी ज़ोर देता है।
स्टेटमेंट III सही है। चंद्रगुप्त II को आमतौर पर महरौली आयरन पिलर शिलालेख से जोड़ा जाता है और उन्हें पश्चिमी क्षत्रपों को हराने का क्रेडिट दिया जाता है, जिससे गुप्त अधिकार पश्चिमी भारत में फैल गया और ज़रूरी कमर्शियल सेंटर और ट्रेड रूट तक उनकी पहुँच हो गई।
रिश्ता 1 सही है। चंद्रगुप्त I ने जो राजनीतिक नींव रखी, खासकर लिच्छवी गठबंधन के ज़रिए, उससे समुद्रगुप्त को बड़े पैमाने पर साम्राज्य बढ़ाने में मदद मिली।
रिश्ता 2 सही है। समुद्रगुप्त की जीत और चंद्रगुप्त II का पश्चिमी विस्तार, दोनों मिलकर गुप्त साम्राज्य की सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का समय दिखाते हैं।
रिश्ता 3 गलत है। चंद्रगुप्त I, समय के हिसाब से समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त II से पहले आए थे और इसलिए यह ऐतिहासिक क्रम को नहीं तोड़ता; बल्कि, वह इसकी नींव हैं।

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर रिलेशनशिप 3 का इस्तेमाल यह टेस्ट करने के लिए करता है कि कैंडिडेट **कॉन्ट्राडिक्शन** और **क्रोनोलॉजिकल सक्सेशन के बीच फर्क कर सकते हैं या** नहीं। एक स्टेटमेंट जो किसी डायनेस्टी के पहले के स्टेज के बारे में बताता है, वह बाद के डेवलपमेंट को सिर्फ इसलिए कॉन्ट्राडिक्ट नहीं करता क्योंकि वह उनसे पहले हुआ था।
के. सुशांत सर की ओर से:
"UPSC में, एक बुनियादी घटना अक्सर बाद की उपलब्धि को समझाती है। जब दो बातें एक ऐतिहासिक क्रम में फिट होती हैं, तो विरोधाभास मानने से पहले निरंतरता देखें।"

61. उत्तर: (c) **केवल** II, IV **और** V
यह सवाल गुप्त एडमिनिस्ट्रेशन, समाज, इकॉनमी और विदेशी यात्रियों के ऑब्ज़र्वेशन के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट रिलेटिव डीसेंट्रलाइज़ेशन और कम्प्लीट सेंट्रलाइज़ेशन के साथ-साथ हल्के और कठोर ज्यूडिशियल सिस्टम के बीच फर्क कर सकते हैं।
स्टेटमेंट I गलत है। हालांकि गुप्त एडमिनिस्ट्रेशन ने डीसेंट्रलाइज़िंग ट्रेंड दिखाया और प्रोविंशियल और लोकल अधिकारियों को काफी अधिकार दिए, लेकिन "सेंट्रल अथॉरिटी की कड़ी निगरानी" में काम करने वाले प्रोविंस का ब्यौरा उस समय की बढ़ती लोकल ऑटोनॉमी से कुछ अलग है। इतिहासकार आमतौर पर गुप्त एडमिनिस्ट्रेशन को बहुत ज़्यादा सेंट्रलाइज़्ड के बजाय थोड़ा डीसेंट्रलाइज़्ड बताते हैं।
स्टेटमेंट II सही है। चीनी तीर्थयात्री **फ़ैक्सियन ने** शांति, खुशहाली और काफ़ी असरदार कानून-व्यवस्था के हालात बताए। उन्होंने बताया कि अपराध काफ़ी कम थे और सज़ाएँ आम तौर पर हल्की थीं।
स्टेटमेंट III गलत है। गुप्त न्यायिक तरीकों को बड़े पैमाने पर मौत की सज़ा या सिस्टमैटिक न्यायिक टॉर्चर के लिए नहीं जाना जाता था। आज के समय के हिसाब से, एक तुलनात्मक रूप से नरम कानूनी सिस्टम का सुझाव देते हैं।
स्टेटमेंट IV सही है। गुप्त इकॉनमी को अंदरूनी और बाहरी ट्रेड के बढ़ने से फ़ायदा हुआ। टेक्सटाइल, मेटल, मसाले, जेमस्टोन और दूसरी चीज़ें अलग-अलग इलाकों को जोड़ने वाले कमर्शियल नेटवर्क का हिस्सा थीं।
स्टेटमेंट V सही है। गुप्त शासकों के बहुत सारे सोने के सिक्के, साथ ही चांदी और तांबे के सिक्के, आमतौर पर आर्थिक खुशहाली और पैसे के चलन का सबूत माने जाते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट II और III में अंतर बताता है। जिन कैंडिडेट्स को सिर्फ़ यह याद है कि गुप्त साम्राज्य ताकतवर था, वे गलत तरीके से यह मान सकते हैं कि वह कड़ी सज़ाओं पर निर्भर था। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि कैंडिडेट्स ट्रैवलर की बातों को एडमिनिस्ट्रेटिव सच्चाई से जोड़ सकते हैं या नहीं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"एक मज़बूत देश का मतलब ज़रूरी नहीं कि एक सख़्त कानूनी सिस्टम हो। इतिहास के सवालों में, हमेशा मौजूदा सबूतों से एडमिनिस्ट्रेटिव तरीकों को वेरिफ़ाई करें।"

62. **उत्तर:** (c) केवल 1 और 3
यह सवाल प्राचीन भारत के मुख्य साहित्यिक और वैज्ञानिक कामों और उनके लेखक के ज्ञान को टेस्ट करता है।
कथन 1 सही है। कालिदास ने प्रसिद्ध संस्कृत महाकाव्य *रघुवंश* और *कुमारसंभव की रचना की*, दोनों को शास्त्रीय साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में माना जाता है।
स्टेटमेंट 2 गलत है। आर्यभट्ट ने *आर्यभटीय लिखा था, सूर्य सिद्धांत* नहीं । हालांकि *सूर्य सिद्धांत* एक ज़रूरी एस्ट्रोनॉमिकल टेक्स्ट है, लेकिन इसका लेखक आर्यभट्ट को नहीं माना जाता।
कथन 3 सही है। विष्णुशर्मा पारंपरिक रूप से *पंचतंत्र* की रचना से जुड़े हैं , जो विश्व साहित्य में दंतकथाओं के सबसे प्रभावशाली संग्रहों में से एक है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर एक मशहूर एस्ट्रोनॉमर और एक मशहूर एस्ट्रोनॉमिकल टेक्स्ट के बीच कन्फ्यूजन को टेस्ट करने के लिए स्टेटमेंट 2 का इस्तेमाल करता है। ऐसे ऑथर-वर्क मैचिंग सवाल UPSC में बार-बार पूछे जाने वाले पैटर्न हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"नाम याद करना काफ़ी नहीं है। UPSC अक्सर एक स्कॉलर और उसके काम के बीच के लिंक को टेस्ट करता है।"

63. **उत्तर:** (c) केवल I और III
यह सवाल गुप्त युग के दौरान धार्मिक विकास और गुप्त शासकों के तहत धार्मिक संरक्षण की प्रकृति के ज्ञान का टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट I सही है। नालंदा गुप्त काल के दौरान बौद्ध शिक्षा का एक ज़रूरी सेंटर बनकर उभरा और इसे शाही संरक्षण मिला। बाद में यह पुरानी दुनिया की सबसे मशहूर यूनिवर्सिटी में से एक बन गया।
स्टेटमेंट II गलत है। गुप्त काल के दौरान जैन धर्म खत्म नहीं हुआ। हालांकि ब्राह्मणवादी परंपराओं को प्रमुखता मिली, जैन समुदाय सक्रिय रहे और कई क्षेत्रों में उन्हें समर्थन मिलता रहा।
स्टेटमेंट III सही है। ज़्यादातर गुप्त शासक वैष्णव धर्म को मानने वाले थे, फिर भी उन्होंने आम तौर पर धार्मिक सहनशीलता की पॉलिसी अपनाई। बौद्ध धर्म और जैन धर्म ब्राह्मण परंपराओं के साथ-साथ फलते-फूलते रहे।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
"पूरी तरह से" शब्द का इस्तेमाल करता है । UPSC अक्सर यह टेस्ट करने के लिए एब्सोल्यूट एक्सप्रेशन का इस्तेमाल करता है कि क्या कैंडिडेट कई परंपराओं के लगातार साथ-साथ होने को पहचानते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"'पूरी तरह से', 'पूरी तरह से', और 'हमेशा' जैसे शब्दों पर खास ध्यान देने की ज़रूरत है। इतिहास में, कंटिन्यूटी आमतौर पर पूरी तरह गायब होने से ज़्यादा आम है।"

64. उत्तर: (d) 1, 2, 3 **और** 4
यह सवाल गुप्त और गुप्त के बाद की कला, आर्किटेक्चर और सांस्कृतिक उपलब्धियों और उनके बड़े असर के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
कथन 1 सही है। धार का लौह स्तंभ आम तौर पर ज़्यादा मशहूर दिल्ली लौह स्तंभ से बड़ा माना जाता है, हालांकि यह टूटी-फूटी हालत में बचा हुआ है।
स्टेटमेंट 2 सही है। अजंता, एलोरा, सारनाथ, मथुरा, अनुराधापुरा और सिगिरिया से जुड़ी कलात्मक परंपराएं मिलकर क्लासिकल भारतीय कलात्मक उपलब्धि का एक हाई पॉइंट दिखाती हैं और भारतीय कलात्मक रूपों के बड़े सांस्कृतिक प्रभाव को दिखाती हैं।
कथन 3 सही है। शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों ने उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में मूर्तिकला, वास्तुकला, प्रतिमा विज्ञान और नगर नियोजन के पहलुओं को प्रभावित किया।
स्टेटमेंट 4 सही है। अजंता की पेंटिंग और बाघ के फ्रेस्को को गुप्त काल की पेंटिंग की सबसे बेहतरीन उपलब्धियों में से एक माना जाता है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर अलग-अलग इलाकों के डेवलपमेंट को मिलाकर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट क्लासिकल इंडियन आर्ट के बड़े कल्चरल असर को समझते हैं, न कि गुप्त कल्चर को एक छोटे इलाके के दायरे में देखते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"UPSC **अक्सर पॉलिटिकल सीमाओं के बजाय कल्चरल क्षेत्रों को टेस्ट करता है। आर्टिस्टिक असर किसी खानदान के इलाके से कहीं आगे तक फैल सकता है।"**

65. **उत्तरः** (b) केवल 2

यह सवाल गुप्त काल के दौरान हुए बड़े साहित्यिक, वैज्ञानिक और शैक्षिक विकास के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। इसमें यह भी देखा जाता है कि क्या कैंडिडेट पक्के तौर पर बताए गए कामों और ऐसे टेक्स्ट के बीच फर्क कर सकता है जिनके लेखक कौन हैं, यह पक्का नहीं है।

कथन 1 सही है। कालिदास ने *रघुवंश* और *कुमारसंभव की रचना की* , जो शास्त्रीय संस्कृत साहित्य की दो महानतम रचनाएँ हैं।

स्टेटमेंट 2 गलत है। आर्यभट्ट ने *आर्यभटीय लिखा था, सूर्य सिद्धांत* नहीं । हालांकि *सूर्य सिद्धांत* एक ज़रूरी एस्ट्रोनॉमिकल किताब है, लेकिन इसका श्रेय आर्यभट्ट को नहीं दिया जाता।

स्टेटमेंट 3 सही है। वराहमिहिर ने *बृहत्संहिता* लिखी , जो एस्ट्रोनॉमी, एस्ट्रोलॉजी, जियोग्राफी, आर्किटेक्चर और इससे जुड़े सब्जेक्ट्स से जुड़ी एक एनसाइक्लोपीडिक किताब है।

स्टेटमेंट 4 सही है। नालंदा यूनिवर्सिटी को आम तौर पर कुमारगुप्त I के संरक्षण से जोड़ा जाता है और बाद में यह एशिया में बौद्ध शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण सेंटर में से एक बन गया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर एक मशहूर साइंटिस्ट और एक मशहूर साइंटिफिक टेक्स्ट के बीच कन्फ्यूजन को टेस्ट करने के लिए स्टेटमेंट 2 पेश करता है। ऐसे लेखक–काम के जाल प्राचीन भारतीय इतिहास में सबसे आम पैटर्न में से हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"पुराने इतिहास में, UPSC **अक्सर एक आसान सवाल को मुश्किल तरीके से पूछता है: किसने क्या लिखा? इन जुड़ावों को समझने से कई ऐसी गलतियाँ दूर हो सकती हैं जिनसे बचा जा सकता है।"**

66. **उत्तरः** (b) केवल 4

यह सवाल संगम साहित्य के नेचर, कंपोज़िशन और हिस्टोरिकल बेसिस के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट लिटरेरी ट्रेडिशन और पक्के तौर पर स्थापित हिस्टोरिकल सबूतों के बीच फर्क कर सकते हैं।

स्टेटमेंट 1 सही है। तमिल लिटरेरी ट्रेडिशन के अनुसार, संगम लिटरेचर की रचना और संकलन कवियों की सभाओं (संगम) में किया गया था, जो पांड्या शासकों के संरक्षण में काम करते थे, खासकर मदुरै में।

कथन 2 सही है। संगम संग्रह में **एट्टुथोकाई (आठ संकलन)** और **पाथुपट्टू (दस आदर्श) शामिल हैं** , जो शास्त्रीय संगम साहित्य के मुख्य निकाय का गठन करते हैं।

स्टेटमेंट 3 सही है। संगम लिटरेचर शुरुआती ऐतिहासिक दक्षिण भारत के पॉलिटिकल, सोशल, इकोनॉमिक और कल्चरल जीवन को फिर से बनाने के लिए सबसे ज़रूरी सोर्स में से एक है। इसमें राजशाही, व्यापार, युद्ध, खेती और सामाजिक रीति–रिवाजों के बारे में कीमती बातें हैं।

स्टेटमेंट 4 गलत है। सबसे शुरुआती संगम असेंबली का उस समय के शिलालेखों से ऐतिहासिक रूप से कोई सबूत नहीं मिलता है। तीन संगम की परंपरा मुख्य रूप से बाद के साहित्यिक विवरणों से ली गई है। इतिहासकार आमतौर पर पहले के संगम को पक्के तौर पर वेरिफाइड ऐतिहासिक संस्थाओं के बजाय साहित्यिक परंपरा का हिस्सा मानते हैं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर स्टेटमेंट 4 यह टेस्ट करने के लिए पेश करता है कि क्या कैंडिडेट **लिटरेरी ट्रेडिशन को हिस्टॉरिकल रूप से वेरिफाइड सबूतों** से कन्फ्यूज करते हैं । UPSC अक्सर इस बात में फर्क करता है कि कोई टेक्स्ट क्या दावा करता है और क्या इंस्क्रिप्शन या आर्कियोलॉजी के जरिए इंडिपेंडेंटली एस्टैब्लिश किया जा सकता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"कोई परंपरा ऐतिहासिक रूप से साबित हुए बिना भी सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है। UPSC **में, हमेशा साहित्यिक यादों को पुरातात्विक सबूतों से अलग रखें।"**

67. **उत्तरः** (b) केवल 1, 3 और 4

यह सवाल संगम युग से जुड़े समय, मतलब और साहित्यिक परंपरा की समझ को टेस्ट करता है।

कथन 1 सही है। साहित्यिक, पुरातात्विक, पुरालेखीय और मुद्राशास्त्रीय साक्ष्यों के आधार पर संगम काल को आम तौर पर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व और तीसरी शताब्दी ईस्वी के बीच रखा जाता है।

स्टेटमेंट 2 गलत है। *संगम* शब्द का मतलब है विद्वानों और कवियों की सभा या एसोसिएशन। इसका मतलब असल में चेर शासकों के तहत पॉलिटिकल काउंसिल नहीं है।

स्टेटमेंट 3 सही है। तमिल परंपरा संगम साहित्य की रचना को मुख्य रूप से पांड्या शासकों द्वारा संरक्षण प्राप्त कवियों की सभाओं से जोड़ती है।

स्टेटमेंट 4 सही है। तमिल परंपरा में तीन संगम की बात कही गई है। हालांकि, माना जाता है कि केवल तीसरे संगम से जुड़ा साहित्य ही काफी हद तक बचा हुआ है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 2 डालता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि कैंडिडेट को "संगम" का सीधा मतलब पता है या नहीं, न कि वे सिर्फ़ उस समय से जुड़े राजवंशों को याद कर रहे हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"UPSC **अक्सर इनडायरेक्ट फ़ॉर्म में आसान फ़ैक्ट वाले कॉन्सेप्ट पूछता है। सिर्फ़ उनसे जुड़ी घटनाओं के बजाय, खास ऐतिहासिक शब्दों का मतलब जानें।"**

68. **उत्तरः** (b) केवल 1, 3 और 4

यह सवाल तमिल साहित्य के मुख्य हिस्सों और उनकी साहित्यिक खासियतों के ज्ञान को टेस्ट करता है।

कथन 1 सही है। *तोलकाप्पियम को* सबसे पुराना तमिल ग्रामर और पोएटिक ग्रंथ माना जाता है और पारंपरिक रूप से यह दूसरे संगम से जुड़ा है।

स्टेटमेंट 2 गलत है। संगम साहित्य में गद्य रचनाओं के बजाय ज़्यादातर कविताएँ हैं। शुरुआती तमिल साहित्यिक परंपरा का मूल पद्य रूप था।
कथन 3 सही है। पथिनेंकिलकनक्कु संग्रह काफी हद तक नैतिक और शिक्षाप्रद है। इसमें तमिल साहित्य की सबसे महान कृतियों में से एक, प्रसिद्ध *तिरुक्कुरल शामिल है ।*
कथन 4 सही है। तमिल साहित्य के पाँच महान महाकाव्य *शिलप्पादिकारम* , *मणिमेकलाई* , *जीवक चिंतामणि* , *वलयापथी* और *कुंडलकेशी हैं* ।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
स्टेटमेंट 2 एक आम सोच का फ़ायदा उठाता है कि साहित्य गद्य से कविता में बदलता है। तमिल संदर्भ में, सबसे पुरानी बची हुई रचनाएँ ज़्यादातर कविता वाली हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"जब UPSC लिटरेचर के बारे में पूछे, तो लिटरेचर के फॉर्म पर ध्यान दें—ग्रामर, पोएट्री, प्रोज़, एपिक, या एथिकल टेक्स्ट। कैटेगरी ही अक्सर जवाब तय करती है।"

69. उत्तर: **(सी) ए–3, बी–1, सी–2, डी–4**
यह सवाल संगम की मुख्य पॉलिटिक्स और उनसे जुड़ी राजधानियों, बंदरगाहों और पॉलिटिकल स्ट्रक्चर के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
A. **चेर – 3 (वंजी, टोंडी, मुसिरी)**
चेर दक्षिण भारत के पश्चिमी इलाके पर राज करते थे। वंजी उनकी राजधानी थी, जबकि टोंडी और मुसिरी ज़रूरी बंदरगाह थे।
B. **चोल – 1 (उरैयूर और पुहार)**
चोलों ने उपजाऊ कावेरी बेसिन पर कंट्रोल किया। उरैयूर एक महत्वपूर्ण अंदरूनी सेंटर था, जबकि पुहार (कावेरीपट्टिनम) एक बड़ा पोर्ट शहर था।
सी. पांड्य – 2 (मदुरै और कोरकाई)
मदुरै प्रमुख पांड्य राजधानी थी, जबकि कोरकाई मोती मछली पकड़ने और समुद्री व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।
डी. छोटे सरदार – 4 (क्षेत्रीय अधीनस्थ लेकिन प्रभावशाली स्थानीय शासक)
कई स्थानीय सरदार, जिन्हें अक्सर वेलिर के नाम से जाना जाता था, क्षेत्रीय राजनीति में काफी प्रभाव डालते थे।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
UPSC अक्सर मैचिंग सवालों में कैपिटल और पोर्ट को मिला देता है क्योंकि कैंडिडेट अक्सर एक को याद रखते हैं लेकिन दूसरे को लेकर कन्फ्यूज हो जाते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"जब पुराने राज्यों के बारे में पढ़ें, तो हमेशा राजधानियों, बंदरगाहों और आर्थिक केंद्रों के बारे में एक साथ पढ़ें। UPSC **शायद ही कभी इन्हें अलग-अलग पूछता है।"**

70. उत्तर: (d) **केवल 1, 3 और 5**
यह सवाल संगम एडमिनिस्ट्रेशन, शाही निशानों, काउंसिल, रेवेन्यू सोर्स और इलाके की ज्योग्राफी की समझ को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। संगम पॉलिटी आम तौर पर राजशाही और खानदानी थी। राजा को मिनिस्टर, पुजारी, मिलिट्री कमांडर, दूत और जासूस मदद करते थे।
स्टेटमेंट 2 गलत है। शाही निशान वैसे नहीं थे जैसा बताया गया था। **चेर का निशान धनुष था** , **चोल का निशान बाघ था** , और **पांड्या का निशान मछली (कार्प) था** ।
कथन 3 सही है। *सिलप्पादिकारम* जैसे साहित्यिक स्रोत **ऐम्पेरुंकुलु** और **एनपेरायम** जैसी संस्थाओं का उल्लेख करते हैं , जो शासन में सहायता करती थीं।
स्टेटमेंट 4 गलत है। लैंड रेवेन्यू इनकम का एक बड़ा सोर्स था, लेकिन फॉरेन ट्रेड कस्टम ड्यूटी से फ्री नहीं था। कस्टम राज्य के रेवेन्यू का एक ज़रूरी सोर्स था।
स्टेटमेंट 5 सही है। चोलों का उपजाऊ कावेरी बेसिन पर दबदबा था, पांड्यों का दक्षिणी और तटीय इलाकों पर कंट्रोल था, और चेरों का पश्चिमी पहाड़ी और तटीय इलाकों पर राज था।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर स्टेटमेंट 2 में खानदानी निशानों को उलट देता है, क्योंकि कैंडिडेट अक्सर इन निशानों को लेकर कन्फ्यूज हो जाते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"पुराना इतिहास अक्सर सटीकता को इनाम देता है। एक गलत निशान किसी सही ऑप्शन को खत्म कर सकता है।"

71. **उत्तर:** (b) केवल 1 और 4
यह सवाल संगम साहित्य में बताए गए इकोलॉजिकल क्लासिफिकेशन (*तिनाई*) और सोशल स्ट्रक्चर के ज्ञान को टेस्ट करता है।
कथन 1 सही है। कुरिंजी परिदृश्य शिकार और संग्रह से जुड़े पहाड़ी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता था, और इसके प्रमुख देवता **मुरुगन थे** ।
कथन 2 गलत है। मुल्लई पशुपालन और पशुपालन से जुड़ा था, और इसके देवता **मयोन (विष्णु) थे** । खेती और इंद्र का संबंध **मरुतम से था** , मुल्लई से नहीं।
कथन 3 गलत है। पलाई सूखे और रेगिस्तान जैसे इलाकों को दिखाता था जो लड़ाई, छापे और मुश्किलों से जुड़े थे। यह **कोर्रावाई से जुड़ा था** , लेकिन पशुपालन से नहीं।
कथन 4 सही है. *तोलकाप्पियम का* मतलब चार तरह के सामाजिक वर्गीकरण से है, जिसमें **अरासर (शासक)** , **अन्थनार (पुजारी)** , **वणीगर (व्यापारी)** और **वेल्लालर (किसान) शामिल हैं** ।
स्टेटमेंट 5 गलत है। पराथावर , **मारवार** , **पनार** और **पुलैयार** जैसे ग्रुप संगम समाज का हिस्सा थे और संगम लिटरेचर में उनका ज़िक्र अक्सर मिलता है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर इकोलॉजिकल ज़ोन और उनसे जुड़े कामों और देवी-देवताओं को मिला देते हैं। यह एक क्लासिक UPSC टेक्निक है क्योंकि कैंडिडेट अक्सर लैंडस्केप के नाम तो याद रख लेते हैं लेकिन उनकी खासियतों को लेकर कन्फ्यूज हो जाते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"टिनाई सवालों के लिए, सिर्फ़ लैंडस्केप के नाम कभी याद न करें। हर लैंडस्केप को उसके काम, देवता और जीवनशैली के साथ एक यूनिट के तौर पर सीखें।"

72. **उत्तर:** (b) **केवल** 1 **और** 3

यह सवाल संगम समाज में धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक रीति-रिवाजों और महिलाओं की स्थिति के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट शुरुआती ऐतिहासिक दक्षिण भारत में सामाजिक जीवन के बारे में साहित्यिक सबूतों और बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों के बीच अंतर कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** मुरुगन (सेयोन) संगम युग के सबसे खास देवताओं में से एक थे और खास तौर पर कुरिंजी (पहाड़ी) इलाके से जुड़े थे। लड़ाई में मारे गए योद्धाओं की याद में हीरो स्टोन (नाडु काल) बनाने का रिवाज संगम कल्चर की एक खास बात थी, जो लड़ाई की बहादुरी को दिए जाने वाले ऊंचे महत्व को दिखाता है।

स्टेटमेंट 2 **गलत है।** महिलाओं को लिटरेरी एक्टिविटी से बाहर नहीं रखा गया था। संगम लिटरेचर में कई महिला कवियों की रचनाएँ हैं, जिनमें सबसे मशहूर अव्वैयार हैं। उनके योगदान से पता चलता है कि उस समय की लिटरेरी और इंटेलेक्चुअल लाइफ में महिलाओं ने हिस्सा लिया था।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** संगम लिटरेचर से पता चलता है कि लव मैरिज को कई मामलों में सामाजिक मान्यता मिली हुई थी। साथ ही, कुछ रेफरेंस में सती प्रथा और समाज के कुछ खास तबकों में विधवाओं को समाज से अलग-थलग करने की बात भी सामने आई है, जो अलग-अलग सामाजिक प्रथाओं के साथ-साथ होने को दिखाता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 2 डालता है ताकि यह टेस्ट कर सके कि क्या कैंडिडेट पुराने पेट्रियार्कल समाज की तुलना महिलाओं को पब्लिक लाइफ से पूरी तरह बाहर रखने से करते हैं। UPSC अक्सर गलत बातें बनाने के लिए "पूरी तरह से," "पूरी तरह से," या "कोई सबूत नहीं" जैसे एक्सट्रीम शब्दों का इस्तेमाल करता है। अव्वैयार जैसी महिला कवियों का होना ऐसे दावों को तुरंत गलत साबित कर देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"पुराने इतिहास में, एकदम पक्की बातों से सावधान रहें। एक एक्सेप्शन अक्सर पूरी बात को गलत बनाने के लिए काफी होता है।"

73. **उत्तर:** (a) **केवल** 1 **और** 3

यह सवाल संगम युग की फाइन आर्ट्स, म्यूज़िक, डांस और परफ़ॉर्मेंस परंपराओं के ज्ञान को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट दरबारी संरक्षण और परफ़ॉर्मिंग कम्युनिटीज़ की बड़ी सांस्कृतिक भूमिका के बीच फ़र्क कर सकते हैं।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** संगम लिटरेचर में कई तरह के म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स का ज़िक्र है, जिसमें यज़ (एक तार वाला इंस्ट्रूमेंट) और कई तरह के ड्रम शामिल हैं। ये रेफरेंस एक बहुत डेवलप्ड म्यूज़िकल ट्रेडिशन को दिखाते हैं।

स्टेटमेंट 2 **गलत है।** पनार और विरालियार म्यूज़िक, डांस और ओरल ट्रेडिशन से जुड़े प्रोफेशनल परफॉर्मर थे। हालाँकि उन्हें अक्सर शाही संरक्षण मिला, लेकिन वे सिर्फ़ दरबारी कवि नहीं थे। उनकी एक्टिविटीज़ शाही दरबारों से आगे तक फैली हुई थीं और उनमें पब्लिक और लोक परफॉर्मेंस भी शामिल थीं।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** कूथु पब्लिक एंटरटेनमेंट का एक पॉपुलर तरीका था जिसमें डांस, म्यूज़िक, एक्टिंग और कहानी सुनाना शामिल था। संगम समाज की कल्चरल लाइफ में इसकी अहम भूमिका थी।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर स्टेटमेंट 2 डालता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि क्या कैंडिडेट शाही संरक्षण को खास कोर्ट से जुड़ाव के साथ कन्फ्यूज करते हैं। कई कल्चरल ग्रुप्स को शासकों से सपोर्ट मिला, जबकि वे आम लोगों के बीच पॉपुलर परफॉर्मर के तौर पर काम करते रहे।

के. सुशांत सर की ओर से:

"शाही संरक्षण का मतलब शाही मोनोपॉली नहीं है। कलाकार एक ही समय में कोर्ट और समाज की सेवा कर सकते हैं।"

74. **उत्तर:** (b) **केवल** 1, 3 **और** 4

यह सवाल संगम युग के दौरान खेती, व्यापार, बंदरगाहों और इंडो-रोमन कमर्शियल रिश्तों की जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट एक्सपोर्ट और इंपोर्ट में फर्क कर सकते हैं और मोनेटाइजेशन को ज़्यादा आंकने से बच सकते हैं।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** खेती संगम इकॉनमी की रीढ़ थी। चावल मुख्य फसल थी, खासकर चोल और पांड्या इलाकों की उपजाऊ नदी घाटियों में।

स्टेटमेंट 2 **गलत है।** हालांकि सिक्कों का इस्तेमाल होता था, लेकिन लोकल ट्रेड मुख्य रूप से पूरी तरह से मोनेटाइज़्ड कैश इकॉनमी पर आधारित नहीं था। कई ट्रांज़ैक्शन में बार्टर की अहम भूमिका बनी रही।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** पुहार (कावेरीपट्टिनम) संगम युग के सबसे ज़रूरी बंदरगाहों में से एक के तौर पर उभरा और रोमन दुनिया के साथ कॉमर्स समेत विदेशी व्यापार का एक बड़ा सेंटर था।

स्टेटमेंट 4 **सही है।** ऑगस्टस और नीरो जैसे सम्राटों के रोमन सिक्के तमिलनाडु में मिले हैं, जो एक्टिव इंडो-रोमन ट्रेड के लिए मजबूत आर्कियोलॉजिकल सबूत देते हैं।

स्टेटमेंट 5 **गलत है।** दक्षिण भारत में घोड़े, शराब और सोना ज़्यादातर इम्पोर्ट किए जाते थे, जबकि एक्सपोर्ट में मसाले, मोती, हाथी दांत, कपड़े और कीमती पत्थर शामिल थे।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

परीक्षक ने कथन 5 में जानबूझकर आयात और निर्यात को उलट दिया है। यूपीएससी अक्सर विपरीत दिशाओं में चलने वाली वस्तुओं को बदलकर आर्थिक इतिहास का परीक्षण करता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब भी ट्रेड के बारे में पूछा जाए, तो हमेशा यह अलग करें कि इंडिया क्या एक्सपोर्ट करता है और क्या इम्पोर्ट करता है। UPSC अक्सर फ्लो को उल्टा करके जाल बिछाता है।"

75. **उत्तर:** (b) **केवल तीन**

यह सवाल बड़े प्रतिहार शासकों और उनकी कामयाबियों के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह ऐतिहासिक रूप से वेरिफाइड कामयाबियों को गलत जुड़ाव से अलग करने की काबिलियत को भी जांचता है।

स्टेटमेंट 1 **सही मैच करता है।** नागभट्ट I ने पश्चिमी भारत में अरबों के विस्तार का सफलतापूर्वक विरोध किया और बाद में प्रतिहारों को ध्रुव जैसे शासकों के तहत राष्ट्रकूट दबाव का सामना करना पड़ा।

स्टेटमेंट 2 गलत तरीके से मैच किया गया है। वत्सराज त्रिपक्षीय संघर्ष में एक महत्वपूर्ण भागीदार था, लेकिन कन्नौज को वत्सराज के बजाय नागभट्ट II के तहत शाही केंद्र के रूप में मजबूती से स्थापित किया गया था।
स्टेटमेंट 3 गलत तरीके से मैच किया गया है। नागभट्ट II ने प्रतिहार प्रभाव को पूर्वी भारत की ओर बढ़ाया, लेकिन उन्हें सोमनाथ मंदिर को फिर से बनाने का क्रेडिट नहीं दिया जाता है।
स्टेटमेंट 4 सही मैच करता है। मिहिर भोज ने "आदिवराह" टाइटल अपनाया और उन्हें बड़े पैमाने पर प्रतिहार वंश का सबसे महान शासक माना जाता है।
स्टेटमेंट 5 सही मैच करता है। महेंद्रपाल I ने प्रतिहार प्रभाव को पंजाब में और बढ़ाया और साम्राज्य को उसके क्षेत्रीय पीक पर बनाए रखा।
इसलिए, केवल कथन 1, 4 **और** 5 **ही** सही ढंग से मेल खाते हैं।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
जांच करने वाला गलत शासकों की असली उपलब्धियों को जोड़कर तथ्यों की सटीकता की जांच करता है। ऐसे सवाल इतिहास की पूरी जानकारी के बजाय ध्यान से जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"वंश के सवालों में, UPSC शायद ही कभी घटना बदलता है; यह आमतौर पर उससे जुड़े व्यक्ति को बदल देता है।"

76. **उत्तर:** (a) **केवल** 1
यह सवाल हर्षवर्धन के राज के पॉलिटिकल कैरेक्टर और इंडियन हिस्ट्री में उसकी जगह की समझ को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। हर्षवर्धन ने लगभग 606–647 CE तक राज किया और गुप्त वंश के बाद उत्तरी भारत के सबसे ताकतवर शासक के तौर पर उभरे। उनके राज को अक्सर शुरुआती मिडिल एज में इलाके के राज्यों के बनने से पहले पॉलिटिकल मज़बूती के आखिरी बड़े दौर में से एक माना जाता है।
स्टेटमेंट 2 गलत है। हर्ष ने गुप्त साम्राज्य के पूरी तरह से सेंट्रलाइज़्ड शाही ढांचे को फिर से नहीं बनाया। उनके एडमिनिस्ट्रेशन में बढ़ता हुआ रीजनलाइज़ेशन और नीचे के शासकों पर निर्भरता दिखी, जो शुरुआती मिडिल एज के बड़े ट्रेंड्स को दिखाता है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर अक्सर प्राचीन से शुरुआती मध्यकालीन भारत में बदलाव को टेस्ट करने के लिए हर्ष का इस्तेमाल करते हैं। कैंडिडेट्स को यह मानने से बचना चाहिए कि हर बड़ा साम्राज्य एक जैसा सेंट्रलाइज़्ड था।
के. सुशांत सर की ओर से:
"एक बड़े साम्राज्य का मतलब अपने आप एक सेंट्रलाइज़्ड साम्राज्य नहीं होता। इलाके का साइज़ और एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर अलग-अलग कॉन्सेप्ट हैं।"

77. **उत्तर:** (c)
यह सवाल पुराने ज़माने से लेकर शुरुआती मध्यकालीन राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव में हर्षवर्धन की भूमिका की समझ को टेस्ट करता है।
ऑप्शन (a) **सही है।** हर्ष के शासनकाल को आमतौर पर गुप्त साम्राज्य परंपरा और क्षेत्रीय राज्यों के उदय के बीच एक बदलाव के दौर के रूप में देखा जाता है।
ऑप्शन (b) **सही है।** हर्ष के शासन के दौरान भी, विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीय राजनीतिक दावे की प्रवृत्ति जारी रही।
ऑप्शन (c) **सही नहीं है।** हर्ष ने गुप्त साम्राज्य जैसा पूरे भारत में साम्राज्य फिर से नहीं बनाया। उनका अधिकार ज़्यादातर उत्तरी भारत में था, और उनके एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर में शुरुआती मध्ययुगीन खासियतें दिखती थीं।
ऑप्शन (d) **सही है।** हर्ष को आम तौर पर लंबे समय तक क्षेत्रीय राजनीतिक बिखराव से पहले के आखिरी बड़े शासकों में से एक माना जाता है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर ऑप्शन (c) का इस्तेमाल यह टेस्ट करने के लिए करता है कि क्या कैंडिडेट पॉलिटिकल असर को पूरी तरह से शाही बहाली के बराबर मानते हैं। हिस्टोरिकल कंटिन्यूटी का मतलब शायद ही कभी एकदम सही रेप्लिकेशन होता है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"इतिहास अक्सर पैटर्न दोहराता है, स्ट्रक्चर नहीं। समानता का मतलब पहचान नहीं है।"

78. **उत्तर:** (a) **केवल** 1, 2 **और** 4
यह सवाल हर्षवर्धन के राज में पुष्यभूति (वर्धन) साम्राज्य के पॉलिटिकल फैलाव और एडमिनिस्ट्रेटिव कैरेक्टर के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट शुरुआती मिडिल एज इंडिया में सीधे शाही कंट्रोल और सामंती रिश्तों के बीच फर्क कर सकता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। हर्षवर्धन अपने बड़े भाई राज्यवर्धन की मौत के बाद 606 CE में थानेश्वर की गद्दी पर बैठे। उन्होंने पॉलिटिकल संकट के समय काफी कम उम्र में सत्ता संभाली और बाद में वर्धन साम्राज्य को मज़बूत किया।
स्टेटमेंट 2 सही है। हर्ष का साम्राज्य सातवीं सदी के भारत के सबसे बड़े पॉलिटिकल ग्रुप में से एक था। उसका असर पूरब में कामरूप से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ था, हालांकि अलग-अलग इलाकों में कंट्रोल का लेवल अलग-अलग था।
स्टेटमेंट 3 गलत है। वर्धन साम्राज्य पूरी तरह से सेंट्रलाइज़्ड राज्य नहीं था। कई शुरुआती मध्ययुगीन पॉलिटिक्स की तरह, इसमें सीधे तौर पर चलाए जाने वाले इलाके और नीचे के सामंती इलाके, दोनों शामिल थे। पॉलिटिकल अथॉरिटी का इस्तेमाल अक्सर अलायंस और सबब्यूटरी रिश्तों के ज़रिए किया जाता था।
स्टेटमेंट 4 सही है। हर्ष ने सीधे तौर पर शासित इलाकों और सामंती राज्यों के कॉम्बिनेशन पर अधिकार किया। कामरूप जैसे इलाकों ने हर्ष के दबदबे को मानते हुए कुछ हद तक ऑटोनॉमी बनाए रखी।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर स्टेटमेंट 3 पेश करता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि क्या कैंडिडेट सभी बड़े साम्राज्यों पर बहुत ज़्यादा सेंट्रलाइज़्ड मौर्य मॉडल को प्रोजेक्ट करते हैं। शुरुआती मिडिल एज इंडिया में, पॉलिटिकल असर अक्सर सामंतों और साथियों के नेटवर्क के ज़रिए सीधे एडमिनिस्ट्रेशन से आगे तक फैला हुआ था।
के. सुशांत सर की ओर से:
"एक बड़े साम्राज्य का असर बहुत ज़्यादा हो सकता है, लेकिन असर और सीधा एडमिनिस्ट्रेशन एक ही बात नहीं हैं।"

79. **उत्तरः** (c) **केवल** 1, 3 **और** 5

यह सवाल हर्ष के एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम और गुप्त काल के बाद के भारत में गवर्नेंस के नेचर के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** हर्ष के एडमिनिस्ट्रेशन ने बदलती पॉलिटिकल असलियत के हिसाब से खुद को ढालते हुए मोटे तौर पर गुप्ता एडमिनिस्ट्रेटिव परंपराओं को फॉलो किया। कई गुप्ता-युग के इंस्टीट्यूशन जारी रहे, हालांकि सामंतों और क्षेत्रीय सरदारों को ज़्यादा अहमियत दी गई।

स्टेटमेंट 2 **गलत है।** हर्ष का साम्राज्य पूरी तरह से सेंट्रलाइज़्ड ब्यूरोक्रेटिक स्टेट नहीं था। सामंतों, कर देने वाले शासकों और क्षेत्रीय सरदारों ने शासन और मिलिट्री मामलों में अहम भूमिका निभाई।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** ह्वेन त्सांग ने हर्ष के राज में कई साल बिताए और एडमिनिस्ट्रेशन, समाज, इकॉनमी, धर्म और एजुकेशन के बारे में डिटेल में जानकारी दी। उनकी लिखी बातें उस समय के सबसे कीमती सोर्स में से हैं।

स्टेटमेंट 4 **गलत है।** सिक्कों की कमी को आम तौर पर गुप्त काल की तुलना में घटते मोनेटाइजेशन और शहरी कमर्शियल एक्टिविटी के सबूत के तौर पर देखा जाता है, न कि एक मजबूत मोनेटाइज्ड इकॉनमी के तौर पर।

स्टेटमेंट 5 **सही है।** महासामंतों की मौजूदगी एडमिनिस्ट्रेशन और मिलिट्री ऑर्गनाइज़ेशन में सामंती सरदारों की बढ़ती अहमियत को दिखाती है, जो शुरुआती मध्ययुगीन पॉलिटिकल स्ट्रक्चर की एक खास बात थी।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

जांच करने वाला अक्सर आर्थिक सबूतों का मतलब उलट देता है। यहां, सिक्कों की कमी को गलत तरीके से आर्थिक खुशहाली से जोड़ा जाता है, जबकि इतिहासकार आमतौर पर इसे कम मोनेटाइजेशन से जोड़ते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:

"इतिहास में, सबूतों को ध्यान से समझना चाहिए। कम सिक्के आमतौर पर कम मोनेटाइज़ेशन दिखाते हैं, ज़्यादा नहीं।"

80. **उत्तरः** (c) 1 **और** 2 **दोनों**

यह सवाल हर्ष के राज के दौरान साहित्यिक उपलब्धियों और एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन के ज्ञान को टेस्ट करता है।

कथन 1 **सही है।** पारंपरिक रूप से हर्षवर्धन को संस्कृत नाटक *नागनंद*, *रत्नावली* और *प्रियदर्शिका की रचना का श्रेय दिया जाता है*। ये रचनाएँ उनके दरबार की समृद्ध साहित्यिक संस्कृति को दर्शाती हैं।

स्टेटमेंट 2 **सही है।** हर्ष के राज में नालंदा यूनिवर्सिटी को बहुत नाम मिला। इसने एशिया के अलग-अलग हिस्सों से स्टूडेंट्स को अट्रैक्ट किया और बौद्ध फिलॉसफी, ग्रामर, लॉजिक, मेडिसिन, एस्ट्रोनॉमी और दूसरे सब्जेक्ट्स में पढ़ाई कराई।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर पॉलिटिकल हिस्ट्री को कल्चरल हिस्ट्री के साथ मिलाकर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट्स को याद है कि कई पुराने शासक लिटरेचर के संरक्षक और कंट्रीब्यूटर भी थे।

के. सुशांत सर की ओर से:

"UPSC अक्सर शासकों से न केवल विजेता के रूप में बल्कि संस्कृति, साहित्य और शिक्षा के संरक्षक के रूप में भी सवाल पूछता है।"

81. **उत्तरः (बी)** 1-**बी**, 2-**सी**, 3-**ए**, 4-**डी**

यह सवाल हर्ष के राज के दौरान सोशल स्ट्रक्चर, धार्मिक पॉलिसी और सोशल हालात के ज्ञान को टेस्ट करता है।

जोड़ी 1 **सही मैच हुई है।** वर्ण व्यवस्था समाज को संगठित करने का एक ज़रूरी सिद्धांत बनी रही, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के साथ-साथ कई उपजातियों में बंटी हुई थी।

जोड़ी 2 **सही मैच हुई है।** ऊंचे सोशल ग्रुप में महिलाओं की स्थिति में गिरावट के संकेत दिखे, जिसमें सती जैसी प्रथाएं और विधवाओं की दोबारा शादी पर रोक ज़्यादा दिखने लगी।

जोड़ी 3 **सही मैच हुई है।** हर्ष ने महायान बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने और धार्मिक संरक्षण दिखाने के लिए कान्यकुब्ज (कन्नौज) में एक बड़ी धार्मिक सभा रखी थी।

जोड़ी 4 **सही मैच हुई है।** हालांकि हर्ष ने महायान बौद्ध धर्म को ज़्यादा सपोर्ट किया, लेकिन वह ब्राह्मणवाद और जैन धर्म समेत दूसरे धार्मिक रिवाजों के प्रति सहनशील बना रहा।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

मैचिंग सवाल अक्सर यह टेस्ट करते हैं कि क्या कैंडिडेट सोशल फीचर्स को धार्मिक इवेंट्स से कन्फ्यूज़ करते हैं। अलग-अलग फैक्ट्स को याद करने के बजाय कॉन्सेप्ट्स को ध्यान से जोड़ना ज़्यादा ज़रूरी है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"मैच-द-फॉलोइंग सवालों में, सही जवाब ढूंढने से पहले साफ़ तौर पर गलत जगह पर लगे जोड़ों को हटा दें।"

82. **उत्तरः** (b) **केवल** 1, 2, 3 **और** 5

यह सवाल पल्लवों के राजनीतिक इतिहास, बड़े शासकों और कला और आर्किटेक्चर में उनके योगदान के ज्ञान को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** पल्लवों ने दक्षिण-पूर्वी भारत के बड़े हिस्से पर राज किया, और कांचीपुरम उनका मुख्य पॉलिटिकल और कल्चरल सेंटर बन गया।

स्टेटमेंट 2 **सही है।** सिंहविष्णु को आम तौर पर इंपीरियल पल्लव वंश का फाउंडर माना जाता है। उन्होंने कलभ्रों को हराया और तमिल देश में पल्लव प्रभाव को बढ़ाया।

स्टेटमेंट 3 **सही है।** महेंद्रवर्मन I ने लंबे समय तक चले पल्लव-चालुक्य संघर्ष की शुरुआत की और वह कला, साहित्य और रॉक-कट आर्किटेक्चर के एक महत्वपूर्ण संरक्षक भी थे।

स्टेटमेंट 4 **गलत है।** मामल्लपुरम का शोर मंदिर नरसिंहवर्मन II (राजसिंह) से जुड़ा है, न कि नरसिंहवर्मन I (मामल्ला) से। नरसिंहवर्मन I को मुख्य रूप से पुलकेशिन II को हराने और मामल्लपुरम में मोनोलिथिक रथों के लिए याद किया जाता है।

स्टेटमेंट 5 सही है। नरसिंहवर्मन II (राजसिंह) कांचीपुरम के शानदार कैलाशनाथ मंदिर से जुड़े हैं और उनका राज तुलनात्मक रूप से शांतिपूर्ण था, जिससे आर्किटेक्चरल कामों में आसानी हुई।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

जांच करने वाला अक्सर एक ही वंश के शासकों के बीच स्मारकों की अदला-बदली करता है। यहां, शोर मंदिर को जानबूझकर नरसिंहवर्मन II के बजाय नरसिंहवर्मन I से जोड़ा गया है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"UPSC को स्मारक-शासक के जाल पसंद हैं। हमेशा किसी स्मारक को उसके संरक्षक शासक से जोड़ें, सिर्फ़ वंश से नहीं।"

83. **उत्तर:** (b) **केवल** 2

यह सवाल पल्लव एडमिनिस्ट्रेशन, लोकल गवर्नेंस, रेवेन्यू सिस्टम और धार्मिक विकास के ज्ञान को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 सही है। पल्लव राज्य राजशाही था, और राजा एडमिनिस्ट्रेशन, न्याय और मिलिट्री मामलों में सबसे बड़े अधिकारी के तौर पर काम करता था।

स्टेटमेंट 2 सही नहीं है। लोकल एडमिनिस्ट्रेशन पूरी तरह से सेंट्रलाइज़्ड नहीं था। सभा (ब्रह्मदेय गांव) और उर (आम गांव) जैसी गांव की असेंबली ने लोकल गवर्नेंस और सेल्फ-एडमिनिस्ट्रेशन में अहम भूमिका निभाई।

स्टेटमेंट 3 सही है। लैंड रेवेन्यू राज्य की इनकम का मुख्य सोर्स था, जिसे प्रोफेशन, ट्रेड और दूसरी इकोनॉमिक एक्टिविटी पर लगने वाले टैक्स से पूरा किया जाता था।

स्टेटमेंट 4 सही है। भक्ति आंदोलन को अलवार और नयनारों के असर से ताकत मिली, जिसने दक्षिण भारत में वैष्णव और शैव धर्म के विकास में अहम योगदान दिया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर ने स्टेटमेंट 2 में "पूरी तरह से" शब्द डालकर गलत स्टेटमेंट बनाया। पल्लव एडमिनिस्ट्रेशन ने शाही अथॉरिटी को एक्टिव लोकल इंस्टीट्यूशन के साथ मिलाया।

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब भी UPSC 'entirely', 'completely', या 'fully' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करे, तो उन्हें ध्यान से वेरिफाई करें। पुराने ज़माने का भारतीय एडमिनिस्ट्रेशन आमतौर पर इन शब्दों से कहीं ज़्यादा बारीक था।"

84. **उत्तर:** (b) **केवल** 1, 2 **और** 3

यह सवाल पल्लव काल के दौरान शिक्षा, साहित्य और सांस्कृतिक विकास के ज्ञान को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट कई साहित्यिक परंपराओं के संरक्षण और एक ही भाषा के लिए खास सरकारी मदद के बीच फर्क कर सकता है।

स्टेटमेंट 1 सही है। कांची (कांचीपुरम) पल्लव काल के दौरान दक्षिण भारत में शिक्षा के सबसे बड़े सेंटर में से एक के तौर पर उभरा। इसने धर्म, फिलॉसफी, ग्रामर और लिटरेचर के स्कॉलर्स को अट्रैक्ट किया और एक ज़रूरी इंटेलेक्चुअल सेंटर के तौर पर पहचान बनाई।

स्टेटमेंट 2 सही है। *मत्तविलास प्रहसन* , एक संस्कृत व्यंग्य नाटक है, जिसे महेंद्रवर्मन I ने लिखा था। यह रचना उस समय के धार्मिक और सामाजिक जीवन के बारे में कीमती जानकारी देती है और पल्लव दरबार की साहित्यिक उपलब्धियों को दिखाती है।

स्टेटमेंट 3 सही है। पल्लव युग में तमिलनाडु में भक्ति आंदोलन फला-फूला। अलवार (वैष्णव संत) और नयनार (शैव संत) के भक्ति भजनों ने तमिल भक्ति साहित्य और धार्मिक संस्कृति के विकास में अहम भूमिका निभाई।

स्टेटमेंट 4 गलत है। पल्लवों ने संस्कृत और तमिल दोनों लिटरेचर को बढ़ावा दिया। उनके राज में तमिल भक्ति लिटरेचर खूब फला-फूला, वहीं संस्कृत को भी काफी शाही मदद मिली, जैसा कि शिलालेखों, लिटरेरी कामों और दरबारी कल्चर में दिखता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर ने स्टेटमेंट 4 इसलिए पेश किया है ताकि कल्चरल रिवाइवल को भाषा की खासियत मानने के ट्रेंड को टेस्ट किया जा सके। पुराने और शुरुआती मिडिल एज के भारत में, एक भाषा को बढ़ावा देने का मतलब शायद ही कभी दूसरी भाषा को दबाना होता था। पल्लवों ने एक ही समय में संस्कृत स्कॉलरशिप और तमिल लिटरेरी ट्रेडिशन को सपोर्ट किया।

के. सुशांत सर की ओर से:

"UPSC में, कल्चरल ग्रोथ आमतौर पर एक्स्ट्रा नहीं, बल्कि एडिटिव होती है। एक भाषा को सपोर्ट करने का मतलब यह नहीं है कि आप दूसरी भाषा के प्रति दुश्मनी रखते हैं।"

85. **उत्तर:** (b) **केवल** 1, 2 **और** 4

यह सवाल चालुक्य वंश के विकास और उसकी अलग-अलग ब्रांच के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट दक्षिण भारत के बड़े पॉलिटिकल इतिहास में पूर्वी और पश्चिमी चालुक्यों को सही ढंग से रख सकते हैं।

कथन 1 सही है। चालुक्यों ने छठी और बारहवीं शताब्दी CE के बीच बादामी चालुक्य, वेंगी के पूर्वी चालुक्य और कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य सहित विभिन्न शाखाओं के माध्यम से दक्षिणी और मध्य भारत के बड़े हिस्सों पर शासन किया।

स्टेटमेंट 2 सही है। बादामी चालुक्य, कदंब जैसी पहले की क्षेत्रीय ताकतों के पतन के बीच उभरे और पुलकेशी II के तहत शाही कद हासिल किया, जिसने दक्कन के ज़्यादातर हिस्से में चालुक्यों का असर बढ़ाया।

स्टेटमेंट 3 गलत है। पूर्वी चालुक्य राष्ट्रकूटों के पतन के बाद नहीं उभरे। उनकी स्थापना सातवीं सदी CE में हुई थी जब पुलकेशी II ने अपने भाई विष्णुवर्धन को वेंगी का शासक बनाया था। इसलिए उनकी शुरुआत राष्ट्रकूटों से कई सदियों पहले हुई थी।

स्टेटमेंट 4 सही है। दसवीं सदी के आखिर में राष्ट्रकूटों को हराने के बाद तैलप II ने पश्चिमी चालुक्यों को फिर से ज़िंदा किया। उनकी राजधानी बसवकल्याण (कल्याणी) में बनाई गई थी।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर क्रोनोलॉजिकल समझ को टेस्ट करने के लिए स्टेटमेंट 3 रखता है। UPSC अक्सर दो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण राजवंशों को जोड़कर कन्फ्यूजन पैदा करता है जो अलग-अलग समय के थे। कैंडिडेट्स को एक राजवंश की शुरुआत और बाद में दूसरी ताकतों के साथ उसके रिश्तों के बीच ध्यान से फर्क करना चाहिए।

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब किसी स्टेटमेंट में 'बाद में सामने आया' जैसे शब्द हों, तो हमेशा पहले क्रोनोलॉजी चेक करें। टाइमलाइन क्लियर होने पर UPSC के कई जाल टूट जाते हैं।"

86. **उत्तर:** (c) **केवल** 2

यह सवाल चालुक्यों के ऐतिहासिक महत्व और दक्षिण भारत में राज्य बनाने, आर्किटेक्चर और साहित्य में उनके योगदान की समझ को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट क्षेत्रीय उपलब्धियों को राजनीतिक एकता के बढ़ा-चढ़ाकर किए गए दावों से अलग कर सकते हैं।

स्टेटमेंट 1 सही है। बादामी चालुक्यों के उदय ने दक्षिण भारत में बड़े क्षेत्रीय राज्यों के उदय को चिह्नित किया, जिन्होंने कई छोटे क्षेत्रीय राजनीतिक समूहों की जगह ली और दक्कन में अधिक राजनीतिक एकीकरण में योगदान दिया।

स्टेटमेंट 2 सही नहीं है। चालुक्यों ने कभी भी पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को एक ही पॉलिटिकल अथॉरिटी के तहत एक नहीं किया। उनका असर दक्कन और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में बहुत ज़्यादा था, लेकिन यह पूरे उपमहाद्वीप तक नहीं फैला था।

स्टेटमेंट 3 सही है। वेसर स्टाइल का आर्किटेक्चर चालुक्यों के समय में डेवलप हुआ और इसे आमतौर पर नागर (उत्तरी) और द्रविड़ (दक्षिणी) आर्किटेक्चरल परंपराओं का मिक्सचर माना जाता है।

स्टेटमेंट 4 सही है। चालुक्यों ने कन्नड़ लिटरेचर को ज़रूरी मदद दी। जैन, ब्राह्मण और बाद में वीरशैव परंपराओं ने कन्नड़ लिटरेरी कल्चर के विकास में अहम योगदान दिया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर, एब्सोल्यूट क्लेम की पहचान को टेस्ट करने के लिए स्टेटमेंट 2 का इस्तेमाल करता है। "पूरा," "सभी," "पूरी तरह से," और "पहली बार" जैसे शब्द अक्सर UPSC के सवालों में बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों का इशारा करते हैं और इसलिए इनकी ध्यान से जांच होनी चाहिए।

के. सुशांत सर की ओर से:

"साम्राज्य यूनिवर्सल हुए बिना भी शक्तिशाली हो सकते हैं। UPSC में, ऐसे बयानों से सावधान रहें जो क्षेत्रीय दबदबे को सबकॉन्टिनेंटल कंट्रोल में बदल देते हैं।"

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

87. **उत्तर:** (d) 1, 2, 3, 4 **और** 5

यह सवाल चालुक्य इतिहास को फिर से बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए अलग-अलग सोर्स के ज्ञान को टेस्ट करता है, जिसमें शिलालेख, विदेशी खाते और साहित्यिक रचनाएँ शामिल हैं। यह कैंडिडेट की चालुक्य वंश की खास शाखाओं के साथ खास सोर्स को जोड़ने की क्षमता को भी चेक करता है।

कथन 1 सही है। बादामी और पट्टदकल जैसी जगहों से मिले शिलालेख चालुक्य राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं।

स्टेटमेंट 2 सही है। चीनी तीर्थयात्री ह्वेन-त्सांग ने पुलकेशी II के दरबार का दौरा किया और चालुक्य साम्राज्य, उसके प्रशासन और समाज का वर्णन करते हुए एक मूल्यवान विवरण छोड़ा।

स्टेटमेंट 3 सही है। पुलकेशी II के शासनकाल के दौरान रविकीर्ति द्वारा लिखा गया ऐहोल शिलालेख, चालुक्य इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण सोर्स में से एक है और इसमें सैन्य उपलब्धियों और राजनीतिक विकास का रिकॉर्ड है।

स्टेटमेंट 4 सही है। बिल्हण का लिखा *विक्रमांकदेव चरित*, पश्चिमी चालुक्यों के इतिहास, खासकर विक्रमादित्य VI के शासनकाल के लिए एक बड़ा साहित्यिक सोर्स है।

स्टेटमेंट 5 सही है। कांची के कैलाशनाथ मंदिर का शिलालेख विक्रमादित्य II से जुड़ा है और पल्लवों पर चालुक्य की जीत की याद दिलाता है, साथ ही दोनों राजवंशों के बीच कल्चरल बातचीत को भी दिखाता है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर एक ही सवाल में शिलालेख, साहित्यिक और विदेशी सोर्स को मिलाकर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट यह समझते हैं कि ऐतिहासिक रिकंस्ट्रक्शन एक सोर्स टाइप के बजाय सबूतों की कई कैटेगरी पर निर्भर करता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"एक अच्छा इतिहासकार कभी भी सिर्फ़ एक सोर्स पर निर्भर नहीं रहता। UPSC उन कैंडिडेट्स को इनाम देता है जो शिलालेखों, साहित्य और विदेशी कहानियों को एक सही ऐतिहासिक तस्वीर में जोड़ सकते हैं।"

88. **उत्तर:** (a) **केवल** 1 **और** 2

यह सवाल बादामी चालुक्यों से जुड़े बड़े शासकों और घटनाओं के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है और यह देखता है कि क्या कैंडिडेट शासकों को उनकी ऐतिहासिक उपलब्धियों से सही तरह से मिला सकते हैं।

Pair 1 गलत तरीके से मैच हो रहा है। पुलकेशी I ने चालुक्य वंश की स्थापना की और वातापी (बादामी) को अपनी राजधानी बनाया। इसलिए, Pair 1 में दिया गया विवरण सही तरीके से मैच नहीं करता है।
Pair 2 गलत तरीके से मैच हो गया है। पुलकेशी II वह शासक था जिसने हर्ष का सामना किया और चालुक्य प्रभाव को नर्मदा तक बढ़ाया। इसलिए Pair 2 से जुड़ा विवरण सही तरीके से मैच नहीं हुआ है।
जोड़ी 3 सही मैच हुई है। विक्रमादित्य I ने पल्लवों से मिली मुश्किलों के बाद चालुक्यों की ताकत वापस लाई और चालुक्यों का राज फिर से कायम किया।
जोड़ी 4 सही ढंग से मैच हुई है। दंतिदुर्ग ने आखिरी बादामी चालुक्य शासक को उखाड़ फेंका और दक्कन में राष्ट्रकूट राज कायम किया।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर मशहूर शासकों की कामयाबियों की अदला-बदली करते हैं। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट सच में ऐतिहासिक लोगों को जानते हैं या सिर्फ़ जाने-पहचाने नामों को पहचानते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:
"मैचिंग के सवालों में, UPSC अक्सर जाने-माने शासकों की उपलब्धियों की अदला-बदली करता है। किसी जोड़ी को स्वीकार करने से पहले हमेशा व्यक्ति और घटना दोनों को वेरिफ़ाई करें।"

89. **उत्तर:** (c) **केवल** 3
यह सवाल कल्याणी के पश्चिमी चालुक्यों की शुरुआत, कामयाबियों और गिरावट के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। इसमें यह भी देखा जाता है कि क्या कैंडिडेट उन्हें पहले के बादामी चालुक्यों से अलग पहचान सकते हैं।
स्टेटमेंट 1 सही है। तैलप II ने 973 CE में राष्ट्रकूटों को हटाकर और कल्याणी के पश्चिमी चालुक्य वंश की स्थापना करके चालुक्य शक्ति को फिर से ज़िंदा किया।
स्टेटमेंट 2 सही है। विक्रमादित्य VI को बड़े पैमाने पर राजवंश का सबसे महान शासक माना जाता है। उनके शासनकाल में राजनीतिक स्थिरता, क्षेत्रीय विस्तार और कन्नड़ संस्कृति और साहित्य में महत्वपूर्ण उपलब्धियां देखी गईं।
स्टेटमेंट 3 सही नहीं है। कल्याणी चालुक्यों की स्थापना पुलकेशी II ने नहीं की थी। उन्हें राष्ट्रकूटों के पतन के बाद सदियों बाद तैलप II ने स्थापित किया था।
स्टेटमेंट 4 सही है। पश्चिमी चालुक्यों का धीरे-धीरे पतन हुआ और आखिरकार उनकी जगह होयसल, काकतीय और सेऊना (यादव) जैसी उभरती हुई क्षेत्रीय ताकतों ने ले ली।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर वंश के अंतर को टेस्ट करने के लिए स्टेटमेंट 3 का इस्तेमाल करता है। स्टूडेंट्स अक्सर बादामी चालुक्यों को बाद के पश्चिमी चालुक्यों के साथ कन्फ्यूज़ कर देते हैं क्योंकि दोनों ही बड़े चालुक्य ट्रेडिशन से जुड़े थे।
के. सुशांत सर की ओर से:
"एक राजवंश सदियों तक एक ही नाम रख सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक ही पॉलिटिकल एंटिटी है। हमेशा शुरुआत, दोबारा शुरू होना और आगे बढ़ना अलग-अलग होता है।"

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

90. **उत्तर: (सी)** 1-**बी**, 2-**सी**, 3-**ए**, 4-**डी**
यह सवाल चालुक्य आर्किटेक्चर के विकास और आर्किटेक्चरल स्टाइल और राजवंशों के संरक्षण के बीच संबंध के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है। यह यह भी देखता है कि क्या कैंडिडेट किसी आर्किटेक्चरल स्टाइल की शुरुआत और बाद में उसमें सुधार के बीच अंतर कर सकता है।
जोड़ी 1 सही मैच हुई है। वेसर **स्टाइल को** आम तौर पर उत्तर भारतीय नागर और दक्षिण भारतीय द्रविड़ आर्किटेक्चरल परंपराओं का मिला-जुला रूप माना जाता है।
जोड़ी 2 सही मैच हुई है। कर्नाटक **द्रविड़ स्टाइल,** कर्नाटक से जुड़ी एक ज़्यादा डेवलप और बेहतर आर्किटेक्चरल परंपरा को दिखाती है, जिसमें कुछ वेसर एलिमेंट्स को बनाए रखते हुए ज़्यादा मज़बूत द्रविड़ खासियतें दिखती हैं।
जोड़ी 3 सही मैच हुई है। बादामी **चालुक्य,** बादामी की रॉक-कट गुफाओं और ऐहोल और पट्टदकल के स्ट्रक्चरल मंदिरों से जुड़े हैं, जो शुरुआती मिडिल एज के भारतीय मंदिर आर्किटेक्चर के डेवलपमेंट में एक ज़रूरी फेज़ को दिखाते हैं।
जोड़ी 4 सही मैच हुई है। कल्याणी **(पश्चिमी) चालुक्यों ने** अपने स्मारक मुख्य रूप से तुंगभद्रा-कृष्णा दोआब क्षेत्र में बनाए और वेसर स्टाइल को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाई।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर यह टेस्ट करता है कि कैंडिडेट बादामी चालुक्यों और कल्याणी चालुक्यों के आर्किटेक्चरल योगदान में अंतर कर सकते हैं या नहीं। UPSC अक्सर ऐसे सवाल पूछता है जहां एक राजवंश एक परंपरा शुरू करता है और दूसरा उसे बेहतर बनाता है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"आर्किटेक्चर में, पहचानें कि किसने कोई स्टाइल शुरू किया और किसने उसे बेहतर बनाया। UPSC अक्सर इस अंतर को टेस्ट करता है।"

91. **उत्तर:** (c) 1, 2, 3, 4 **और** 5
यह सवाल बादामी चालुक्य राज्य की एडमिनिस्ट्रेटिव, मिलिट्री, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक खासियतों की जानकारी को टेस्ट करता है। इसमें यह भी देखा जाता है कि क्या कैंडिडेट साफ़ तौर पर सही बातों में छिपी कई गलतियों को पहचान सकते हैं।
स्टेटमेंट 1 गलत है। एडमिनिस्ट्रेटिव हायरार्की गलत तरीके से अरेंज की गई है। विषय सबसे ऊंची एडमिनिस्ट्रेटिव यूनिट नहीं थे। राष्ट्र या महाराष्ट्रक जैसे बड़े टेरिटोरियल डिवीजन विषय से ऊपर थे।
स्टेटमेंट 2 गलत है। चालुक्यों ने सिर्फ़ शैव धर्म को ही नहीं अपनाया। उन्होंने वैष्णव धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म समेत कई धार्मिक परंपराओं को सपोर्ट किया।
स्टेटमेंट 3 गलत है। चालुक्य सिक्के एक जैसे सोने के स्टैंडर्ड तक सीमित नहीं थे। अलग-अलग धातुओं के सिक्के जारी किए गए थे और उन पर अक्सर निशान और लिखावट होती थी।

स्टेटमेंट 4 गलत है। हालांकि चालुक्य सेना में पैदल सेना, घुड़सवार सेना, हाथी और नौसेना के लोग शामिल थे, लेकिन *कर्नाटक शब्द* राष्ट्रकूट शिलालेखों से जुड़ा है और इसे बादामी चालुक्य सेना का सीधा सबूत नहीं माना जा सकता।
स्टेटमेंट 5 गलत है। महिलाओं को पब्लिक लाइफ से पूरी तरह बाहर नहीं रखा गया था। शिलालेखों से मिले सबूत बताते हैं कि शाही महिलाएं धार्मिक दान में हिस्सा लेती थीं और कभी-कभी एडमिनिस्ट्रेटिव असर भी डालती थीं।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर जानबूझकर **"पूरी तरह से," "सिर्फ़," और "पूरी तरह से" जैसे शब्दों का इस्तेमाल करता है।** पुराने भारतीय इतिहास में, ऐसे पक्के शब्द अक्सर गलत बातों की निशानी होते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:
"इतिहास आम तौर पर मुश्किल होता है। जब भी UPSC 'सिर्फ़', 'हमेशा', 'पूरी तरह', या 'पूरी तरह' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करे, तो उन्हें ध्यान से वेरिफ़ाई करें।"

92. **उत्तर:** (A) **केवल** 1, 2 **और** 3
यह सवाल इंडियन रेलवे में हाल के डेवलपमेंट, खासकर इंफ्रास्ट्रक्चर मॉडर्नाइजेशन, फ्रेट कनेक्टिविटी और टेक्नोलॉजिकल एडवांसमेंट के बारे में जानकारी टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। इंडियन रेलवे के रिकॉर्ड कैपिटल खर्च का मकसद हाई-स्पीड रेल इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाना, फ्रेट कॉरिडोर को मजबूत करना, कैपेसिटी बढ़ाना और कवच जैसे सेफ्टी सिस्टम को बेहतर बनाना है।
स्टेटमेंट 2 सही है। प्रस्तावित हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर लगभग 4,000 किलोमीटर तक कवर होंगे और इसमें रेलवे मॉडर्नाइज़ेशन के लिए काफी इन्वेस्टमेंट शामिल होगा।
कथन 3 सही है। पूर्व-पश्चिम औद्योगिक और व्यापार संपर्क को मजबूत करने के लिए दनकुनी-सूरत समर्पित माल ढुलाई गलियारे का प्रस्ताव किया गया है।
स्टेटमेंट 4 गलत है। भारत ने रोलिंग स्टॉक, सिग्नलिंग सिस्टम, लोकोमोटिव, ट्रेनसेट और संबंधित रेलवे टेक्नोलॉजी में स्वदेशी क्षमताओं को काफी बढ़ाया है। इसलिए, यह कहना गलत है कि देश ज़्यादातर एडवांस्ड रेलवे प्रोपल्शन सिस्टम के लिए इम्पोर्ट पर निर्भर है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर असल घोषणाओं को बड़े टेक्नोलॉजिकल दावे के साथ मिलाता है। कैंडिडेट अक्सर आत्मनिर्भरता और स्वदेशी क्षमता से जुड़े बयानों में बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:
"कोई बात गलत इसलिए नहीं हो सकती कि वह बात झूठी है, बल्कि इसलिए हो सकती है कि वह उस बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताती है।"

DHYAN IAS "Aspire, Learn, Lead"

93. **उत्तर:** (D) **केवल** 1, 2 **और** 4
यह सवाल पड़ोसी देशों के साथ भारत की हाल की खेती में सहयोग की पहल और उन्हें सपोर्ट करने वाले इंस्टीट्यूशनल सिस्टम के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। भारत ने बेहतर खेती में सहयोग के ज़रिए नेपाल को सपोर्ट करने पर सहमति जताई है, जिसमें प्रोडक्टिविटी और फ़ूड सिक्योरिटी बढ़ाने के मकसद से एडवांस्ड बीजों तक पहुँच शामिल है।
कथन 2 सही है। कृषि सहयोग में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के माध्यम से अनुसंधान सहयोग शामिल है, जिसमें पूसा, नई दिल्ली स्थित संस्थान शामिल हैं।
स्टेटमेंट 3 गलत है। रिपोर्ट किए गए कोऑपरेशन फ्रेमवर्क के तहत भारत और मालदीव के बीच जानवरों की बीमारी के मैनेजमेंट के लिए कोई नया बाइलेटरल MoU नहीं हुआ।
स्टेटमेंट 4 सही है। भारत-नेपाल एग्रीकल्चरल कोऑपरेशन को मज़बूत करने के लिए जॉइंट वर्किंग अरेंजमेंट और कोलेबोरेटिव फ्रेमवर्क सहित इंस्टिट्यूशनल मैकेनिज्म का इस्तेमाल किया जा रहा है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर ने स्टेटमेंट 3 में एक बहुत खास दावा डाला है। UPSC अक्सर सही बयानों के बीच एक मनगढ़ंत लेकिन भरोसेमंद लगने वाली डिटेल डाल देता है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"सबसे खतरनाक करंट अफेयर्स स्टेटमेंट वह है जो एक ही समय में बहुत खास और बहुत भरोसेमंद लगता है।"

94. **उत्तर:** (D) **केवल** 2, 3 **और** 4
यह सवाल भारत की फार्मास्यूटिकल आत्मनिर्भरता की पहल और फार्मास्यूटिकल सेक्टर में चल रही अलग-अलग स्कीमों के बीच अंतर की समझ को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 गलत है। बल्क ड्रग पार्क एक अलग सेंट्रल सेक्टर स्कीम के ज़रिए लागू किए जाते हैं और ये फार्मास्यूटिकल्स के लिए PLI स्कीम का हिस्सा नहीं हैं।
कथन 2 सही है। आंध्र प्रदेश, गुजरात और हिमाचल प्रदेश में बल्क ड्रग पार्क को मंजूरी दी गई है।
स्टेटमेंट 3 सही है। बल्क ड्रग्स के लिए PLI स्कीम, खास तौर पर ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट्स के ज़रिए पहचाने गए की स्टार्टिंग मटीरियल्स (KSMs), ड्रग इंटरमीडिएट्स (DIs), और एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रीडिएंट्स (APIs) की मैन्युफैक्चरिंग के लिए इंसेंटिव देती है।
कथन 4 सही है। बल्क ड्रग पार्क योजना सामान्य बुनियादी सुविधाओं के लिए प्रत्येक स्वीकृत पार्क के लिए ₹1,000 करोड़ तक की केंद्रीय सहायता प्रदान करती है ।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट एक ही सेक्टर की दो स्कीम को लेकर कन्फ्यूज़ हैं। UPSC अक्सर अलग-अलग मकसद वाली मिलती-जुलती स्कीम के बारे में सवाल बनाता है।
के. सुशांत सर की ओर से:
"जब भी दो स्कीम एक ही सेक्टर की हों, तो पहले उनका मकसद पहचानें, फिर उन्हें लागू करने का तरीका पहचानें।"

95. **उत्तर:** (E) **केवल** 1, 2 **और** 4
(दिए गए ऑप्शन में से सही कॉम्बिनेशन नहीं दिया गया है।)
यह सवाल गवर्नेंस में ज़िम्मेदार AI डिप्लॉयमेंट की समझ और पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में AI सिस्टम को स्केल करने के लिए ज़रूरी प्रिंसिपल्स को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। सरकार में बड़े पैमाने पर AI सिस्टम लगाने से पहले सबूतों पर आधारित इवैल्यूएशन, साइंटिफिक वैलिडेशन और इम्पैक्ट असेसमेंट ज़रूरी हैं।
स्टेटमेंट 2 सही है। हाई-क्वालिटी और स्ट्रक्चर्ड डेटासेट बैंकिंग, फाइनेंस और गवर्नेंस में AI सिस्टम की एक्यूरेसी, रिलायबिलिटी और इफेक्टिवनेस को बेहतर बनाते हैं।
स्टेटमेंट 3 गलत है। सिर्फ़ फ़ोन मेटाडेटा से पब्लिक सर्विस डिलीवरी में शॉर्ट-टर्म कमज़ोरी का सही अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। भरोसेमंद AI सिस्टम के लिए कई डेटासेट, कॉन्टेक्स्ट की जानकारी और लगातार वैलिडेशन की ज़रूरत होती है।
स्टेटमेंट 4 सही है। पायलट टेस्टिंग, थर्ड-पार्टी ऑडिट, ट्रांसपेरेंसी मैकेनिज्म और इंडिपेंडेंट इवैल्यूएशन को ज़िम्मेदार AI डिप्लॉयमेंट के लिए ज़रूरी सेफ़गार्ड के तौर पर हाईलाइट किया गया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर स्टेटमेंट 3 पेश करता है ताकि यह टेस्ट किया जा सके कि क्या कैंडिडेट AI की प्रेडिक्टिव पावर को ज़्यादा आंकते हैं। UPSC टेक्नोलॉजिकल डिटरमिनिज़्म के बजाय ज़िम्मेदार टेक्नोलॉजी पर ज़्यादा ज़ोर देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:
"टेक्नोलॉजी गवर्नेंस में मदद कर सकती है, लेकिन यह सबूत, कॉन्टेक्स्ट और इंसानी फैसले की जगह नहीं ले सकती।"

96. **उत्तर:** (A) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल दिल्ली LSA में किए गए TRAI इंडिपेंडेंट ड्राइव टेस्ट (IDT) के मेथड और नतीजों की जानकारी को टेस्ट करता है और टेलीकॉम सर्विस क्वालिटी इंडिकेटर्स के बारे में जानकारी का पता लगाता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। IDT में वॉइस और डेटा क्वालिटी पैरामीटर दोनों शामिल थे। वॉइस से जुड़े इंडिकेटर में कॉल सेटअप सक्सेस रेट (CSSR), ड्रॉप कॉल रेट (DCR), और मीन ओपिनियन स्कोर (MOS) शामिल थे, जबकि डेटा से जुड़े पैरामीटर में लेटेंसी और थ्रूपुट मेज़रमेंट शामिल थे।
स्टेटमेंट 2 सही है। रिलायंस जियो इंफोकॉम लिमिटेड (RJIL) ने दिल्ली LSA ड्राइव टेस्ट के दौरान किए गए ओवरऑल डेटा परफॉर्मेंस असेसमेंट में एयरटेल से ज़्यादा एवरेज 5G/4G डाउनलोड स्पीड रिकॉर्ड की।
स्टेटमेंट 3 गलत है। दिल्ली LSA ड्राइव टेस्ट के नतीजों में MTNL को स्टेटमेंट में बताए गए तरीके से ऑपरेशनल 4G और 5G सर्विस के प्रोवाइडर के तौर पर रिपोर्ट नहीं किया गया था।
स्टेटमेंट 4 गलत है। वोडाफोन आइडिया (VIL) ने पूरे टेस्ट एरिया में ऑटो-सिलेक्शन मोड में ज़ीरो ड्रॉप-कॉल रेट रिकॉर्ड नहीं किया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर टेक्निकल टेलीकॉम इंडिकेटर्स को ऑपरेटर-स्पेसिफिक परफॉर्मेंस रिजल्ट्स के साथ मिलाता है। UPSC अक्सर यह टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट्स परफॉर्मेंस पैरामीटर्स और सर्विस प्रोवाइडर्स की कम्पेरेटिव रैंकिंग के बीच फर्क कर सकते हैं।

के. सुशांत सर की ओर से:
"करंट अफेयर्स में इंडिकेटर और परफॉर्मर दोनों को याद रखें। UPSC अक्सर इंडिकेटर को सही बनाता है लेकिन परफॉर्मर को बदल देता है, या इसका उल्टा भी होता है।"

97. **उत्तर:** (C) **केवल** 1 **और** 2
यह सवाल फ़ूड प्रोसेसिंग के लिए PLI स्कीम की जानकारी और रोज़गार पैदा करने, इंडस्ट्रियल ग्रोथ और बड़े डेवलपमेंट एजेंडा में इसकी भूमिका को टेस्ट करता है।
स्टेटमेंट 1 सही है। फ़ूड प्रोसेसिंग के लिए PLI स्कीम ने अपने शुरुआती टारगेट से ज़्यादा रोज़गार पैदा किया है, जो फ़ूड प्रोसेसिंग एक्टिविटी में बढ़ते इन्वेस्टमेंट और विस्तार को दिखाता है।
कथन 2 सही है। खाद्य प्रसंस्करण के लिए PLI योजना का स्वीकृत परिव्यय **₹**10,900 **करोड़ है** ।
स्टेटमेंट 3 गलत है। यह कहना गलत है कि रिलीज़ किए गए फंड का 100% इस्तेमाल पहले ही हो चुका है। प्रोजेक्ट इम्प्लीमेंटेशन शेड्यूल के अनुसार फंड का डिस्बर्समेंट और इस्तेमाल जारी है।
स्टेटमेंट 4 गलत है। हालांकि फ़ूड प्रोसेसिंग सेक्टर वैल्यू एडिशन, ग्रामीण विकास और आर्थिक बदलाव में योगदान देता है, लेकिन यह स्टेटमेंट ANVESH-2026 से निकाले गए खास नतीजों को बढ़ा-चढ़ाकर बताता है।
(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)
एग्जामिनर एक सही न्यूमेरिकल फैक्ट को बढ़ा-चढ़ाकर लागू करने के दावे के साथ मिला देता है। UPSC अक्सर टेस्ट करता है कि क्या कैंडिडेट स्कीम की उपलब्धियों को पूरे इस्तेमाल या पूरा होने से कन्फ्यूज़ करते हैं।
के. सुशांत सर की ओर से:

"कोई स्कीम टारगेट से ज़्यादा हो सकती है और फिर भी फंड का पूरा इस्तेमाल नहीं हो पाता। टारगेट और इस्तेमाल अलग-अलग चीज़ों को मापते हैं।"

98. **उत्तरः** (B) **केवल** 1, 2 **और** 3

यह सवाल PM MITRA स्कीम और तमिलनाडु के विरुद्धनगर में बन रहे टेक्सटाइल मेगा पार्क की प्रोग्रेस के बारे में जानकारी को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** PM MITRA का मकसद फाइबर प्रोडक्शन से लेकर तैयार टेक्सटाइल प्रोडक्ट्स तक की एक्टिविटीज़ को कवर करने वाला इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल वैल्यू-चेन इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना है।

कथन 2 **सही है।** लगभग 190 **एकड़ जमीन** निवेशकों को आवंटित की गई है, जिसमें **₹**2,000 **करोड़ से अधिक के निवेश की प्रतिबद्धता है** ।

कथन 3 **सही है।** इस प्रोजेक्ट में पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ इंफ्रास्ट्रक्चर शामिल है, जिसमें **ज़ीरो लिक्विड डिस्चार्ज** (ZLD) प्रोसेसिंग सुविधाएं शामिल हैं।

स्टेटमेंट 4 **गलत है।** प्रोजेक्ट के दिसंबर 2026 तक पूरा होने की उम्मीद नहीं है। पूरा होने की अनुमानित टाइमलाइन उस तारीख से आगे भी है।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर असल बातों में गलत टाइमलाइन डाल देता है। UPSC अक्सर साल और डेडलाइन बदल देता है, जबकि बाकी सभी डिटेल्स सही रखता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब आंकड़े, जगहें और मकसद सही हों, तो हमेशा टाइमलाइन को अलग से चेक करें। UPSC अक्सर तारीख में गलती छिपा देता है।"

99. **उत्तरः** (A) **केवल** 1 **और** 2

यह सवाल बॉयलर से जुड़े हाल के कानूनी सुधारों और इस सेक्टर से जुड़ी इंडस्ट्रियल पॉलिसी पर चर्चा के मकसद के बारे में आपकी जानकारी को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** बॉयलर्स **एक्ट,** 2025 **ने** लेजिस्लेटिव रिव्यू और री-एनेक्टमेंट के बाद पुराने **बॉयलर्स एक्ट,** 1923 **की जगह ले ली।**

स्टेटमेंट 2 **सही है।** बॉयलर्स पर चिंतन शिविर का एक मकसद इंडस्ट्रियल मॉडर्नाइजेशन और रेगुलेटरी सुधारों को बड़े विज़न 2047 फ्रेमवर्क के साथ जोड़ना था।

स्टेटमेंट 3 **गलत है।** जैसा बताया गया है, दोबारा लागू किया गया एक्ट खास तौर पर 1 **मई** 2025 को लागू नहीं हुआ ।

स्टेटमेंट 4 **गलत है।** चिंतन शिविर में बॉयलर मैन्युफैक्चरर्स के लिए सब्सिडी स्कीम के बजाय मॉडर्नाइजेशन, सेफ्टी, रेगुलेशन और ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस पर फोकस किया गया।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर कानूनी तथ्यों को एडमिनिस्ट्रेटिव इम्प्लीमेंटेशन डिटेल्स के साथ मिलाता है। UPSC अक्सर सही कानूनी स्टेटमेंट में गलत शुरू होने की तारीख डाल देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"यह कभी न मानें कि कानून बनने की तारीख और लागू होने की तारीख एक ही है। UPSC अक्सर इस अंतर का फ़ायदा उठाता है।"

DHYAN IAS "Aspire Learn Lead"

100. **उत्तरः** (B) **केवल** 1, 2 **और** 4

यह सवाल PM E-DRIVE स्कीम के मकसद, बेनिफिशियरी और हिस्सों की समझ को टेस्ट करता है।

स्टेटमेंट 1 **सही है।** यह स्कीम एलिजिबल इलेक्ट्रिक गाड़ी खरीदने वालों को पहले डिमांड इंसेंटिव देती है, जिसे बाद में ओरिजिनल इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर्स (OEMs) को वापस कर दिया जाता है।

स्टेटमेंट 2 **सही है।** यह स्कीम मुख्य रूप से बड़े शहरी सेंटर्स, खासकर चार मिलियन से ज़्यादा आबादी वाले शहरों में इलेक्ट्रिक बसों को चलाने में मदद करती है।

स्टेटमेंट 3 **गलत है।** PM E-DRIVE EV अपनाने और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को सपोर्ट करता है, लेकिन इसे गाड़ी बनाने वाली सब्सिडी प्रोग्राम के तौर पर डिज़ाइन नहीं किया गया है। मैन्युफैक्चरिंग इंसेंटिव को अलग पॉलिसी मैकेनिज्म के ज़रिए एड्रेस किया जाता है।

स्टेटमेंट 4 **सही है। यह स्कीम** इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर, थ्री-व्हीलर और बसों के अलावा **ई-एम्बुलेंस** और **ई-ट्रक** के लिए टारगेटेड सपोर्ट देती है ।

(ध्यान आईएएस स्पेशल फीचर – एक परीक्षक की तरह सोचें)

एग्जामिनर यह टेस्ट करता है कि कैंडिडेट डिमांड-साइड इंसेंटिव और प्रोडक्शन-साइड इंसेंटिव के बीच फर्क कर सकते हैं या नहीं। UPSC अक्सर एक ही सवाल में अलग-अलग EV-रिलेटेड स्कीम के फीचर्स को मिला देता है।

के. सुशांत सर की ओर से:

"जब भी किसी स्कीम में इंसेंटिव शामिल हों, तो पहले यह पहचानें कि फ़ायदा किसे मिलेगा—कंज्यूमर, प्रोड्यूसर, या इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोवाइडर। UPSC के कई जाल इसी फ़र्क के आस-पास बने होते हैं।"

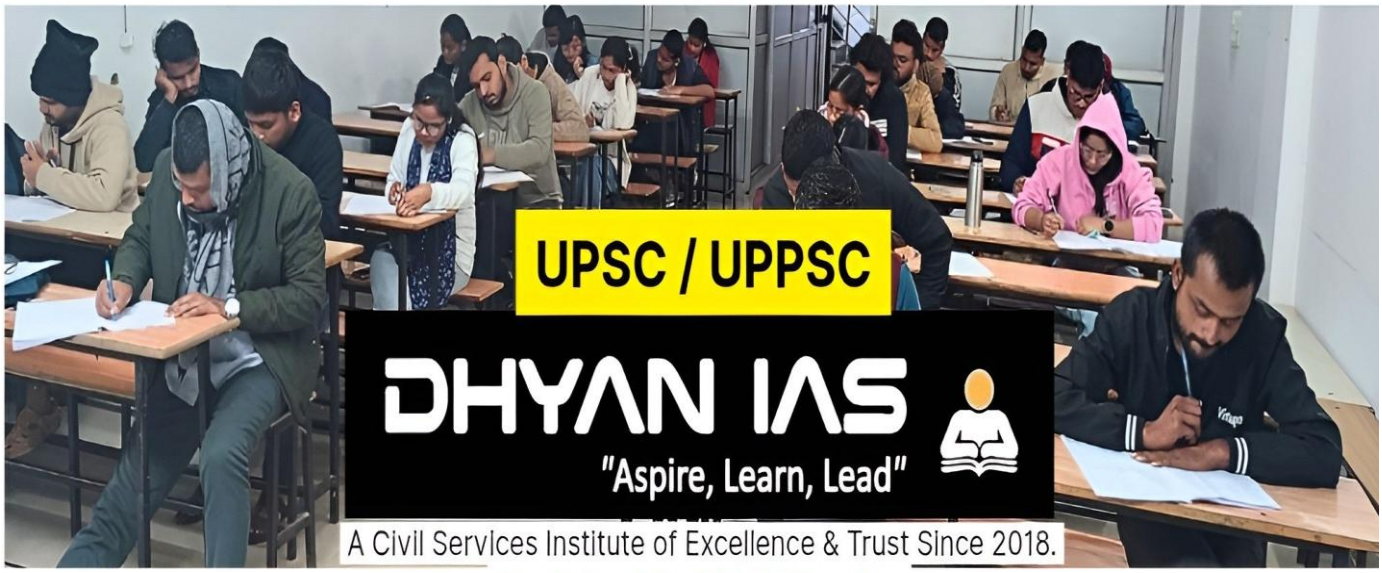

For Schedule: WhatsApp Us.

Same Fixed Topics for Prelims & Mains Every Week !

1 Topic

PRELIMS MCQs

MAINS ANSWER WRITING

1. Master the Same topic/s for Prelims & Mains Simultaneously.
2. 10 - 20 Topics/Themes for Prelims & Mains Every/Per Week.
3. Separate sections for Mains exam topics.
4. Separate sections for Preliminary and Mains Mock tests.

English & Hindi **OFFLINE**

Test Series & Free Mentorship

Under the Mentorship of K. Sushant Sir, K. Swati Ma'am & Team !

Unlimited / Till Your Selection
Year Long / Targeted Exam !

Mentorship Complimentary (0 Fee)
8+ Experienced & Dedicated Personal Mentors !

Swapping Allowed* UPSC ⇄ UPPSC
One Fee for UPSC & UPPSC, Save Your Money !

PRELIMS
~~15,000~~
9,999 Only !

MAINS
~~30,000~~
19,999 Only !

For Self Study Students, Coaching Completed and For Beginners/New Students.

Add: Dhyan IAS, 1st & 2nd Floor, 11/13/4C, Tashkand Marg (Patrika Chauraha), Front of Regency Hotel, Civil lines, Prayagraj, Uttar Pradesh -211002, Contact: 6388102131